Biyani's Think Tank

Concept based notes

राजस्थान का इतिहास (प्रारम्भ से 1956 ईस्वी तक)

BA

Mrs. Malti Vashishtha

Deptt. of Education
Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

Biyani's Group of Colleges

Published by :

Think Tanks

Biyani Group of Colleges

Concept & Copyright :

©Biyani Shikshan Samiti

Sector-3, Vidhyadhar Nagar,

Jaipur-302 023 (Rajasthan)

Ph : 0141-2338371, 2338591-95 • Fax : 0141-2338007

E-mail : acad@biyanicolleges.org

Website :www.gurukpo.com; www.biyanicolleges.org

First Edition : 2011

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept in is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

Leaser Type Setted by :

Biyani College Printing Department

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

Contents

S.No.	Name of Chapter
1	राजस्थान की भौगोलिक विशेषताएं एवं इतिहास के निर्माण में उसकी भूमिका
2	राजस्थान के इतिहास के मुख्य स्रोत
3	राजस्थान में पूर्व पाषाण एवं मध्य पाषाणकालीन संस्कृतियाँ ताम्रपाषाणिक एवं ताम्रयुगीन संस्कृतियों की विशेषताएं एवं विस्तार (आहड़, बालाथल, गणेश्वर) कालीबंगा संस्कृति की विशेषताएँ, लौहयुगीन संस्कृतिया
4	मत्स्य जनपद एवं कबीलाई जातियां
5	राजपूतों की उत्पत्ति
6	गुहिल, गुर्जर प्रतिहार एवं चाहमानों (चौहानों) का अभ्युदय और विस्तार
7	महाराणा कुम्भा एवं सांगा के अधीन मेवाड़ एवं स्वतन्त्रता के लिए महाराणा प्रताप का संघर्ष
8	राजस्थान में मराठा आक्रमण और उसके परिणाम
9	राजस्थान पर ब्रिटिश आधिपत्य और उसके परिणाम
10	ब्रिटिश आधिपत्य काल में प्रशासनिक, न्यायिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन
11	नमक व अफीम व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार
12	राजस्थान में 1857 ई0 का विप्लव
13	राजस्थान में कृषक एवं जनजाति आन्दोलन
14	राजस्थान में राष्ट्रीयता का उद्‌भव, प्रजामण्डलों की स्थापना और स्वाधीनता आन्दोलन
15	राजस्थानी राज्यों का एकीकरण
16	मुगल राजपूत सहयोग
17	राजस्थान में कला और स्थापत्य
18	राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था
19	शब्दावली

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Geographical features of Rajasthan and their role in the formation of History
राजस्थान की भौगोलिक विशेषताएं एवं इतिहास के निर्माण में उसकी भूमिका

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. प्राचीन काल से मध्य युग तक राजस्थान को नाम से पुकारा जाता था।

(अ) जांगलदेश (ब) मरूस्थल (स) राजस्थान (द) मत्स्य राज्य **(अ)**

2. किस प्रसिद्ध इतिहासकार ने, राजस्थान को सर्वप्रथम 'रायथन' नाम दिया था ?

(अ) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (ब) कविराज श्यामलदास

(स) कर्नल जेम्स टॉड (द) डॉ. दशरथ शर्मा **(स)**

3. बीकानेर के शासक स्वयं को कहते थे–

(अ) शासक (ब) जांगलघर बादशाह (स) बादशाह (द) महाराजाधिराज **(ब)**

4. उदयपुर का प्राचीन नाम था–

(अ) बांगड़ (ब) मारवाड़ (स) किंव (द) मेद **(स)**

5. राजस्थान को भौगोलिक स्थिति के अनुसार कितने भागों में बाँटा जा सकता है–

(अ) तीन (ब) दो (स) पांच (द) सात **(स)**

6. राजस्थान की सबसे बड़ी नदी है–

(अ) बनास नदी (ब) चम्बल नदी (स) लूनी नदी (द) खारी नदी **(ब)**

7. राजस्थान में प्रायः अकाल रहता है–

(अ) जयपुर में (ब) उदयपुर में (स) जैसलमेर में (द) अजमेर में **(स)**

8. प्राचीनकाल में वर्तमान सांभर को कहा जाता था–

(अ) इन्द्रप्रस्थ (ब) मेलवाट (स) प्राग्वाट (द) शाकम्भरी

(द)

9. जैसलमेर का प्राचीन नाम था–

(अ) माड (ब) कॉटल (स) मूढ़ोल (द) मेवल

(अ)

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न –</u>

By which various names was Rajasthan called from ancient time to medieval time?

प्र0–10 प्राचीन काल से मध्य युग तक 'राजस्थान' को किन–किन नामों से पुकारा जाता रहा है ?

उत्तर प्राचीन काल से मध्य युग तक, वर्तमान जोधपुर, बीकानेर को जांगल देश, कुरू जांगला, माद्रेय जांगला के बाद में मरूवार और मारवाड़ कहा जाने लगा। डूंगरपुर, बांसवाड़ा क्षेत्र को मेवल, बांगड़, जैसलमेर को माड, माही नदी प्रतापगढ़ क्षेत्र को कांटल, उदयपुर को किंव नाम से जाना जाता था।

In how many divisions can Rajasthan divided on geography bases?

प्र0–11 बनावट के आधार पर राजस्थान को कुल कितने भागों में बांटा जा सकता है ?

उत्तर भौगोलिक बनावट के आधार पर राजस्थान को कुल 5 भागों में बांटा जा सकता है।

- पर्वतीय प्रदेश
- पठारी भाग
- मैदानी भाग
- रेगिस्तानी क्षेत्र
- नदीय क्षेत्र

Who are hilly regions of Rajasthan?

प्र0–12 राजस्थान के पर्वतीय प्रदेश कौन–कौनसे हैं ?

उत्तर **पर्वतीय प्रदेश–** पर्वतीय श्रेणियाँ पूरे राजस्थान को दो भागों में बांटती हैं। जिसे राजस्थान का पूर्वी व पश्चिमी भाग कहा जाता है। ये पर्वत श्रेणियाँ अरावली पर्वत के नाम से प्रसिद्ध हैं। अरावली पर्वत–उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर तथा प्रतापगढ़ में चौड़े हो गये हैं।

माउण्ट आबू के गुरू शिखर में ये पर्वत श्रेणी सबसे ऊँची है। अरावली की एक पर्वत श्रेणी–माण्डलगढ़, कोटा, बूंदी, झालावाड़ तक फैली हुई है।

जोधपुर में ये अलग पहाड़ी के रूप में तथा जैसलमेर में ऊँचे टीले के रूप में दिखाई देती है।

Which are famous rivers of the Rajasthan?

प्र0–13 राजस्थान की प्रसिद्ध नदियाँ कौन–कौनसी हैं ?

उत्तर राजस्थान में सरस्वती और दृषद्वती प्रमुख नदियाँ हैं– इनके किनारे भारतीय संस्कृति का विकास हुआ, लेकिन अब इन नदियों के सूख जाने के कारण अब ये बरसाती नदी के रूप में रह गई हैं। घघ्घर नदी अवश्य बहती हुई दिखाई देती है।

दक्षिण–पश्चिमी ढ़लान वाली नदी में जो मध्य प्रदेश राजस्थान के उत्तरी भाग में बहती हैं। बनास, बेडच और खारी इसकी सहायक नदियाँ हैं।

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

What do you know about the arid regions of Rajasthan?

प्र–14 राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर ये राजस्थान का सबसे बड़ा रेगिस्तानी भाग है। ये अरावली के पश्चिमी भाग में फैला हुआ है। इस क्षेत्र में जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर के अधिकांश भाग सम्मिलित हैं।

यहां पानी की अत्यधिक कमी है। सैनिक दृष्टि से ये महत्वपूर्ण सम्भाग– इसकी सीमा पड़ौसी देश पाकिस्तान से मिलती है।

लेकिन तपते रेगिस्तान व पानी की कमी के कारण आक्रमणकारी जल्दी से हमला करने का साहस नहीं करते।

What do you know about the ground of Rajasthan?

प्र–15 राजस्थान के मैदानी भागों के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, मेवात का दक्षिणी भाग–मैदानी भाग के रूप में जाना जाता है। यहाँ भूमि उपजाऊ है और इसलिए यहाँ की सामाजिक आर्थिक स्थिति थोड़ी अलग है। मैदानी भाग होने के कारण, राजस्थान के इस भाग को युद्ध के समय आर्थिक संकट उठाने पड़े हैं।

Which are Hilly regions of Rajasthan?

प्र–16 राजस्थान के पठारी क्षेत्र कौन–कौनसे हैं ?

उत्तर राजस्थान का पठारी भाग चित्तौड़ से बेंगू, बिजौलिया, माण्डलगढ़ तथा हाड़ौती के आसपास फैला हुआ है। पर्वतीय क्षेत्रों की अपेक्षा, पठारी भाग की ऊंचाई कम होने के कारण यहां पहाड़ी क्षेत्र की अपेक्षा आना जाना सरल है। तथा ये पहाड़ी भाग की अपेक्षा उपजाऊ भी है।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न</u>–

How has the geographical position do influenced the people of Rajasthan?

प्र–17 राजस्थान की भौगोलिक स्थिति ने यहाँ के जनजीवन को किस तरह प्रभावित किया है?

उत्तर राजस्थान के जन जीवन में जलवायु और वर्षा का अत्यधिक महत्व रहा है।
खास तौर पर पश्चिमी राजस्थान में अकाल ही रहता है और यहाँ का जलवायु भी शुष्क है, वही दूसरी ओर गर्म व धूल भरी हवाएं यहाँ के निवासियों को सुख चैन से नहीं रहने देतीं।

यहाँ का जन जीवन आसान न होने के कारण, विदेशी आक्रमणकारी भी यहाँ स्थायी अधिकार करने के इच्छुक नहीं रहे हैं।

मारवाड़ विजय के बाद शेरशाह ने कहा था– ''मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैने दिल्ली की सल्तनत खो दी होती'' उसने बाद में इस क्षेत्र पर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं की।

दूसरी ओर राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग– कोटा, चित्तौड़, बांसवाड़ा में अधिक वर्षा होती है।

अधिक वर्षा के कारण यहाँ की भूमि घने पेड़ पौधों से ढकी है। यहां से प्राप्त होने वाली वनस्पति जहाँ एक ओर स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देती हैं, वही दूसरी ओर सामान्य व्यक्तियों के जीवन व

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

रहन–सहन में समृद्धि झलकती है। घने जंगल होने से यहाँ अनेक प्रकार के पशु पाये जाते हैं। जहाँगीर ने यहां के जंगलों को आखेट के लिए बहुत उपयोगी बताया है। इसके अतिरिक्त बहुमूल्य लकड़ियों से स्थानीय व्यवसाय भी चल रहे हैं।

ये हिस्सा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी रहा है।

राजस्थान की प्राकृतिक स्थिति में विषमता एवं विविधता होते हुए भी पर्वत श्रेणी का सिलसिला, नदियों का बहाव तथा मरूस्थल का फैलाव एक कोने से दूसरे कोने तक होने से यह समूचे प्रदेश को एकता के सूत्र में बाँधता है।

यहाँ की भौगोलिक स्थिति राजनैतिक सीमाओं के निर्माण में बड़ी सहायक रही है।

लेकिन पश्चिमी राजस्थान के अधिकांश भाग के रेगिस्तानी होने से, पानी व वर्षा के अभाव से यहां के लोगों को परिश्रमी जीवन जीना पड़ता है।

दक्षिणी राजस्थान में दरिद्रता होने के कारण यहां के लोग सम्पन्न नहीं हैं, किन्तु शौर्य, वीरता, व स्पष्टवादिता उनके व्यवहार में देखने को मिलती है।

■■■

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–2

Main sources of the History of Rajasthan

राजस्थान के इतिहास के मुख्य स्रोत

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. इतिहास जानने के सबसे प्रमाणिक स्रोत होते हैं।
(अ) यशोगाथा (ब) स्मारक (स) पुरातात्विक स्रोत (द) साहित्य **(स)**

2. राजस्थान का गजेटियर कहा जाता है–
(अ) पद्मावत (ब) मारवाड़ रा परगना री विगत (स) पद्मावत (द) पृथ्वीराज रासौ **(ब)**

3. 'अचलदास खींची री वचनिका' के लेखक थे–
(अ) चारण वीरभान (ब) चारण शिवदास
(स) खिड़िया जग्गा (द) मुण्होत नैणसी **(ब)**

4. जिन शिलालेखों में शासकों की यशोगाथा होती है उसे कहते हैं?
(अ) ताम्रपत्र (ब) स्मारक (स) प्रशंसा (द) प्रशस्ति **(द)**

5. 'मारवाड़ रा परगना री विगत' के लेखक हैं ?
(अ) दयालदास (ब) बांकीदास (स) मुण्होत नैणसी (द) मुकुन्ददास **(स)**

6. मुण्डीयार री ख्यात का विषय हैं?
(अ) मारवाड़ के राठौड़ (ब) कोटा के हाड़ा (स) सिसोदिया (द) कछवाहा **(अ)**

7. राज प्रशस्ति के लेखक कौन था ?
(अ) बांकीदास (ब) विद्याधर (स) मण्डन (द) रणछोड़ भट्ट **(द)**

8. अशोक कालीन आलेख राजस्थान में स्थित है।
(अ) उदयपुर (ब) जोधपुर (स) भाब्रू (द) अजमेर **(स)**

9. सर्वाधिक प्राचीन फारसी लेख हैं।
(अ) विराट नगर में (ब) लाल किले पर
(स) ढ़ाई दिन के झोपड़े पर (द) फतेहपुर सीकरी में **(स)**

10. 'राजपूताने का अबुल फ़ज़ल कहा जाता है।
(अ) नैनसी को (ब) बांकीदास के (स) चन्द्रवरदायी को (द) दयालदास को **(अ)**

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

11. **राजवल्लभ का लेखक कौन था ?**

(अ) सूर्यमल मिश्रण (ब) बांकीदास (स) राणा कुम्भा (द) मण्डन **(द)**

12. **अभिलेख जिसमें चाहमान शासकों (सांभर की) उपलब्धि का वर्णन किया गया है–**

(अ) अर्थूणा अभिलेख (ब) मण्डोर का अभिलेख

(स) बड़ली प्रश्तर अभिलेख (द) हर्षनाथ मंदिर अभिलेख **(द)**

13. **आधुनिक काल में राजस्थान का इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास करने वाले लेखक थे–**

(अ) श्यामलदास (ब) गौरीशंकर हीराचंद ओझा

(स) कर्नल टॉड (द) मुहणोत नैणसी

(स)

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न–</u>

What are the chief sources of Rajasthan history ?

प्र–14 **राजस्थान का इतिहास जानने के मुख्य साधन कौन–कौनसे हैं ?**

उत्तर राजस्थान का इतिहास जानने के मुख्य साधनों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है –

- पुरातात्विक स्रोत
- पुरालेखीय स्रोत ऐतिहासिक साहित्य
- स्थापत्य एवं चित्रकला
- आधुनिक ऐतिहासिक ग्रन्थ एवं इतिहासकार

What do you know about the Archoelogical Sources?

प्र–15 **'पुरातात्विक स्रोतों' के बारे में आप क्या जानते हैं?**

उत्तर पुरातात्विक स्रोत से अभिप्राय खोजों और उत्खनन से मिलने वाली सामग्री से है। उत्खनन से प्राप्त सामग्री से ऐतिहासिक कालक्रम के निर्धारण, उस समय के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

जैसे हनुमानगढ़ के निकट रंगमहल की खुदाई में मृद्भाण्ड कुछ खुरदरे मटमैले थे, धीरे–धीरे उन्होंने इसमें सुधार किया और बाद के मृद्भाण्ड चिकनापन लिए हुए अलंकृत किए हुए मिले।

इसी प्रकार बालाथल (उदयपुर) में उत्खनन में ताम्र आयुद्ध (हथियार) प्राप्त हुए हैं। आहड़ की खुदाई में काले पत्थरों से बने मकान उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। कांच व पत्थर के मणके, मुहरें आदि प्राप्त हुए हैं।

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

उत्खनन की सामग्री से उस युग के सामाजिक, आर्थिक धार्मिक स्थिति के निर्धारण में मदद मिलती है। ये महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्रोत होते हैं।

Write in brief archological sources to know the history of Rajasthan?

प्र–16 राजस्थान के इतिहास जानने के पुरालेखीय स्रोतों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर ये लेख पत्थर की शिलाओं, पट्टे, प्रस्तर, भवन, गुफा मन्दिर की दीवारों, स्तूप, मठों, कुएं, बावड़ी खेतों के समीप गढ़ी हुई शिला व ताम्र पत्रों पर लिखे रहते हैं। जिससे उस समय की स्थिति, राज्य व अन्य जानकारियां मिलती हैं।

ये संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी फारसी व उर्दू किसी भी भाषा में हो सकते हैं। जिन शिलालेखों में मात्र किसी शासक की उपलब्धि की यशोगाथा होती है, उसे 'प्रशस्ति' भी कहते हैं। जैसे– महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित 'कीर्तिस्तम्भ' प्रशस्ति, महाराणा राजसिंह की 'राज प्रशस्ति' महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

Write in brief the 'literary sources' to know the history of Rajasthan?

प्र–17 राजस्थान का इतिहास जानने में 'साहित्यिक स्रोतों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर 'साहित्यिक स्रोत', संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषा में लिखे हुए ग्रन्थ या पुस्तकें हैं। जो हमें उस समय का इतिहास जानने में मदद करती हैं।
ये साहित्य उपरोक्त में से किसी भी भाषा में लिखा जा सकता है। प्रायः ये साहित्य, उस समय विशेष से प्रयोग में लाये जाने वाली भाषा में लिखा जाता है। समय विशेष में लिखा गया ये साहित्य, तात्कालीन इतिहास के महत्वपूर्ण साधन होते हैं।

What do you understand by archives sources?

प्र–18 अभिलेखागारीय स्रोतों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर इतिहास जानने के इस साधन से हमारा अभिप्रायः लिखित बही, पट्टों, रिपोर्ट, फरमान फाइलों, आदि से है। यदि ये अभिलेख उस समय की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक दशा पर प्रकाश डालते हैं, तो ये भी इतिहास जानने के अभिलेखागारीय स्रोत माने जाते हैं तथा इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन होते हैं।

How to know more about the 'history of Rajasthan' through Sanskrit sources?

प्र–19 राजस्थान के इतिहास जानने के "संस्कृत स्रोत" कौन–कौनसे हैं?

उत्तर संस्कृत भाषा में लिखे ये साहित्य भी राजस्थान के इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं। ये निम्नानुसार हैं–
जयानक द्वारा रचित 'पृथ्वीराज विजय'– ये चौहान वंश के शासकों से सम्बन्धित साहित्य है।

नयन चन्द्र सूरि द्वारा रचित–'हमीर महाकाव्य' में रणथम्भौर के चौहान शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

चन्द्रशेखर द्वारा रचित– 'सुर्जन चरित' से राजस्थान के सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है।

मेवाड़ के प्रमुख 'शिल्पी मण्डन' द्वारा रचित– 'राजवल्लभ' में मेवाड़ के महाराणाओं के समय की जानकारी मिलती है।

मेरूतुंग द्वारा रचित– 'प्रबन्ध चिंतामणी' राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित साहित्य है।

रणछोड़ भट्ट द्वारा रचित– 'अमर काव्य' वंशावली में बापा रावल से– महाराणा राजसिंह तक का मेवाड़ का इतिहास उपलब्ध है।

अतः ये संस्कृत साहित्य स्रोत राजाओं के शासन पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

What do you know about Rajasthan modern historians and their writings?

प्र–20 राजस्थान के आधुनिक इतिहासकारों एवं उनकी प्रमुख रचनाओं के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर राजस्थान के आधुनिक इतिहासकारों में सर्वप्रथम कर्नल टॉड ने, राजस्थान के इतिहास को लिखने का प्रयास शुरू किया। टॉड का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'एनलस' का प्रथम खण्ड 1829 ई. में और दूसरा खण्ड ''पश्चिमी भारत की यात्रा'' के नाम से टॉड की मृत्यु के बाद 1839 ई. में प्रकाशित हुआ।

इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी ये ग्रन्थ दोषयुक्त हैं। राजपूत जाति व शासकों के बारे में कर्नल टॉड का विवरण अपूर्ण है। कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक में लिखने से पूर्व उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग नहीं किया, अतः उसके इतिहास में विश्वसनीयता कम है।

आधुनिक कवियों में सूर्यमल मिश्रण का नाम उल्लेखनीय है। उनकी प्रसिद्ध रचनाएं– वंश भास्कर, वीर सतसई, बलचद्विलास, छेदोभमूल, सतीरासो, धातु रूपावली आदि राजस्थान इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं। ये बूंदी के महाराव रामसिंह के दरबारी कवि थे। सूर्यमल मिश्रण कृत 'वंश भास्कर' में राजस्थान का ही नहीं, उत्तरी भारत की जानकारी के लिए भी ये महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

डॉ. कानूनगो ने ऐतिहासिक दृष्टि से 'पृथ्वीराज रासों' को भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना है।

कविराजा श्यामलदास की रचना ''वीर विनोद'' जो चार खण्डों में विभक्त है। ब्रिटिश सरकार ने 'केसर ए हिन्द' की उपाधि से सम्मानित किया।

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा प्रसिद्ध इतिहासकार व पुरातत्ववेता थे। 1911 में उन्होने सिरोही राज्य का इतिहास, सिसोदिया राज्य का इतिहास, बीकानेर राज्य का इतिहास लिखा । अंग्रेजी सरकार ने उन्हें अजमेर बुलाकर म्यूजियम क्यूरेटर (अध्यक्ष) बना दिया था।

मुंशीदेवी प्रसाद ने अरबी व फारसी भाषाएं सीखी तथा 'हुमायूँनामा', 'जहाँगीरनामा', 'बाबरनामा', फारसी ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया। 'स्वप्न राजस्थान' भी उनके द्वारा लिखा गया। ये साहित्य आधुनिक राजपूत शासकों के चरित्र को विशुद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।

रामनाथ रत्नू कृत राजस्थान का इतिहास विशाल न होते हुए भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है।

जगदीश सिंह गहलोत की गणना भी राजस्थान के आधुनिक इतिहासकारों में की जाती है। उन्होने तीन खण्डों में 'राजस्थान का इतिहास'' प्रकाशित किया, प्रथम–खण्ड में करौली के यादव, जैसलमेर के भाटी राजघरानों का विवरण है। दूसरे खण्ड में अजमेर, जयपुर के

GurukPo.com No 1 Educational Web Portal in India

कछवाहा तथा अलवर के नरूका राज्य का इतिहास है। उनके अधूरे कार्य को उनके पुत्र सुखबीर सिंह गहलोत ने पूरा किया।

राजस्थान के निवासी इन इतिहासकार और उनकी रचनाओं के प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

What do you understand by Khyat Literature? Write in detail about important Khyats

प्रश्न–21 **ख्यात साहित्य से आप क्या समझते हैं ? महत्वपूर्ण ख्यातों का विवेचन कीजिए।**

उत्तर राजस्थान के इतिहास को जानने में 'ख्यात साहित्य' का अपना स्थान है। ऐसा साहित्य जो 'ख्याति' प्रतिपादित करे प्रशंसा में लिखा जाये, ख्यात साहित्य कहलाता है। ख्यात लेखक राज दरबार में रहने वाले चारण व भाट होते थे। ख्यात लेखक राजस्थानी भाषा में, गद्य में लिखा गया साहित्य है, लेकिन मुणहोत नैणसी री ख्यात अपवाद है। इसमें ऐतिहासिक स्रोतों से जानकारियाँ ली गई है। अन्य ख्यातकारों ने किन ऐतिहासिक स्रोतों की सहायता ली है, इसका जिक्र तक भी नहीं किया है। ख्यात साहित्य सत्य के ज्यादा करीब नहीं है। इस कारण इस साहित्य को प्रामाणिक मानने में कठिनाई होती है। फिर भी इनका अपना महत्व है, यहाँ कुछ प्रमुख ख्यातों की जानकारी दी जा रही है।

मुणहोत नैणसी री ख्यात साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ख्यात साहित्य है। मुणहोत नैणसी री ख्यात सर्वाधिक प्रसिद्ध भी है। इसमें सिन्ध गुजरात मध्य भारत आदि प्रदेश व शासकों का भी वर्णन मिलता है।

दयालदास री ख्यात इसमें बीकानेर के राठौड़ों से लेकर जोधपुर के राव जोधा तक की पूरी जानकारी मिलती है।

राजा मानसिंह री ख्यात इस ख्यात से जोधपुर नरेश मानसिंह के समय की घटनाओं का पता चलता है।

मुण्डीयार री ख्यात इसमें 200 बातों का संग्रह है, इससे राजस्थान की ऐतिहासिक, सामाजिक आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है। इसमें राजपूत वंशों की ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक, आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

फलौदी, सांचौर, जैसलमेर की ख्यात इसमें फलौदी, सांचौर, जैसलमेर के इतिहास को जानने में मदद मिलती है।

किशनगढ़ की ख्यात से किशनगढ़ के इतिहास की जानकारी मिलती है।

बांकीदास री ख्यात– बांकीदास ने महाराजा मानसिंह के राज दरबार में सर्वोच्य स्थान प्राप्त किया था। बांकीदास ने अपनी रचनाओं से अंग्रेजों को काफी प्रताड़ित किया, उनकी रचनाओं ''आयो अंग्रेज मुल्क रे ऊपर'' गीत ने राजस्थान में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। इससे बांकीदास की राष्ट्रीय भावना का पता चलता है, पूर्ण व क्रमिक इतिहास प्रचार जानने में 'बांकीदास की ख्यात' एक आधार–ग्रन्थ के रूप में सहायक हो सकती है।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–3

Chief characteristics of Paleolithic, Mesolithic chalcolithic and copperage culture and their extension (ahead, Balathal, Ganeshwar) characteristics of Kalibanga culture

राजस्थान में पूर्व पाषाण एवं मध्य पाषाणकालीन संस्कृतियॉ ताम्रपाषाणिक एवं ताम्रयुगीन संस्कृतियों की विशेषताएं एवं विस्तार (आहड़, बालाथल, गणेश्वर) कालीबंगा संस्कृति की विशेषताएँ, लौहयुगीन संस्कृतियाँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. इतिहासकारों ने पूर्व–पाषाणकाल का विभाजन जिसके आधार पर किया है, वह है –

(अ) पर्वत और नदियाँ (ब) गुफाए एवं कन्दराएं
(स) मानव शास्त्र एवं पुरातत्व (द) पाषाण एवं धातुएं

(द)

2. राजस्थान में पाषाणयुगीन संस्कृति का प्रसार हुआ था–

(अ) प्रमुख व सहायक नदियों के किनारे (ब) अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में
(स) रेगिस्तान में (द) जंगलों की कन्दराओं में

(द)

3. राजस्थान में पाषाणयुगीन सभ्यता के केन्द्रों से जो सामग्री प्राप्त हुई है, वह है–

(अ) मुद्राएं व सिक्के (ब) शिलालेख
(स) बेडौल व सौन्दर्यविहीन औजार (द) ताम्र–पत्र

(स)

4. आदि मानव को हथियारों की आवश्यकता हुई, क्योंकि–

(अ) आदि मानव पर निरन्तर बाहरी आक्रमण होते रहते थे।
(ब) आदि मानव साम्राज्यवादी प्रकृति का था।
(स) अपनी रक्षा व जीविका के लिए
(द) विक्रय हेतु ।

(स)

5. उत्तर पाषाण काल में मानव ने सीख लिया था।

(अ) आग का प्रयोग (ब) लोहे का प्रयोग
(स) लोहे के हथियार बनाना (द) व्यापार करना

(अ)

6. लोहा गलाने की भट्टियाँ मिली हैं।

(अ) आहड़ से (ब) कालीबंगा से (स) बालाथल से (द) गणेश्वर से

(स)

7. किस प्राचीन सभ्यता केन्द्र को ताम्रवती के नाम से भी जाना जाता था।

(अ) आहड़ (ब) कालीबंगा (स) गिलूण्ड (द) गणेश्वर **(अ)**

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

8. **गणेश्वर सभ्यता का सम्बन्ध किस नदी से है ?**

(अ) सरस्वती (ब) आहड़ (स) कैतली (द) सिन्धु

(अ)

9. **राजस्थान के किस वर्तमान जिले में गणेश्वर स्थल स्थित है ?**

(अ) सीकर (ब) उदयपुर (स) जयपुर (द) गंगानगर

(अ)

10. **कालीबंगा क्षेत्र स्थित है –**

(अ) जयपुर में (ब) भीलवाड़ा में (स) कोटा में (द) हनुमानगढ़ में

(द)

11. **कालीबंगा के उत्खनन कार्य में जिन पुरातत्ववेत्ताओं का प्रमुख योगदान रहा है, वे हैं।**

(अ) दयाराम साहनी एवं आर.डी. बनर्जी

(ब) अमलानन्द घोष एव ंबी.के. थापर

(स) डॉ. नीलकठण्ड शास्त्री एवं डॉ. मजूमदार

(द) जॉन मार्शल और एच.डी. साकलिया

(ब)

12. **कालीबंगा की खुदाई का कार्य प्रारम्भ हुआ था?**

(अ) 1945 ई. में (ब) 1966 ई. में (स) 1980 ई. मे (द) 1952 ई. में

(द)

13. **यूनानी देवता अपोलों की चित्रांकित मुद्रा जिस स्थल में प्राप्त हुई वह है–**

(अ) कालीबंगा (ब) धूलकोट (स) आहड़ (द) गिलूण्ड

(स)

14. **कालीबंगा सभ्यता की लिपि लिखी जाती थी।**

(अ) दायें से बायें (ब) बायें से दायें

(स) नीचे से ऊपर (द) ऊपर से नीचे

(अ)

15. **आहड़ सभ्यता के अवशेष जिस खण्डहर के नीचे से प्राप्त हुए है, वह है–**

(अ) कोट डीगी (ब) कालीबंगा (स) धूलकोट (द) गिलूण्ड

(स)

16. **आहड़ संस्कृति है–**

(अ) ताम्रपाषाण कालीन (ब) लौहयुगीन

(स) कांस्ययुगीन (द) मध्यपाषाण कालीन

(अ)

17. **हड़प्पा व कालीबंगा संस्कृति का विध्वंस हुआ–**

(अ) भूकम्प से (ब) बाढ़ से (स) सूखा पड़ने से (द) महामारी से

(स)

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

Where are found the centres of pre stone civilization in Rajasthan?

प्र–18 राजस्थान में पूर्व–पाषाणयुगीन सभ्यता के केन्द्र कहां–कहां पाये गये हैं ?

उत्तर उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से यह प्रमाणित हुआ है कि वर्तमान में बांसवाड़ा, बून्दी, कोटा, इन्द्रगढ़ आदि जिलों तथा तहसीलों में पाषाण–युगीन मानव रहता था।
सर्वेक्षण से यह पुष्टि हुई है कि मेवाड़ क्षेत्र में इतिहास प्रवाह सतत रहा है। इसका क्रम कभी भंग नहीं हुआ।

Mention content of Stoneage culture?

प्र–19 मध्य पाषाण कालीन संस्कृति के केन्द्रों के नाम बताइए ?

उत्तर इस काल की सभ्यता के अवशेष राजस्थान के बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा, पंचभदरा नदी घाटी, सांजल क्षेत्र, भीलवाड़ा के बागोर और झालावाड़ केन्द्रों से प्राप्त हुए हैं।

Write about the content of copper age civilization?

प्र–20 ताम्रयुगीन सभ्यता के प्रमुख स्थल बताइए–

उत्तर उदयपुर जिले का आहड़, सीकर का गणेश्वर, बालाथल (उदयपुर), सीकर जिले का गणेश्वर ताम्रयुगीन सभ्यता के प्रमुख केन्द्र हैं।

What do you understand by cave art?

प्र–21 कन्द्राकला से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर वर्षा व वायु के कारण राजस्थान में स्थित अरावली पर्वत माला कई स्थानों से कट गई है, कटे हुए स्थान ने कन्द्राओं का रूप ले लिया है। प्राचीन मानव ने उत्तर पाषाण काल में इन कन्द्राओं को अपना आवास बनाकर कन्द्राओं की दीवारों पर चित्रकारी करके आकर्षक बना दिया। विद्वानों ने इसे 'कन्द्राकला' का नाम दिया है।

Mention the article got as a product of Bairath exclamation?

प्र–22 बैराठ उत्खनन से प्राप्त होने वाली सम्पदा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर बैराठ उत्खनन से लौहे, ताँबे व मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में अशोककालीन स्तम्भ व बौद्ध विहार भी प्राप्त हुए हैं।

What arms were found as revert of ganeshwar excavation?

प्र–23 गणेश्वर की खुदाई में कौन–कौनसे आयुध प्राप्त हुए हैं ?

उत्तर गणेश्वर की खुदाई में तांबे के औजार, गंडासे, चाकू उस्तरे, चूलदार बाणों का अग्रभाग मुख्य रूप से प्राप्त हुए हैं। लौह व पत्थर के कुछ ढ़ाँचे दो पाइप के टुकड़े, नलकूप मिला है जो जल निकासी की ओर इंगित करता है, उत्खनन में तॉबे के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। ताम्र उपकरण व ताम्र पात्र अधिक संख्या में मिलने के कारण इसे ताम्रयुगीन सभ्यता भी कहा जाता है।

Gurukpo.com No1 Educational Web Portal in India

Where is Balathal situated? Under whose supervision that excavation was done?

प्र–24 बालाथल कहाँ स्थित है ? बालाथल खुदाई का कार्य किसके नेतृत्व में किया गया है? बालाथल किस सभ्यता से सम्बन्धित है?

उत्तर बालाथल उदयपुर के वल्लभनगर तहसील में स्थित है, इसकी खुदाई 1993 में डा. वी.एन. मिश्र के नेतृत्व में हुई। ये ताम्रयुगीन सभ्यता है।

Mention the important places of Indus-Sarswati civilization in Rajasthan?

प्र–25 राजस्थान में सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के प्रमुख स्थल बताइये।

उत्तर राजस्थान में सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के प्रमुख स्थल कालीबंगा सभ्यता, प्राचीन सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। राजस्थान का ये ऐतिहासिक स्थान बीकानेर के गंगानगर जिले में सूखी घघ्घर नदी (प्राचीन सरस्वती) नदी के तट पर स्थित है।

सरस्वती नदी के लुप्त होने का उल्लेख पुराणों में मिलता है। कालान्तर में किसी प्राकृतिक आपदा के कारण ये सभ्यता लुप्त हो गई। इसी के साथ इस समृद्ध सभ्यता के केन्द्र का ह्रास हो गया। इसकी खुदाई सर्वप्रथम 1952 ई0 में आरम्भ हुई।

निबन्धात्मक प्रश्न–

Mention chief charactercittes of Kalibanga civilization.

प्र–26 कालीबंगा सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

On the basis of Kalibanga excavations result and describe its culture and civilization?

कालीबंगा के उत्खनन के परिणाम एवं उपलब्धियों के आधार पर इस सभ्यता व संस्कृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर हमारे पड़ौसी देश पाकिस्तान ने अपनी सभ्यता को विश्व की प्राचीनतम सभ्यता होने का दंभ भरना आरम्भ किया क्योंकि हड़प्पा और मोहनजोदड़ों पाकिस्तान के प्रदेश बन चुके थे। अतः इस दावे को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए भारत के पुरातत्व विभाग ने पंजाब, राजस्थान व गुजरात में उत्खनन का कार्य आरम्भ करवाया और जिससे न केवल सिन्धु या हड़प्पा के, वरन् उससे भी प्राचीन संस्कृति के अवशेष ढूँढ़ निकाले। जिसे हम कालीबंगा सभ्यता के नाम से जानते हैं। ये सभ्यता गंगानगर जिले की सूखी घघ्घर (प्राचीन सरस्वती नदी) के तट पर स्थित है।

इस सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

नगर व भवन निर्माण– खुदाई से नगरों के प्राचीन होने के प्रमाण मिलते है। इस सभ्यता में अनेकों विशेषताएं हड़प्पा सभ्यता से मिलती हैं। मकान मिट्टी व ईंट से बनाये जाते थे। कालीबंगा के मकानों में 4–5 बड़े कमरे व एक बड़ा दालान होता था। $30 \times 15 \times 7.5$ सेन्टीमीटर के लगभग ईंटों का प्रयोग मकानों में किया जाता था। ईंट पकाने का कोई भट्टा मिलने से अनुमान है कि ईंटों को धूप में पकाया जाता था। द्वितीय स्तर के उत्खनन से ज्ञात हुआ, नगर के चारों ओर दीवार व खाईयाँ बनाई गई थीं। बस्ती के निकट सुरक्षा चौकी की व्यवस्था भी रही होगी।

बर्तन व अन्य सामान– मिट्टी के हल्के, पतले, बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिसमें सुन्दरता का प्रायः अभाव पाया गया है। अलंकित बर्तनों के अतिरिक्त मिट्टी की मुहरें, चूड़ियॉं, तोल के बाट, कांच के मणिए, तांबे के औजार भी मिले हैं।

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

जुते हुए खेत— सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि नगर की प्राचीर से बाहर जोती गई कृषि भूमि है। घग्घर नदी के बांये किनारे पर स्थित खेत लगभग 3000 वर्ष पूर्व के हैं।

दुर्ग के भग्नावशेष— सुरक्षा की दृष्टि से दुर्ग पश्चिम दिशा के ऊँचे टीले पर बनाया गया था। दुर्ग की आकृति समचतुर्भुजाकार थी। इसके परकोटे के निर्माण में ईंटों का प्रयोग किया गया है।

अग्निवेदिकाएं— दुर्ग के दक्षिणी भाग में चबूतरे बने हुए हैं। चबूतरें पर कुआँ तथा अग्निवेदिकाएं प्राप्त हुई हैं। शायद धार्मिक अनुष्ठान के समय हवन आदि के लिए ये अग्निवेदिकाएं बनाई गई होंगी।

दाह संस्कार— कालीबंगा दुर्ग से 300 मीटर की दूरी पर कब्रिस्तान मिला है। अनुमानतया दाह संस्कार तीन प्रकार से किया जाता था—

- आयताकार गर्तों में शव को सीधा लिटा देते थे
- वृत्ताकार गर्त्तों में शवाधान करना
- आयताकार अथवा अण्डाकार गर्तों में शव के पास मृद्—भाण्ड रखकर।

शव का सिर उत्तर व पैर दक्षिण की ओर रखा जाता था। पहले प्रकार की कब्रों को मिट्टी से बूरकर ऊपर से कच्ची ईंटो की चिनाई की जाती थी।

दूसरी तरह की गोल कब्रों में शव के साथ कलश, थाली, मृदपात्र रख दिए जाते थे।

तीसरे प्रकार की कब्रें आयताकार व अण्डाकार होती थी, इसका शवाघटन प्रथम प्रकार के कब्रों की भांति ही किया जाता था।

हड़प्पा पूर्व की सभ्यता— कालीबंगा में प्राप्त अवशेष पाकिस्तान के कोट—डीगी नामक स्थान से भी मिलते है। कोट—डीगी—सभ्यता—हड़प्पा सभ्यता से भी पूर्व की मानी जा रही है। इन उत्खननों ने ये प्रश्न खड़ा कर दिया है कि आखिरकार इस सभ्यता के निर्माता कौन थे ?

शायद कालीबंगा और कोट—डीगी नामक स्थानों के बाद संभवतः सैन्धव सभ्यता रही होगी तभी सैन्धव सभ्यता का अपेक्षाकृत और विकसित लग रही है। लेकिन उत्खननों के आधार पर इतना तो मानना ही होगा कि कालीबंगा सभ्यता प्राचीनतम सभ्यता है।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–4

Matsy Janpad and Tribes

मत्स्य जनपद एवं कबीलाई जातियां

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ऋग्वेद में जिस प्रमुख आर्य दल का वर्णन है, वह है–

(अ) भील आर्य (ब) मेर आर्य (स) मत्स्य आर्य (द) मीणा आर्य

(स)

2. मत्स्य जनपद में जो नगर सम्मिलित था–

(अ) जोधपुर (ब) बीकानेर (स) जयपुर (द) उदयपुर **(स)**

3. चित्तौड़ के उत्तर–पूर्व में नगरी नामक स्थान किस जाति का केन्द्र था–

(अ) मत्स्य आर्य (ब) शिवि (स) इण्डो–ग्रीक (द) पुरू **(ब)**

4. महाभारत काल में मत्स्य जनपद पर राज्य करने वाला राजा था–

(अ) सहदेव (ब) भीम (स) विराट (द) अभिमन्यु **(स)**

5. सिकन्दर के आक्रमण के बाद अर्जुनायन जाति कहां आकर बस गई थी–

(अ) अजमेर–खेरवाड़ा (ब) चित्तौड़ के आसपास

(स) बाड़मेर व जैसलमेर (द) अलवर और भरतपुर **(द)**

6. वह देश जो 'मत्स्य देश' का क्षेत्र था–

(अ) अलवर (ब) भरतपुर (स) जयपुर (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

7. मालव जनपद की राजधानी थी–

(अ) मालवा (ब) अलवर (स) जयपुर (द) मालव नगर या ककोर्ट नगर

(द)

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

What do you know about the coming of matsya aarya in Rajasthan?

प्र–8 मत्स्य आर्यों के राजस्थान आगमन के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर आर्यों को बसने के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश थी, उनके कुछ समूह सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों की उत्पयकाओं में आकर बस गये थे। ऋग्वेद में जिन आर्यों के आगमन का ज़िक्र है, उनमें मत्स्य आर्य भी है।

Where did 'Matsya aaryans setup colonies in Rajasthan?

प्र–9 मत्स्य आर्यों ने सर्वप्रथम राजस्थान के किन–किन क्षेत्रों में अपनी बस्तियॉ बसाई?

उत्तर मत्स्य आर्यों ने जयपुर, अलवर, भरतपुर प्रदेशों में अपनी बस्तियां बसाई। इस प्रकार राजस्थान में आर्यों के बसने का सिलसिला शुरू हुआ।

Where other groups of Aryans' were settled?

प्र–10 आर्यों के अन्य दल कहॉ–कहॉ बसे ?

उत्तर सरस्वती नदी के चारों ओर के प्रदेश पर आर्यों के पुरू दल ने अधिकार जमाया। राजस्थान के पश्चिमी भाग की तरफ 'यदु' दल ने अपनी बस्तियां कायम की।

महाभारत से शाल्व नामक समूह का भी पता चलता है, जो कि भीनमाल, सांचौर, सिरोही के क्षेत्र में बसा हुआ था।

What do you know about the establishment of ' Power of Malvas' in Rajasthan?

प्र–11 राजस्थान में 'मालव शक्ति' की स्थापना के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर राजस्थान प्रारम्भ से ही अपने पड़ौसी राज्यों में बसी हुई जातियों के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल रहा है। जब इन जातियों पर विदेशी आक्रमणों का दबाव बढ़ता था, ये लोग राजस्थान के मरू एवं पर्वतीय क्षेत्रों में आकर बस जाते थे।

यूनानी आक्रमण के समय शिवि, मालव, अर्जुनायन, जातियॉ बड़े पैमाने पर पंजाब से पलायन कर राजस्थान में बस गई।

What do you know about the 'malvas era?

प्र–12 मालव संवत् के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर मालव जाति एक स्वतन्त्र संवत् का प्रयोग करती थी, जो पहले 'कृत' फिर 'मालव' अन्त में 'विक्रम संवत्' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मालव संवत् 57 ई. पू. से शुरू हुआ। कालांतर में मालव संवत् ही विक्रम संवत के नाम से विख्यात हुआ।

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

निबन्धात्मक प्रश्न–

Mention the hurdle of 'Matsya Janpad' and the causes of downfall?

प्र–13 मत्स्य जनपद की कठिनाई बताते हुए पतन के कारण बताइए।

उत्तर मत्स्य जनपद को प्रारम्भ से ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

- शाल्व व चेदी महाजनपद मत्स्यों के पड़ौसी राज्य थे। चेदी वंश का शिशुपाल जो भगवान श्री कृष्ण का समकालीन था जो श्री कृष्ण के हाथों मारा भी गया था, उसने मत्स्य राज्य पर आक्रमण कर उसे जीत लिया था।
- सिकन्दर के आक्रमण के समय पंजाब की मालव, शिवि, अर्जुनायन जातियां राजस्थान में आकर बस गई।
- भरतपुर व अलवर के क्षेत्रों में अर्जुनायन बस गये।
- अजमेर, टोंक–मेवाड़ के मध्यवर्ती क्षेत्रों में मालवों ने अपना अधिकार कर लिया।
- चित्तौड़ के आसपास (मझमिका नगरी) पर शिवियों ने अपना अधिकार कर लिया। उनकी विस्तारवादी नीति व सैनिक शक्ति के सामने मत्स्य जनपद पतन्नोमुखी हो गया।
- मत्स्यों का बहुत थोड़े भाग पर जो नियंत्रण बना हुआ था, उसे मगध की साम्राज्यवादी नीति का शिकार होना पड़ा।
- मगध के नन्द सम्राटों के पतन के बाद मौर्य सम्राटों ने तो दीर्घकाल तक मत्स्य जनपद पर शासन किया।
- विराटनगर (बैराठ) से प्राप्त अशोककालीन अवशेष और बौद्ध–स्मारक इस कथन की पुष्टि करते हैं।
- ऋग्वेदकाल में मगध साम्राज्य के उत्कर्ष तक राजस्थान का मत्स्य महाजनपद–प्राचीन भारत के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहा।

■■■

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

अध्याय–5

Origin of Rajput's
राजपूतों की उत्पत्ति

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शाकम्भरी के आसपास जिस राजपूत राजवंश का उदय हुआ, वह था–
(अ) प्रतिहार (ब) गहड़वाल (स) चन्देल (द) चाहमान **(ब)**

2. मुसलमानों के आक्रमण से पूर्व राजस्थान के सभी शासक कहलाते थे–
(अ) राजपूत (ब) क्षत्रिय (स) रजपूत (द) शासक
(ब)

3. श्री औंकार व श्री वैद्य के अनुसार राजपूत सन्तान हैं।
(अ) वैदिक आर्यों की (ब) ब्राह्मण वंश की
(स) विदेशियों की (द) सूर्य व चन्द्र वंशीय
(अ)

4. राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बताने वाले विद्वान है–
(अ) श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (ब) डॉ.गोपीनाथ शर्मा
(स) कवि चन्द्रबरदायी (द) डॉ. दशरथ शर्मा
(स)

5. राजपूतों को विदेशियों की सन्तान माना हैं, क्योंकि–
(अ) अनेक शिलालेखों में राजपूतों को विदेशी बताया गया हैं।
(ब) पिंगल सूत्रकृति में राजपूतों को विदेशी बताया गया हैं।
(स) राजपूतों के रीति रिवाज, शक सिथियन व हूणों से मिलते हैं।
(द) राजशेखर ने 'राजतरंगिणो' में राजपूतों को विदेशी कहा गया हैं।
(स)

6. कर्नल टॉड ने राजपूतों को बताया है–
(अ) कुषाण एवं हुण वंश का (ब) यूनानी व अरबी वंश का
(स) शक सिथियन वंश का (द) शक और सातवाहन वंश का
(स)

7. राजपूतों की अग्निकुण्ड से उत्पत्ति को कल्पना मानने वाले इतिहासकार हैं–
(अ) डॉ. ओझा (ब) डॉ. दशरथ शर्मा (स) जगदीश गहलोत (द) डॉ. गोपीनाथ शर्मा
(ब)

8. राजपूतों की उत्पत्ति के अग्निवंशीय सिद्धान्त का प्रतिपादन जिस ग्रन्थ में किया गया है–
(अ) वीर विनोद (ब) गीत गोविन्द (स) पृथ्वीराज रासो (द) सुर्जन चरित्र
(स)

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न</u>–

Which period is known as 'Rajput period'?

प्र–9 किस काल को 'राजपूत युग' के नाम से जाना जाता है।

उत्तर सातवी से बारहवीं शताब्दी के काल को 'राजपूत युग' के नाम से पुकारा जाता है।

Give two argument which mention the origin of Rajput from fire pit

प्र–10 राजपूतों को अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुआ बताने वाले कोई दो तर्क दीजिए–

उत्तर प्रथम चन्दरबरदाई ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''पृथ्वीराज रासो' में राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बताई है।

द्वितीय तर्क के रूप में ये माना गया है, आबू पर्वत पर निवास करने वाले विश्वामित्र, गौतम एवं अगस्त्य ऋषि धार्मिक अनुष्ठान कर रहे थे– दैत्य उसमें हड्डी, मांस डालकर हवन को अपवित्र कर देते थे। दैत्यों का अन्त करने के लिए ऋषियों ने अग्निकुण्ड से तीन योद्धा पैदा किए जब ये भी रक्षा करने के लिए असफल हो गये तो चौथा योद्धा मुनि वशिष्ठ ने उत्पन्न किया, जिसे चौहान कहा गया।

Write an argument answer to prove that Rajputs were the off sponge of Vedic kshatriya

प्र–11 राजपूत वैदिक क्षत्रियों की सन्तान थे, इस मत की पुष्टि में तर्क दीजिए।

.

उत्तर राजपूत वैदिक क्षत्रियों की सन्तान थे। इस मत की पुष्टि में निम्नलिखित तर्क हैं–

- राजपूत वैदिक क्षत्रियों की भांति अस्त्र–शस्त्र की पूजा करते थे।
- सुडौल शारीरिक गठन, लम्बी नाक, ऊँची कद काठी से भी सिद्ध होता है कि राजपूत वैदिक क्षत्रियों की सन्तान थे।

What are the theories of Rajput's origin?

प्र–12 राजपूतों की उत्पत्ति के विभिन्न मत कौन–कौनसे हैं? लिखिये–

उत्तर
1. वैदिक क्षत्रियों की सन्तान
2. अग्नि कुण्ड से उत्पन्न
3. ब्राह्मणों से उत्पत्ति
4. सूर्य व चन्द्र वंशी
5. विदेशियों की सन्तान

उपरोक्त मत राजपूतों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न राय रखते हैं।

Who are scholars who support the theory of the foreign origin of Rajput ?

प्र–13 राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति का समर्थन किन–किन विद्वानों ने किया है?

उत्तर डॉ. वी.ए. स्मिथ, विलियम क्रुक, कर्नल टॉड तथा डॉ. भण्डारकर ने राजपूतों की उत्पत्ति विदेशियों से बताई है।

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

Name the book of 'Chahman's that hold Rajputs are 'Suryavanshi'

प्र–14 चाहमानों का कौनसा ग्रन्थ उन्हें 'सूर्यवंशी' मानता है?

उत्तर 'हमीर' महाकाव्य में चाहमानों को सूर्यवंशी माना गया है।

निबन्धात्मक प्रश्न–

Who were Rajputs? Write a critical note about their origin.

प्र–15 राजपूत कौन थे? उनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

उत्तर राजपूतों की उत्पत्ति से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धान्त प्रचलित हैं।

- **विदेशियों से उत्पत्ति का सिद्धान्त**– राजस्थान इतिहास के लेखक कर्नल टॉड का मत है कि राजपूत विदेशी थे, उनका मानना था कि भारतीय राजपूतों व शक, सिथियनों में बहुत समानता दिखाई देती है। डॉ. स्मिथ ने चन्देलवंशीय राजपूतों की उत्पत्ति गौड़ जाति से, गुर्जर–प्रतिहारों की हूण जाति से, इतिहासकार हार्नली ने गुर्जरों का सम्बन्ध तुर्कों से जोड़ा है। लेकिन इन सभी मान्यताओं में ज्यादा सच्चाई दिखाई नहीं देती क्योंकि केवल रीतिरिवाजों के आधार पर राजपूतों को विदेशी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि भारत की भिन्न–भिन्न जातियों में भिन्न–भिन्न रीतिरिवाज प्रचलित हैं, अतः ये तर्क न्यायसंगत नहीं है।
- **अग्निकुण्ड से उत्पत्ति का सिद्धान्त**– आबू पर्वत पर मुनि वशिष्ठ व अन्य मुनियों ने कुछ समय के लिए शरण ली, वे वहाँ हवन करते थे, राक्षस उस हवन कुण्ड में शराब–मांस, हड्डिया डालकर विघ्न पैदा करते थे। इसलिए मुनियों की प्रार्थना पर देवताओं ने परमार, प्रतिहार, चालुक्यों को पैदा किया– उनसे भी स्थिति न सुधरने की स्थिति में अग्निकुण्ड से चाहमानों को उत्पन्न किया गया जो सशस्त्र ही पैदा हुए और वीर भी थे।

  डॉ. ईश्वरी प्रसाद व सी.वी. वैद्य ने 'पृथ्वीराज रासो' की बातों को कपोल कल्पित बताया और इन बातों को आज के वैज्ञानिक युग में सत्य भी नहीं माना जा सकता है।

- **आर्यो से उत्पत्ति का सिद्धान्त तथा राजपूतों का चन्द्रवंशीय व सूर्यवंशीय होना**– प्राचीन जनश्रुतियों के आधार पर ज्ञात होता हैं कि आर्यों की दो प्रमुख शाखाएं–चन्द्रवंश व सूर्यवंश– राजपूत इन्हीं से उत्पन्न सन्तान है तथा भारतीय है। पण्डित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने राजपूतों के विदेशी सिद्धान्त को निम्न तर्कों के आधार पर नकार दिया है।
- राजपूत व शक सिथियनों के रीतिरिवाज समान नहीं थे, भारत में सूर्य पूजा, अश्वमेघ यज्ञ व अस्त्र–शस्त्रों की पूजा की परम्परा अत्यधिक प्राचीन काल से चली आ रही है।
- शक हूण जातियों से पूर्व भी पुष्यमित्र द्वारा अश्वमेघ यज्ञ किया जा चुका था। डॉ. ओझा जैसे इतिहासकार ने भी राजपूतों का विदेशी होने का मत नकार दिया है।
- **ब्राह्मणों से उत्पत्ति का अभिमत**– डॉ. भण्डारकर ने राजपूतों की उत्पत्ति ब्राह्मणों से बताई है। बाद में अनेक विद्वानों ने भी राजपूतों की उत्पत्ति ब्राह्मणों से बता दी। जैसे– मंडोर (जोधपुर) के प्रतिहार ब्राह्मण वंश के थे। इनके पूर्वज ब्राह्मण हरिशचन्द्र तथा उनकी पत्नी मादरा की सन्तान थे। आबू के 'प्रतिहार' वशिष्ठ ऋषि की सन्तान थे। कहीं–कहीं राजपूत अपने पुरोहित का गोत्र अपना लेते थे।

पिंगल सूत्र में भी राजपूतों को ब्राह्मणों की सन्तान बताया गया है। आधुनिक इतिहासकार डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने भी मेवाड़ के गुहिलोतों को नागर जाति के ब्राह्मण गुहेदत्त का वंशज बताया है।

मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने भी जयदेव के 'गीत गोविन्द' की टीका में स्वीकार किया है कि गुहिलोत, नागर ब्राह्मण गुहेदत्त की सन्तान हैं।

डॉ. दशरथ शर्मा इस मत को स्वीकार नहीं करते हैं।

निष्कर्ष– यह निर्विवाद है कि राजपूतों के कुछ प्रचलित रीतिरिवाज व शारीरिक बनावट विदेशियों से मिलते है लेकिन ये साक्ष्य राजपूतों को विदेशी स्वीकार करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

विदेशी जाति की सन्ताने वैदिक सभ्यता व संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए कभी भी इतनी वीरता नहीं दिखा सकती थी।

कानूनगों ने ठीक लिखा है "अग्नि कुण्ड की कहावत इस प्रगतिशील युग में नहीं मानी जा सकती, सूर्य व चन्द्र से उत्पत्ति काल्पनिक सत्य हो सकती है। राजपूत चाहे किसी भी रूप में जन्में हो, लेकिन ये सत्य है कि इतिहास में उन्होंने 'महाकाव्य काल के' क्षत्रियों की परम्परा को बनाये रखा।

अधिकांश विद्वान राजपूतों को भारतीय आर्यों के वंशज के रूप में स्वीकार करते हैं। जिसमें रक्तसिद्धान्त भी सम्मिलित है, जो भी विदेशी जातियाँ भारत में आई और स्थाई रूप से यहाँ पर निवास करने लगी, उन्होंने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को अपना लिया तथा हिन्दू समाज ने उन्हें आत्मसात कर लिया।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–6

The rise and extension of Guhils, Gurjar, Pratihar and chamans (Chouhans)

गुहिल, गुर्जर प्रतिहार एवं चाहमानों (चौहानों) का अभ्युदय और विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. **प्रतिहार वंश का संस्थापक था।**
   (अ) महेन्द्रपाल
   (ब) हरिश्चन्द्र
   (स) मिहिर भोज
   (द) नागभट्ट द्वितीय (ब)
2. **प्रतिहार वंश की राजधानी थी ।**
   (अ) जोधपुर
   (ब) मेड़ता
   (स) मण्डोर
   (द) जालौर (स)
3. **गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना हुई –**
   (अ) गुजरात
   (ब) कश्मीर
   (स) उज्जैन
   (द) राजस्थान (अ)
4. **गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी शासक था –**
   (अ) महेन्द्रपाल
   (ब) मिहिर भोज
   (स) नागभट्ट द्वितीय
   (द) रामचन्द्र (ब)
5. **गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक था –**
   (अ) महेन्द्रपाल
   (ब) नागभट्ट प्रथम
   (स) वत्सराज
   (द) मिहिर भोज (ब)
6. **गुहिल वंश का संस्थापक था –**
   (अ) क्षेत्र सिंह
   (ब) लाखा
   (स) शिलादित्य
   (द) बप्पारावल (द)

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

7. नैणसी री ख्यात में गुहिलों की कितनी शाखाएं बतायी गई हैं ? –

(अ) 24 शाखाएं
(ब) 27 शाखाएं
(स) 28 शाखाएं
(द) 29 शाखाएं (अ)

8. जैत्र सिंह और नासिरूद्दीन के संघर्ष की जानकारी जिस शिलालेख से मिलती है। वह है–

(अ) विजय स्तम्भ शिलालेख
(ब) आबू शिलालेख
(स) कुम्भलगढ़ शिलालेख
(द) बैराठ शिलालेख (ब)

9. जैत्र सिंह के उत्तराधिकारी का नाम था ?

(अ) संग्रम सिंह
(ब) रतन सिंह
(स) तेज सिंह
(द) बलवन्त सिंह (स)

10. उत्तराधिकारी संघर्ष में भोज को किससे सहयोग मिला ।

(अ) चेदि नरेश कोक्कल देव से
(ब) नागभट्ट प्रथम से
(स) नागभटट द्वितीय से
(द) मिहिर भोज से (अ)

11. कन्नौज के शासक धर्मपाल पर जो आश्रित था वह था –

(अ) भोज
(ब) बक्क
(स) चक्रायुद्ध
(द) शिलादित्य (स)

12. मिहिर भोज का शासन काल था।

(अ) 832 ई0 से 840 ई0 तक
(ब) 825 ई0 से 830 ई0 तक
(स) 831 ई0 से 836 ई0 तक
(द) 836 ई0 से 889 ई0 तक (द)

13. प्रतिहार वंश जिस धर्म को मानते थे वह है –

(अ) हिन्दू धर्म
(ब) जैन धर्म
(स) बौद्ध धर्म
(द) ईसाइ धर्म (अ)

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

14. प्रतिहार राजा नागभट् की राजधानी कौनसी थी ?

(अ) जोधपुर
(ब) मण्डौर
(स) मेड़ता
(द) पाली (द)

15. बप्पा रावल किस वंश से सम्बन्धित था –

(अ) गुर्जर प्रतिहार
(ब) चाटसू के गुहिल
(स) परमार
(द) मेड़ता के गुहिल (द)

16. गुहिल के पिता का नाम था –

(अ) शिलादित्य
(ब) विक्रमादित्य
(स) बालादित्य
(द) विक्रमादित्य द्वितीय (अ)

17. चाहमान (चौहान) राजवंश का प्रारम्भिक केन्द्र था –

(अ) नागौर
(ब) सपादलक्ष
(स) अजमेर
(द) जयपुर (ब)

18. चौहान वंश का प्रथम शासक था –

(अ) वासुदेव
(ब) विग्रहराज
(स) अजयराज चौहान
(द) पृथ्वीराज चौहान (अ)

19. पृथ्वीराज चौहान ने परास्त किया था –

(अ) भण्डानकों को
(ब) चालुक्यवंशी शासकों को
(स) चन्देलों को
(द) उपर्युक्त सभी को (द)

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न–</u>

How many branches did Guhils had in Rajasthan?

प्रश्न 20 **राजस्थान में गुहिलों की कितनी शाखाएं थी ?**

उत्तर – गुहिलों की राजस्थान में 24 शाखाएं थी, जिनमें से कल्याणपुर के गुहिल, मेवाड़ के गुहिल, काठियावाड़ के गुहिल, बागड़ के गुहिल, चाटसू के गुहिल, मारवाड़ के गुहिल आदि अधिक प्रसिद्ध थे ।

What has been written in history about Bappa Rawal becoming the ruler?

प्रश्न 21 **बापा रावल के शासक बनने के लिए इतिहास में क्या कहा गया है ?**

उत्तर कर्नल टॉड के अनुसार बापा गायें चराने का काम करता था । नागदा के जंगलों मे गाये चराते समय बापा का सम्पर्क हारीत ऋषि से हुआ। वही बापा को एकलिंगजी के दर्शन हुये। एकलिंग जी की कृपा से बापा मेवाड़ का शासक बना तथा हारीत ऋषि की कृपा से वैभव की प्राप्ति हुई। इस तथ्य में ऐतिहासिकता झलकती है।

Who was Bappa?

प्रश्न 22 **बापा कौन था ?**

उत्तर बापा नागादित्य का पुत्र था व गुहिल वंश का था । इतिहास में उसे मेवाड़ का प्रतापी शासक कहा गया है।

Who was the first man of Guhil's of Mewar dynasty?

प्रश्न 23 **मेवाड़ के गुहिल वंशजों का मूल पुरूष कौन था ?**

उत्तर गुहिल वंश का मूल पुरूष गुहिल था ।

What was Bappa's important victory?

प्रश्न 24 **बापा की महत्वपूर्ण विजय कौनसी थी ?**

उत्तर चित्तौड़ विजय बापा की महत्वपूर्ण विजय थी।

Who was founder of ' Gurjar –Pratihar dynasty in Ujain?

प्रश्न 25 **उज्जैन के गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक कौन था ?**

उत्तर उज्जैन में गुर्जर प्रतिहार वशं का संस्थापक नागभट् प्रथम था।

GurukPO.com No 1 Educational Web Portal in India

Who was the most famous ruler of Gurjar-Pratihar dynasty and how many years did he ruled?

प्रश्न 26 **गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी शासक कौन था तथा उसने कब तक शासन किया ।**

उत्तर मिहिर भोज पुत्र रामभद्र गुर्जर वंश का सबसे प्रतापी शासक था उसने 836 से 889 ई0 तक शासन किया ।

By what name was western region at Rajasthan known during the second phase of six century.

प्रश्न 27 **छठीं शताब्दी के द्वितीय चरण में पश्चिमी राजस्थान का क्षेत्र किस नाम से जाना जाता था ?**

उत्तर मारवाड़ में प्रतिहारों का आना लगभग छठीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हुआ उस युग में राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र गुर्जरन्ना कहलाता था और वहां के राजाओं को गुर्जरेश्वर कहा जाने लगा । अधिकांश शिलालेखों में उन्हें 'गुर्जर प्रतिहार' के नाम से सम्बोधित किया गया है।

How many branches were there of 'Pratihar' and the most famous & oldest 'Pratihar' which region?

प्रश्न 28 **प्रतिहारों की कुल कितनी शाखाएं थीं और उनमें सबसे प्राचीन व महत्वपूर्ण प्रतिहार कहां के थे?**

उत्तर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में मण्डोर के प्रतिहार सबसे अधिक प्राचीन माने गये हैं। जोधपुर फटियाले के शिलालेख से ये जानकारी मिलती है।

Name the original place of Chauhan dynasty?

प्रश्न 29 **चौहान वंश का मूल स्थान बताइए –**

उत्तर सांभर–पुष्कर –सीकर के मध्यवर्ती क्षेत्र को चौहान वंश का मूल स्थान माना गया है।

Who laid foundation of Chauhan dynasty & where?

प्रश्न 30 **चौहान वंश की नींव किसने व कहां रखी ?**

उत्तर 'पृथ्वीराज विजय 'व हम्मीर महाकाव्य में चाहमन नामक व्यक्ति चौहानों का आदिपुरूष था –किन्तु बिजौलिया शिलालेख के अनुसार 'वासुदेव' नामक व्यक्ति ने सपादलक्ष (सांभर) में चौहान राजवंश की नींव डाली ।

In whose King ruler did the 'Chahman' reached top peak?

प्रश्न 31 **चहमान सत्ता अपने चरम शिखर पर किस शासक के शासनकाल में पंहुची ?**

उत्तर विग्रहराज चतुर्थ के शासनकाल में चहमान सत्ता अपने चरम शिखर पर पहुंची।

When was the first battle of Taraian fought? Who finally won the battle?

प्रश्न 32 **तराइन का प्रथम युद्ध कब व किन–किन के मध्य हुआ इस युद्ध में किसे विजय प्राप्त हुई ?**

उत्तर तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई0 में पृथ्वीराज चौहान व मुहम्मद गौरी के मध्य हुआ तराइन के इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहन तृतीय की विजय व मुहम्मद गौरी की हार हुई ।

निबन्धात्मक प्रश्न–

Write the causes and out comes of the second battle of Taraian

प्रश्न 33 **तराइन के द्वितीय युद्ध के कारण व परिणामों की विवेचना कीजिए –**

उत्तर तराइन का द्वितीय युद्ध पृथ्वीराज तृतीय व मुहम्मद गौरी के मध्य 1192 ई0 में लड़ा गया जिसके निम्नलिखित कारण थे :–

- तराइन के प्रथम युद्ध 1191 ई0 में पृथ्वीराज तृतीय की विजय व मुहम्मद गौरी की पराजय हुई ।
- गौरी तराइन के प्रथम युद्ध में स्वंय की पराजय का बदला लेना चाहता था।
- पृथ्वीराज ने बुन्देलखण्ड के चन्देल शासकों को परास्त कर अपना शत्रु बना लिया, इसलिए उन्होनें तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया।
- गहड़वालों का चौहानों का प्रबल शत्रु होना ।
- कन्नौज नरेश जयचन्द व पृथ्वीराज दोनो ही सीमा विस्तार को लेकर महत्वाकांक्षी थे।
- जयचन्द की पुत्री संयोगिता का अटूट प्रेम दुश्मनी का मूल कारण बन गया।
- तराइन के प्रथम युद्ध में परास्त मुहम्मद गौरी की सेना को यूँ हीं जाने दिया जिसके कारण अगले वर्ष गौरी फिर आक्रमण करने पहुँच गया।
- पृथ्वीराज गौरी के दुर्गरक्षक काजी जियाउद्दीन को बन्दी बनाकर अजमेर तो लाया किन्तु उसे विपुल धनराशि देकर गजनी भेज दिया ।
- तराइन के प्रथम युद्ध में सफलता प्राप्त कर पृथ्वीराज भोग–विलास में डूब गया जब कि गौरी 1 वर्ष की तैयारी के बाद पुनः उसी मैदान में आ डटा ।
- उपरोक्त कारणों से 1192 ई0 में मुहम्मद गौरी पुनः तराइन के मैदान में द्वितीय युद्ध के लिए आ डटा।

तराइन का द्वितीय युद्ध :– 1192 ई0 में युद्ध से पूर्व गौरी ने अपने भाई को पृथ्वीराज चौहान के पास भेजकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने हेतु कहा । दुबारा फिर एक संदेश वाहक भेजा और कहा मैं तो केवल सेनापति हूँ और युद्ध की अपेक्षा सन्धि को अच्छा समझता हूँ, इसलिए मैनें एक दूत अपने भाई के पास भेजा है – ज्योहिं उसका आदेश प्राप्त हो जायेगा मैं गजनी लौट जाउंगा। पृथ्वीराज ने गौरी के सूचना पर विश्वास कर लिया उसकी सेना आराम करने लगी और अचानक गौरी ने आक्रमण कर दिया जिससे पृथ्वीराज को पराजय का मुंह देखना पड़ा और गौरी ने अपनी पराजय का बदला ले लिया । पलायन कर सिरसा की ओर भागते हुए पृथ्वीराज को मार डाला । पृथ्वीराज की मौत को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं।

युद्ध के परिणाम :– विदेशी सत्ता के आधिपत्य का सिलसिला शुरू हुआ जो सदियों तक जारी रहा । गौरी और बाद के मुस्लिम शासकों को भारत में इस्लाम के प्रसार का मार्ग मिल गया। राजपूतों की शक्ति का अन्त हो गया।

हिन्दू धर्म के विनाश का मार्ग भी खुल गया, सारा देश आंतक से जकड़ गया।

युद्ध के बाद धन की लुटपाट हुई । हमें भारतीय धर्म व संस्कृति, कलात्मक मूल्यों की क्षति को बर्दाश्त करना पड़ा । हिन्दू धर्म के साथ साथ बौद्ध धर्म की भी अवनति हुई।

■■■

अध्याय–7

(Mewar under Maharana Kumbha and Rana Sanga and Struggle of Maharana Pratap for freedom)

महाराणा कुम्भा एवं सांगा के अधीन मेवाड़ एवं स्वतन्त्रता के लिए महाराणा प्रताप का संघर्ष

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. महाराणा कुम्भा की माता का नाम था ?

(अ) हंसा बाई
(ब) मूमल देवी
(स) सौभाग्य देवी
(द) सोनल देवी

(स)

2. महाराणा कुम्भा पुत्र था ?

(अ) महाराणा मोकल का
(ब) महाराणा लक्ष सिंह का
(स) महाराणा क्षेत्र सिंह का
(द) महाराणा चूण्डा का (अ)

3. चाचा और मेरा का दमन

(अ) कुम्भा ने अपने बाहूबल से किया
(ब) मेवाड़ के सरदारों के सहयोग से किया
(स) रणमल के सहयोग से किया
(द) राघवदेव व राठौड़ सरदारों के सहयोग से किया। (द)

4. महाराणा कुम्भा के शासनकाल में किस प्रश्न को लेकर गुजरात व मेवाड़ के मध्य संघर्ष हुआ ?

(अ) कुम्भा के विरूद्ध गुजरात द्वारा मालवा को सहयोग
(ब) मालवा व मेवाड़ का गुजरात के विरूद्ध संयुक्त अभियान
(स) कुम्भलगढ़ पर गुजरात का आक्रमण
(द) नागौर के उत्तराधिकार का युद्ध (द)

5. महाराणा कुम्भा मेवाड़ के शासक बने –

(अ) 1437 ई0 में
(ब) 1436 ई0 में
(स) 1433 ई0 में
(द) 1446 ई0 में (स)

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

6. **कुम्भा की उपाधि हालगुरू का अर्थ है।**

(अ) छापामार युद्ध में पांरगत

(ब) राजनीति में पारंगतता

(स) गुरूओं का गुरू

(द) पहाड़ी दुर्ग का स्वामी (द)

7. **विजय स्तम्भ स्थित है।**

(अ) रणथम्भौर में

(ब) चित्तौड़ में

(स) कुम्भलगढ़

(द) दिवेर में (ब)

8. **सम्पूर्ण गुहिल शासकों में कुम्भा ही एक ऐसा शासक था जो अनेकों गुणों और विशेषताओं के प्रतीक विरूदों से विख्यात थे –यह कथन है।**

(अ) डॉ. गोपीनाथ शर्मा

(ब) डॉ. बी.एल. ओझा

(स) डॉ. राजबली पाण्डेय

(द) डॉ. कालूराम शर्मा (अ)

9. **महाराणा कुम्भा के विरूद्ध मालवा व गुजरात की सन्धि को जाना जाता है।**

(अ) अलीनगर की सन्धि

(ब) पुरन्दर की सन्धि

(स) चम्पानेर की सन्धि

(द) खतौली की सन्धि (स)

10. **खानवा का युद्ध हुआ –**

(अ) सांगा व बाबर के मध्य

(ब) सांगा व इब्राहीम के मध्य

(स) सांगा व सुल्तान महमूद के मध्य

(द) सांगा व शेरशाह के मध्य (अ)

11. **खानवा का युद्ध कब हुआ–**

(अ) 15 मार्च 1527

(ब) 17 मार्च 1527

(स) 17 मार्च 1928

(द) 19 मार्च 1930 (ब)

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

12. **खानवा के युद्ध का कारण था –**

(अ) सांगा व बाबर की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा

(ब) बाबर द्वारा धर्म का प्रचार

(स) दोनो के द्वारा धन प्राप्ती की लालसा

(द) सांगा की अदूरदर्शिता (अ)

13. **महाराणा प्रताप ने मुगल सेना को बुरी तरह पराजित किया ।**

(अ) दिवेर के युद्ध में

(ब) कुम्भलगढ़ युद्ध में

(स) खतोली के युद्ध में

(द) डबोक के युद्ध में (अ)

14. **हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा गया –**

(अ) प्रताप व मानसिंह के मध्य

(ब) कुम्भा व मानसिंह के बीच

(स) प्रताप व अकबर के मध्य

(द) उदयसिंह व महावत खां के मध्य (अ)

15. **महाराणा प्रताप के राज्य की राजधानी थी –**

(अ) चावण्ड

(ब) गोगुन्दा

(स) चित्तौड़

(द) उदयपुर (अ)

16. **हल्दीघाटी का युद्ध कब हुआ ?**

(अ) 21 जून 1575 ई0 को

(ब) 22 जून 1577 ई0 को

(स) 21 जून 1576 ई0 को

(द) 18 जून 1576 ई0 में (द)

17. **कर्नल टॉड ने मेवाड़ को थर्मोपल्ली बताया है।**

(अ) दिवेर का युद्ध

(ब) हल्दीघाटी का युद्ध

(स) चित्तौड़ का युद्ध

(द) गोगुन्दा का युद्ध (ब)

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

18. अकबर की अधीनता जिस राजपूत शासक ने सर्वप्रथम स्वीकार की थी वह था –

(अ) रतन सिंह

(ब) अकबर

(स) चन्द्रसेन

(द) भारमल (द)

19. मेवाड़ में 'मेराथन' की संज्ञा किस युद्ध को दी जाती है।

(अ) खमनोर का युद्ध

(ब) दिवेर का युद्ध

(स) रणथम्भौर का युद्ध

(द) गोगुन्दा का युद्ध (ब)

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

Name the sources to know about the history of 'Kumbha' period?

प्रश्न 20 **कुम्भाकालीन इतिहास जानने के स्रोत बताइए –**

उत्तर – विजय स्तम्भ, कुम्भलगढ़ प्रशस्ति, रसिकप्रिया, एकलिंग महात्मय, राजवल्लभ, व फारसी तवारीखे कुम्भाकालीन इतिहास जानने के स्रोत हैं।

Name the books written by Kumbha

प्रश्न 21 **कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम लिखिए –**

उत्तर – रसिक प्रिया, संगीत मीमांसा, संगीतराज, संगीत रत्नाकर, चण्डी शतक आदि कुम्भा द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

Name the famous literary persons of Kumba's period?

प्रश्न 22 **कुम्भा के समय के प्रसिद्ध साहित्यकारों के नाम बताइए –**

उत्तर – मण्डन, कान्हा व्यास, गोविन्द, अभिनाथा कुम्भा के दरबारी साहित्यकार थे।

Write names of books written by 'Mandan' -

प्रश्न 23 **मण्डन द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थों के नाम लिखिए –**

उत्तर– वास्तुमण्डन, रूपमंडन, राजवल्लभ, प्रसादमण्डन, वास्तुशास्त्र आदि मण्डन द्वारा रचित प्रमुख ग्रन्थ हैं।

GurukPO.com No 1 Educational Web Portal in India

Write name two forts of Kumbhas period.

प्रश्न 24 **कुम्भाकालीन दो प्रसिद्ध दुर्गो के नाम बताइये ।**

उत्तर – चितौड़ का दुर्ग, कुम्भलगढ़ दुर्ग कुम्भाकालीन प्रसिद्ध दुर्ग हैं।

To whom the word 'hindupat' has been used?

प्रश्न 25 **'हिन्दूपत' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?**

उत्तर– राणा सांगा को 'हिन्दूपत' कहा गया है क्यों कि उसने सदैव हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा की।

What are important victories of Rana sanga?

प्रश्न 26 **राणा सांगा की प्रमुख विजयें कौन–कौनसी थीं ?**

उत्तर– अजमेर–चाकसू विजय, इब्राहीम लोदी पर विजय, गागनोर का युद्ध, बाड़ी का युद्ध, खतौली पर विजय सांगा की प्रमुख उपलब्धियां थीं ।

Write two causes of defeat of Rajputs in Khanva battle.

प्रश्न 27 **खानवा युद्ध में राजपूतों की पराजय के दो प्रमुख कारण बताइए ।**

उत्तर– बाबर के पास तोपखाने जैसी शक्ति का होना एवं 'तुलुगमा रण पद्धति' राजपूतों की पराजय के प्रमुख कारण थे ।

When & where Maharana Pratap's coronation took place?

प्रश्न 28 **महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कब और कहां हुआ ?**

उत्तर– 28 फरवरी 1572 ई0 को गोगुन्दा में राज्याभिषेक हुआ ।

What was the situation of Mewar at the time of Maharan Pratap's coronation?

प्रश्न 29 **महाराणा प्रताप के राज्याभिषेक के समय मेवाड़ की तत्कालीन स्थिति कैसी थी?**

उत्तर– चित्तौड़ के साथ मेवाड़ के क्षेत्र, मांडलगढ़, बदनौर, बागौर, जहाजपुर व रायला पर मुगल आधिपत्य स्थापित हो चुका था। महाराणा प्रताप को शक्तिशाली मुगल सम्राट अकबर की शत्रुता विरासत में मिली ।

Write briefly about the battle of Haldighati.

प्रश्न 30 **हल्दीघाटी युद्ध के विषय में संक्षेप में लिखिए ।**

उत्तर– हल्दीघाटी का युद्ध 21 जून 1576 ई0 में मुगलों व महाराणा प्रताप के मध्य हुआ । मुगल सेना मानसिंह के नेतृत्व में युद्ध लड़ रही थी। युद्ध में पराजय के बाद भी राणा की शक्ति पूर्णतया नष्ट नहीं हुई और महाराणा प्रताप घाटियों से होकर गोगुन्दा की तरफ चले गए ।

GurukPo.com No.1 Educational Web Portal in India

Why the battle of Haldighati held important in Indian history?

प्रश्न 31 **हल्दीघाटी युद्ध को भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण क्यों माना गया है?**

उत्तर– इस युद्ध में अकबर की विजय अवश्य हुई लेकिन फिर भी अकबर महाराणा को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं कर पाया। इससे महाराणा के यश में कोई अन्तर नहीं आया।

निबन्धात्मक प्रश्न –

Mention the cultural achievements of Maharan Kumbha.

प्रश्न 32 **महाराणा कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियों की व्याख्या किजिए ।**

उत्तर– महाराणा कुम्भा एक पराक्रमी व कुशल योद्धा तो था ही बल्कि सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धियों में भी उसका स्थान सर्वोपरि था, उसने साहित्य, कला, दर्शन नाट्यशास्त्र के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किए।

कुम्भा व स्थापत्य :– सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुम्भा ने अनेकों दुर्ग बनवाए । दुर्गो के साथ ही मन्दिर–महल बनवाने का कार्य भी किया। कुल 32 दुर्गो का निर्माण कुम्भा ने करवाया उनमें से चित्तौड़गढ़ व कुम्भलगढ़ के दुर्ग उल्लेखनीय है। कुम्भलगढ़ दुर्ग में राजा का निवास सबसे उँचाई पर था उस निवास का नाम कुम्भा ने कटारगढ़ रखा है। चित्तौड़ में कुम्भा द्वारा निर्मित विजयस्तम्भ आज भी उस महान शासक की याद दिलाता है ।

कुम्भाकालीन मंदिर :– कुम्भा द्वारा निर्मित मन्दिरों में चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़ और अचलगढ़ के दुर्गो में कुम्भस्वामी के मन्दिर बनवाये। कैलाशपुरी का विष्णु मन्दिर भी उल्लेखनीय है । मन्दिरों की निर्माण शैली पुरानी होते हुए भी तक्षणकला में अद्भुत है।

कुम्भा व राजमहल :– कुम्भा ने चित्तौड़गढ़ में अनेकों राजमहलों का निर्माण करवाया । राजमहल आकार में बड़े थे, जिसमें कोषागार, शस्त्रागार, अस्तबल, जनाना, मर्दाना महल भी हुआ करते थे। उँची छत झरोखे राजमहलों की विशेषता थी ।

कुम्भाकालीन साहित्यिक उपलब्धियाँ :– युद्ध व प्रशासनिक कार्यो में व्यस्त रहने के बाद भी कुम्भा व्याकरण, साहित्य, उपनिषद व राजनीति में निपुण था । वह श्रेष्ठ संगीतकार भी था । उसे लोग 'अभिनव भरताचार्य' के नाम से पुकारने लगे ।

कुम्भा ने संगीतराज, संगीत रत्नाकर, मीमासा व रसिकप्रिया लिखी । गीत गोविन्द का अनुवाद किया। उसके समय के विख्यात शिल्पी मंडन ने भी देवमूर्ति प्रकरण, राजवल्लभ, प्रसाद मण्डन, वस्तु मण्डन, वास्तु शास्त्र आदि ग्रन्थों की रचना की थी। मण्डन के भाई नाथा ने भी उद्धार धोरणी, कला निधि द्वारदीपिका नामक ग्रन्थों की रचना की । कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति की रचना कवि अत्रि व महेश के कान्हा व्यास ने एकलिंग महात्मय लिखा ।

कुम्भा की उपाधियाँ :– कीर्तिस्तम्भ व कुम्भलगढ़ प्रशस्ति से कुम्भा द्वारा धारण की गई अनेक उपाधियों की जानकारी मिलती है। उससे महाराजाधिराज, रायरापन, राणोंरातों, महाराणा, राजगुरू, दानगुरू, हालगुरू, परमगुरू, छापगुरू आदि उपाधियां धारण की थी।

कुम्भा का मूल्यांकन :– उसने विरासत में मिले राज्य की रक्षा की और अपनी सीमा का विस्तार भी किया । उसने गुजरात मालवा तथा मारवाड़ के राठौड़ों के निरंतर आक्रमणों के विरूद्ध अपने राज्य को सुरक्षित रखा। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में उसे ''पवित्रता का अवतार'' कहा गया

GurukulPO.com No.1 Educational Web Portal in India

है। वह लोकप्रिय शासक था और उसनें जनता व राज्यहितों में अनेकों कार्य किये । वह कुशल राजनीतिज्ञ था। वीर योद्धा की भांति लड़तें हुए उसने प्राण त्यागे । उसने कभी भी अपनी मुस्लिम प्रजा पर अत्याचार नहीं किये । उसके समय में मेवाड़ एक शक्ति के रूप में उदित हुआ । लेकिन अपने पड़ौसी राज्यों के प्रति उसकी नीति न्यायप्रिय नहीं थी । उसने भाई को भी राज्य से निर्वासित कर दिया । राठौड़ों के प्रति उसकी नीति गलत थी ।
किन्तु इन कमियों के बावजूद भी वह एक वीर योद्धा था । सांस्कृतिक क्षेत्र में तो उसकी अभूतपूर्व देन के कारण कुम्भा को इतिहासकार युगपुरूष मानते है। और कुम्भा को श्रद्धा से याद किया जाता है ।

Mentions the causes and outcomes battle of Khanva.

प्रश्न 33 **खानवा युद्ध के कारण व परिणामों की व्याख्या किजिए ।**

उत्तर – समरकंद व फरगना में बाबर की स्थिति – राणा सांगा ने भारत के शक्तिशाली शासकों को पराजित कर ख्याति अर्जित कर ली थी। लेकिन ये वो समय था जब बाबर मध्य एशिया के फरगना व समरकन्द में अपने पैतृक राज्य को खो चुका था। लेकिन काबुल को प्राप्त करने में सफल भी रहा लेकिन वो इस छोटे से राज्य से संतुष्ट नहीं था । अतः बाबर भारत में आया और यहां उसका मुकाबला खानवा के मैदान में राणा सांगा से हुआ दोनो के मध्य संघर्ष के अनेक कारण थे।
दोनो का महत्वाकांक्षी होना :– सांगा व बाबर दोनो ही अपना–अपना विस्तृत साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे।
बाबर द्वारा सांगा पर विश्वासघात का आरोप :– बाबर ने 'बाबरनामा' में सांगा को सन्धि तोड़ने वाला विश्वासघाती व काफिर बताया। 'बाबरनामा' में भी लिखा गया कि सांगा ने हमें दिल्ली पर आक्रमण करने बुलाया था।
राजपूत –अफगान संगठन :– राजपूत व अफगान संगठन बाबर के प्रतिद्वन्दी थे। अतः बाबर इनकी शक्ति को नष्ट कर देना चाहता था।
बाबर द्वारा खानवा युद्ध को जिहाद का नाम दिया गया । और सांगा हिन्दू धर्म का प्रबल समर्थक था । अतः संघर्ष स्वाभाविक था।
राणा सांगा द्वारा दिल्ली सल्तनत के अधीन क्षेत्रों पर अधिकार – खण्डार जो दिल्ली सल्तनत के अधीन क्षेत्र था, उस पर सांगा ने अधिकार कर लिया इससे बाबर क्रुद्ध हो गया।
खानवा का युद्ध :– 17 मार्च, 1527 ई0 को खानवा के मैदान में ये ऐतिहासिक युद्ध शुरू हुआ। यद्यपि राजपूत वीरता से लड़े किन्तु बाबर के आग उगलते तोपखाने व तुलुगमा युद्ध पद्धति के आगे उनकी नहीं चली । अंत में सांगा घायल होकर गिर पड़ा और राजपूतों की पराजय तथा बाबर की निर्णायक विजय हुई ।
युद्ध के परिणाम :– मुगलों की विजय से 200 वर्षो तक मुगलों ने भारत पर राज्य किया । और बाबर को हराकर खदेड़ने वाली कोई शक्ति नहीं बची।
राजपूत साम्राज्य का पतन : पराजय के अतिरिक्त राजपूत शासकों को अपार जन–धन की हानि सहनी पड़ी ।
मेवाड़ की प्रतिष्ठा का ह्रास :– डॉ. जी.एन शर्मा ने कहा है कि ''सदियों से मेवाड़ की प्रतिष्ठा को इस युद्ध से बहुत बड़ा धक्का लगा''।

हिन्दू साम्राज्य बनाने का स्वप्न धूमिल हो गया :– डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव का कथन कि ''विदेशी राज्य को मिटाने की राजपूतों की आंकाक्षा समाप्त हो गई ''।

हिन्दू कला व संस्कृति पर आघात – डॉ. रघुवीर सिंह का ये कथन सत्य प्रतीत होता है कि राणा सांगा की हार व उसकी मृत्यु केवल मेवाड़ के लिए ही नहीं अपितु राजस्थान के लिए भी बहुत ही घातक प्रमाणित हुई ''। बाबर के वंशजो का लम्बे समय तक इस देश में शासन बना रहा ।

राणा सांगा ने देश की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहूति दी । इसी कारण डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने लिखा है कि ''उसने अपने चरित्र बल से उस समय में इस बात की पुष्टि कर दी थी कि उच्च पद और चतुराई की अपेक्षा स्वदेश रक्षा और मानव धर्म का पालन करने की क्षमता का अधिक महत्व है, उसने हिम्मत, मर्दानगी और वीरता के आचरण को अपनाकर अपने आप को अमर बनाया''।

■■■

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

<u>अध्याय–8</u>

Marathan invasion on Rajasthan and its outcome

राजस्थान में मराठा आक्रमण और उसके परिणाम

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न–</u>

1. **राजस्थान में मराठों के प्रवेश का जो कारण नहीं था वह है –**
   (अ) राजपूतों की अयोग्यता
   (ब) मराठों की आर्थिक सम्पन्नता
   (स) मुगल साम्राज्य का पतन
   (द) मराठों की साम्राज्यवादी नीति (ब)

2. **राजस्थान में मराठों के प्रवेश का मुख्य प्रभाव पड़ा –**
   (अ) राजपूत शासकों की शक्ति में वृद्धि
   (ब) राजस्थान की आर्थिक स्थिति का शोचनीय होना
   (स) राजपूत शासकों की स्वतन्त्रता का अन्त
   (द) राजपूत –मराठा मित्रता में वृद्धि (स)

3. **पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था –**
   (अ) 1789 ई0 में
   (ब) 1750 ई0 में
   (स) 1761 ई0 में
   (द) 1725 ई0 में (स)

4. **बूंदी के महाराव बुद्धसिंह और सवाई जयसिंह के बीच अनबन का प्रमुख कारण था –**
   (अ) बुद्धिसिंह ने अपनी कच्छावा रानी पर चरित्रहीनता का आरोप लगा दिया था।
   (ब) बुद्धिसिंह कच्छावा रानी की अपेक्षा चूंडावत रानी से अधिक प्रेम करता था।
   (स) सवाई जयसिंह बूंदी पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था।
   (द) सवाई जयसिंह की 'मराठा' नीति के क्रियान्वयन में बुद्धिसिंह बाधा डाल रहा था।
   (स)

5. **राजस्थान में मराठा हस्तक्षेप किस राज्य के उत्तराधिकार विवाद से शुरू हुआ।**
   (अ) जयपुर
   (ब) जोधपुर
   (स) कोटा
   (द) बून्दी (द)

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

6. **मराठे राजस्थान के राजपूत शाासकों से जो कर वसूल करते थे वह था–**

(अ) सरदेशमुखी और चौथ

(ब) जजिया और जकात

(स) आयात और निर्यात

(द) खम्स और खिराज

(अ)

7. **जोधपुर रियासत के उत्तराधिकार संघर्ष में होल्कर ने किसका पक्ष लिया–**

(अ) रामसिंह

(ब) अभय सिंह

(स) बख्त सिंह

(द) उम्मेद सिंह

(स)

8. **मराठों ने उदयपुर पर आक्रमण कब किया –**

(अ) 1722 ई0 में

(ब) 1724 ई0 में

(स) 1725 ई0 में

(द) 1728 ई0 में

(स)

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न</u> –

Write four causes of Maratha iviration -

9. **मराठा आक्रमण के 4 कारण बताइये –**

उत्तर धन लोलुपता,
मुगल साम्राज्य का पतन,
मराठों की साम्राज्यवादी नीति,
राजपूतों की निर्बलता ।

What is the meaning of Chauth and Sardeshmukhi?

10. **चौथ व सरदेशमुखी का क्या तात्पर्य है?**

उत्तर चौथ – एक प्रकार का कर, जिसमें पराजित राजा से मराठें उसकी आमदनी का 1/4 भाग लेते थे। सरदेशमुखी – आमदनी का 1/10 भाग को कहते थे, ये जिस राज्य को जीता जाता था उसी से वसूल किया जाता था।

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

Write important centres of internal conflict of Rajput rules.

11. **राजपूत शासकों के आपसी संघर्ष के प्रमुख केन्द्रों का उल्लेख कीजिए –**

उत्तर राजपूत शासकों के संघर्ष का केन्द्र जयपुर, बगरू, जोधपुर, नागौर व मेवाड़ रहे।

When and by whom was Jayappa Sindhiya killed ?

12. **जयप्पा सिन्धिया को कब और किसने मौत के घाट उतारा ?**

उत्तर जयप्पा के अभिमानी और अपमानपूर्ण व्यवहार से चिढ़ कर 25 जुलाई 1755 ई0 को मराठा शिविर में ही स्नान करते हुए विजय सिंह ने मौत के घाट उतार दिया।

Which state of Rajasthan was the first hunt target of plunder?

13. **राजस्थान के किस राज्य को सर्वप्रथम लूटमार का शिकार बनना पड़ा ?**

उत्तर राजस्थान में जयपुर राज्य को सर्वप्रथम मराठाओं की लूटमार का शिकार होना पड़ा। मराठों को लूट में काफी धन मिला।

Why the Jaipur rulers took support of Marathas in their intangible conflict.

14. **अपने आपसी संघर्ष में मराठों की सैनिक सहायता का समर्थन जयपुर के किन शासकों ने प्राप्त किया?**

उत्तर जयपुर के राजा जयसिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह गद्दी पर बैठा – इस पर माधोसिंह ने उससे राज्य के आधे हिस्से की मांग की जिसे ईश्वरी सिंह ने ठुकरा दिया। माधोसिंह ने मराठों के मल्हार राव होल्कर तथा ईश्वरी सिंह ने रानोजी सिन्धिया का सैनिक समर्थन प्राप्त किया।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न –</u>

Mention the main causes of Maratha's invasion in Rajasthan.

15. **राजस्थान में मराठा आक्रमणों के मुख्य कारणों की विवेचना कीजिए –**

उत्तर जयप्पा के अभिमानी और अपमानपूर्ण व्यवहार से चिढ़ कर 25 जुलाई 1755 ई0 को मराठा शिविर में ही स्नान करते हुए मौत के घाट उतार दिया।

मराठा – पेशवा बाजीराव महत्वाकांक्षी,साम्राज्य के विस्तारवादी नीति का पोषक था। मराठा पतनोन्मुखी मुगल साम्रज्य को धराशायी करना चाहते थे और ऐसा हुआ भी । 1735 ई0 में मराठों ने पूरा मालवा अपने अधीन कर लिया था। इस कारण से मराठों का मालवा से राजस्थान में प्रवेश आसान हो गया।

दूसरी और राजपूत भी कमजोर व जर्जर होते मुगल बादशाहों की वास्तविक स्थिति को समझ चुके थे।

राजपूत स्वंय भी अशक्त हो चले थे उत्तराधिकार युद्ध और गृहयुद्धों की स्थिति से वे स्वंय भी अपने लिए कोई मददगार चाहते थे । उन्हें मराठों के रूप में मददगार उपलब्ध हुए जो आगे चलकर उनके गले की फांस बन गये और आखिरकार मराठों से अपना पीछा छुड़ाने के लिए राजपूत राज्य अंग्रेजों की शरणस्थली बन गये।

डॉ. यदुनाथ सरकार के अनुसार :– ''गृहयुद्धों के कारण दुर्बल और दरिद्र राजपूताना में मराठों को उच्च स्थान प्राप्त हो गया, अब मराठें निःसहाय राजपूताना को प्रति वर्ष लूटने लगे''।

राजस्थान में मराठा आक्रमण के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **मराठों की कमजोर आर्थिक स्थिति** : शुरू में मराठों की स्थिति अच्छी नहीं थी किन्तु आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए मराठों ने गुजरात व मालवा को जीत लिया– यहां के लूट के धन ने उनकी धन पिपासा और बढ़ा दी।
2. **राजपूतों में पारस्परिक वैमनस्य** : भाई–भाई, पिता–पुत्र व सगे सम्बन्धियों के मध्य षडयन्त्रों का समय था। इस कारण से बूंदी, जयपुर, मेवाड़ व जोधपुर सभी मराठों के नियंत्रण में आ गये। और मराठा इन राज्यों को जी भरकर लूटते थे।
3. **मुगलशासकों की दुर्बलता** : सबल केन्द्रीय शक्ति के अभाव में मराठा राजस्थान में अपना प्रभुत्व जमा सके। उन्हें कोई डर नहीं रहा।
4. **मराठों की साम्राज्यवादी मनोवृति** : मराठे अपने राज्य की सीमा बढ़ाना चाहते थे उन्होनें राजस्थान को अपनी मनोवृति का शिकार बनाया।
5. **राजपूतों के पारस्परिक पारिवारिक कलह** : सर्वत्र सत्ता को लेकर भाई–भाई में, राजा–राजा में, राजा जागीरदार में, राजा सामन्तों के मध्य समय–समय पर खिंचती तलवारों ने राजपूतों को अशक्त बना दिया।
6. **चौथ व सरदेशमुखी का लोभ** : चौथ –आमदनी का चौथा भाग –और आप व लूट का 10वां भाग के रूप में राजाओं से मराठों को बहुत धन मिलने लगा। इस लोभ से एक मराठा सरदार किसी एक का–और दूसरा मराठा सरदार दूसरे पक्ष के साथ मिलकर युद्ध करते रहे व करवाते रहे। उन्होनें जानबूझ कर राजस्थान को युद्धस्थली बना दिया और जी भरकर राजस्थान को लूटा । उनकी धनलालसा से दुःखी होकर आखिरकार जयपुर के माधोसिंह ने मराठों की घेराबन्दी कर चौथ व सरदेशमुखी वसूल करने आए मराठाओं का कत्लेआम करवाया।
7. **राजपूतों की सैनिक शक्ति का पराभव** : राजपूतों की स्थिति आधुनिक अस्त्र–शस्त्र व घोड़े खरीदने लायक भी नहीं रही। जिन राजपूतों ने अपने शौर्य से मुगल साम्राज्य का विस्तार किया था। वे ही अपने राज्य को बाहय आक्रमणों से बचा पाने में असहाय महसूस करने लगे।
8. **मराठा नीति** ने राजपूतों को अंग्रेजी संरक्षण में धकेल दिया।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–9

British domain over Rajasthan and its outcome

राजस्थान पर ब्रिटिश आधिपत्य और उसके परिणाम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. अंग्रेजों से सन्धि करने वाला राजस्थान का प्रथम राज्य था –

(अ) अलवर

(ब) कोटा

(स) भरतपुर

(द) बून्दी (ब)

2. मेवाड़ के महाराजा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई हुई थी ।

(अ) जयपुर के सवाई जगत सिंह से

(ब) जोधपुर के महाराजा मान सिंह से

(स) जोधपुर के महाराणा भीमसिंह से

(द) जोधपुर के महाराजा विजय सिंह से (स)

3. 1813 ई0 के बाद राजपूत राज्यों के प्रति नीति में परिवर्तन आने का कारण था ।

(अ) मराठों ने राजपूत राज्यों को अपने अधिकार में कर लिया था।

(ब) लार्ड हेस्टिंग्ज भारत में कम्पनी की सर्वोच्च सत्ता स्थापित करना चाहता था।

(स) राजपूत राज्यों में पारस्परिक कलह बढ़ गये थे ।

(द) राजपूत राज्यों की समृद्धि अंग्रेजों के लिए आकर्षण थी । (ब)

4. राजपूत राज्यों से सन्धि करने वाला अंग्रेज अधिकारी था ।

(अ) मेटकॉफ

(ब) ऑक्टर लोनी

(स) कर्नल टॉड

(द) एलफिन्सटन (अ)

5. राजपूत राज्यों पर ब्रिटिश आधिपत्य का मुख्य परिणाम हुआ ?

(अ) राजपूत राज्यों का आर्थिक विकास

(ब) राजपूतों के साथ मैत्री सम्बन्ध

(स) राजपूत शासकों के भोग–विलास में वृद्धि हो गयी ।

(द) राजपूतों की स्वायत्ता में वृद्धि (स)

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

Why did Maratha's interfere in Rajasthan?

प्रश्न 6 **राजस्थान में मराठों का हस्तक्षेप क्यों हुआ ?**

उत्तर जयपुर बूंदी संघर्ष में, बूंदी के पदच्युत राजा बुद्धिसिंह की रानी ने होल्कर को अपनी सहायता के लिए आमंत्रित किया ।

What was the incident of Krishna Kumari?

प्रश्न 7 **कृष्णा कुमारी की घटना क्या थी ?**

उत्तर मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई जोधपुर के राजा भीमसिंह से तय हुई, विवाह से पूर्व भीमसिंह का देहान्त हो गया । अतः महाराणा ने उसका विवाह जयपुर के शासक सवाई जगत सिंह से करना चाहा। जोधपुर का तात्कालिक शासक मानसिंह भी कृष्णा कुमारी से विवाह करना चाहता था । अतः उसने जयपुर पर चढ़ाई कर दी। जयपुर टीका ले जाने वाला दल वापिस उदयपुर लौट गया । महाराणा मेवाड़ ने अमीर खां का धृणित प्रस्ताव मानकर कृष्णा कुमारी को विष दे दिया अतिसुन्दर राजकुमारी का देहान्त हो गया ।

What was the main reason behind Jhala Jalim Singh of Kota tie hands with the British?

प्रश्न 8 **कोटा के झाला जालिम सिंह ने अंग्रेजों से सन्धि क्यों की ?**

उत्तर झाला जालिम सिंह कोटा राज्य का फौजदार था उसने अंग्रेजों से सांठगाठ कर अपने उत्तराधिकारियों के लिए–एक स्वतन्त्र राज्य झालावाड़ की स्थापना करवा ली – कोटा को अंगभंग कर झालावाड़ बनाया गया। झाला ने अपने उत्तराधिकारियों के लिए स्वर्णिम भविष्य निश्चित कर लिया ।

What was the main aim of Rajputs behind joining hands with the British?

प्रश्न 9 **राजपूत राज्यों द्वारा अंग्रेजो से सन्धियां करने का प्रमुख कारण क्या था ?**

उत्तर राजपूत राज्यों ने मराठों द्वारा ''सरदेशमुखी'' व ''चौथ'' तथा युद्धों के बदले की जाने वाली लूटपाट से बचने के लिए अंग्रेजों से सन्धि की । पिण्डारियों के आक्रमणों तथा उनकी लूटमार से बचने के लिए भी अंग्रेजो से सन्धि की गई।

निबन्धात्मक प्रश्न–

What was the outcome of British domain over Rajasthan ?

प्रश्न 10 **राजस्थान पर ब्रिटिश आधिपत्य के क्या परिणाम हुए ?**

उत्तर **राज्यों की आर्थिक दुर्दशा** –अंग्रेजों को केवल खिराज, टैक्स या अपनी आमदनी से मतलब था। अंग्रेजों की टैक्स नीति ने रजवाड़ों की अर्थिक स्थिति को बिगाड़ दिया ।

- रजवाड़े के खर्च पर स्वंय के लिए सैनिक तैयार किये।
- शेखावटी में शान्ति के नाम पर शेखावटी ब्रिगेड और मीणाओं को दबाने के लिए मेरवाड़ा में मेरवाड़ा बटालियन कायम की गई ।

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

- सुप्रबन्ध का बहाना लेकर ''मेवाड़ भील कोर'' स्थापित की गई । जोधपुर में शान्ति व्यवस्था के नाम पर 'छांग' की व्यवस्था की गई।
- परगनों के 21 गांव ब्रिटिश सरकार ने अपने अधीन कर लिए ।
- बकाया राशि पर 12% वार्षिक दर से ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज, मूलधन के साथ जोड़ा जाता था ।
- कम्पनी राजाओं की भांति भारी राशि वसूल करती थी।
- कम्पनी जनसाधारण से घूस और बेगार लेती थी। राजस्व में कम्पनी की हिस्सेदारी रखती थी।
  राज्यों के आन्तरिक प्रशासन में पूरा दखल रखती थी।
- रजवाड़ों की सेना का नियन्त्रण – कम्पनी के नियुक्त –रेजीडेन्टो के हाथों में रहने लगा।
- सामन्तों के प्रति भिन्न नीति – जो सामन्त अंग्रेजों को जनता, कृषक और छोटे सामन्तों से कर वसूल कर धनराशि देते रहते थे उनसे ब्रिटिश पदाधिकारी खुश रहने लगे।
- जिन राजा व सामन्तों ने उनका विरोध किया उन्हे वे बुरी तरह कुचल देते थे।
- जागीरदारों से धन की लूट व जनता की नजर में जागीरदारों को गिराना ।
- भारतीय नरेशों के सामाजिक रीति–रिवाज व परम्पराओं पर कुठाराघात करना।
- राजाओं की सेवा भी अंग्रेजी रेजीडेन्टों के इशारों पर काम करती थी।
- सामन्तों को करदाता बनाकर प्रभावहीन बनाना चाहती थी।
- राहगीरों से राहदारी व दानापनी टैक्स वसूल किया जाता था।
- राजाओं की पद मर्यादा समाप्त कर दी गई थी।
  आन्तरिक प्रशासन में अंग्रेजों के दखल के कारण राजा –भोगविलासी व निकम्में हो गये थे। वे महिनों तक अन्तःपुर से बाहर नहीं निकलते थे । राजाओं का अधिक समय शराब, अन्तःपुर, हाथियो के करतब, विलायती शराब के नशे में तथा तमाशे देखने में व्यतीत होते थे । शासकों के बारे में मुन्शी देवी प्रसाद ने लिखा है कि ''किसी ने भी अपनी रियासत में इस सिरे से उस सिरे तक का दौरा न किया होगा न ही रैय्यत से पूछा होगा कि तुम्हारी क्या हालत है''।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–10

Administrative Judicial, Social and Economic changes during British domain
ब्रिटिश आधिपत्य काल में प्रशासनिक, न्यायिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. **ब्रिटिश सरकार का राजपूत राज्यों की शासन व्यवस्था में परिवर्तन करने का मुख्य उद्देश्य था –**
   (अ) राज्यों को सम्पन्न बनाना।
   (ब) ब्रिटिश हितों को लाभ पहुंचाना।
   (स) राज्यों के राजस्व पर अधिकार करना।
   (द) राज्यों को शक्तिशाली बनाना।
   (स)

2. **राजस्थान में कन्या वध की प्रथा प्रचलित होने का कारण था ?**
   (अ) दहेज प्रथा
   (ब) भाट व चारणों द्वारा मांगी जाने वाली त्याग
   (स) परिवार में लड़कियों का पैदा होना अशुभ मानना।
   (द) पुत्री का विवाह उच्च कुल में करने पर धन खर्च ना कर पाने
   (अ)

3. **ब्रिटिश संरक्षण काल में जयपुर में न्याय की अन्तिम अदालत थी ।**
   (अ) अपील न्यायालय
   (ब) इजलास
   (स) सर्वोच्च न्यायालय
   (द) महकमा खास
   (द)

4. **प्रशासनिक सुविधा के लिए जोधपुर राज्य –**
   (अ) मण्डलों में विभाजित किया गया।
   (ब) हुकुमतों में विभाजित किया गया।
   (स) जिलों में विभाजित किया गया।
   (द) सूबों में विभाजित किया गया।
   (ब)

5. **राजस्थान में रेलमार्ग बना –**
   (अ) 1880 ई0 में
   (ब) 1888 ई0 में
   (स) 1877 ई0 में
   (द) 1870 ई0 में
   (स)

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

6. **1880 ई0 में मेवाड़ में दीवानी व फौजदारी न्याय प्रशासन के लिए जिस न्यायिक इकाई का गठन किया गया वह थी –**

(अ) महकमा खास
(ब) इजलास खास
(स) राजश्री महासभा
(द) राजश्री महान्द्राज सभा (द)

7. **औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण था –**

(अ) कच्चे माल का अभाव
(ब) ब्रिटिश नीति
(स) देशी शासकों की उदासीन नीति
(द) व्यापारियों की नीति (द)

<u>**लघुत्तरात्मक प्रश्न**</u> –

Give a brief description of the development of Railway in Rajasthan during British period.

प्रश्न 8 **ब्रिटिश आधिपत्य काल में राजस्थान में हुए रेल विकास की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।**

उत्तर ब्रिटिश अधिकारियों ने अपने साम्राज्य व व्यापार वाणिज्य की उन्नति के लिए यातायात के साधनों को विकसित करने पर पूरा जोर दिया।

1860 ई0 के बाद सड़क मार्गो के निर्माण पर भी ध्यान दिया, राजस्थान के प्रमुख केन्द्र अजमेर को राजस्थान के सीमान्त प्रदेशों गुजरात, मध्यभारत, उत्तर पश्चिमी प्रान्तों से जोड़ा। 1877 ई0 में दिल्ली, आगरा, बांदीकुई, अजमेर नसीराबाद रेल लाईन बनाई गयी।

1880 ई0 में फुलेरा से कुचामन रोड़ लाईन शुरू की गई। रेल निर्माण के दूसरे चरण में मारवाड़, पाली जोधपुर को लूनी व पंचभद्रा, जोधपुर बीकानेर को रेल मार्ग से जोड़ा गया। 1899 ई0 में बीना, गुना,बांरा रेलमार्ग चालू किये गये। ये प्रयास ब्रिटिश सरकार ने स्वंय के व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर किये गये।

Mention the changes in the field of education during British period.

प्रश्न 9 **ब्रिटिश संरक्षण काल में शिक्षा के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को बताइये।**

उत्तर अंग्रेज भारतीयों को एक सस्ता लिपिक और काला अंग्रेज बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि अंग्रेजी शिक्षा से एक ऐसा वर्ग तैयार हो जो कार्य में लिपिक वर्ग की हैसियत से अंग्रेजों की सहायता करने वाला हो। वे भारतीय नरेशों व अंग्रेजों के मध्य दुभाषिए की समस्या को भी समाप्त करना चाहते थे।

मिशन स्कूल :– राजस्थान में अंग्रेजी शिक्षा शुरू करने की दृष्टि से मिशन स्कूल खोले गये। सर्वप्रथम ब्यावर में फिर अजमेर में, नसीराबाद, टॉडगढ़, देवली, जयपुर, सांभर , फुलेरा, अलवर, बांदीकुई, जोधपुर, उदयपुर ,कोटा आदि में मिशन स्कूल स्थापित किये गये।

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

राजकुमार व सामन्त पुत्रों की शिक्षा :– राजा व सामन्तों की शिक्षा के लिए सर्वप्रथम 1867 ई0 में 'नोबिल्स स्कूल ' जयपुर में खोला गया। जोधपुर में ''पाइलेट नोबिल्स स्कूल खोला गया।

मेयो कॉलेज :– 1870 ई0 में लार्ड मेयो ने राजाओं व सामन्त पुत्रों के लिए अजमेर मे मेयो कॉलेज की स्थापना की ।

स्त्री शिक्षा – लड़कियों की शिक्षा घरों पर होती थी। लेकिन सर्वप्रथम 1866 ई0 में जयपुर, उदयपुर, भरतपुर में सरकारी स्कूल, ब्यावर में महिला मिशन स्कूल एवं अजमेर में महिला मिशन स्कूल की स्थापना की ।

What important changs were made in the judicial system in Rajasthan during British period ?

प्रश्न 10 ब्रिटिश संरक्षण काल में जयपुर न्याय प्रशासन में क्या–क्या मुख्य परिवर्तन किये गये?

उत्तर पहले न्याय व शासन विभाग राजा के अधीन थे । अंग्रेज एजेन्ट थर्सबी ने शासन विभाग से न्याय विभाग को अलग कर दिया।

राज्य में दीवानी व फौजदारी अदालतें अलग–अलग नियुक्त की गई। तहसील अदालतों के ऊपर नाजिम व मुसिंफ अदालतें होती थी। इनके ऊपर 'अदालत दीवानी' व 'अदालत फौजदारी' स्थापित की गयी। इनके ऊपर 'अपील न्यायालय था। इसमें 4 जज होते थे । दो जज दीवानी अपील व 2 जज फौजदारी अपील सुनते थे। राज्य में गठित 'शासन परिषद्' न्याय की अन्तिम अपील अदालत थी।

राज्य का शासक इस अदालत का अध्यक्ष होता था वह मृत्युदण्ड भी दे सकता था। आगे चलकर शासन परिषद को दो भागों में बांट दिया गया। प्रथम भाग के –'इजलास' दूसरे को 'महकमा खास' कहा जाता था। (महकमा खास राज्य की सर्वोच्च अदालत थी। 1924 ई0 में राज्य में दीवानी और फौजदारी दण्ड संहिता भी तैयार की गई। न्यायालय स्टाम्प शुल्क सम्बन्धी नियम भी बनाये गये।

निबन्धात्मक प्रश्न–

Mention the changes in administration and social fields in Rajasthan during British period.

प्रश्न : 11 ब्रिटिश आधिपत्य काल में राजस्थान मे प्रशासनिक एवं सामाजिक क्षेत्र में हुए परिवर्तनों की व्याख्या किजिए –

उत्तर 1817–18 ई0 मे राजस्थान राज्यों और कम्पनी सरकार (ईस्ट इण्डिया कम्पनी) के मध्य जो सन्धियाँ हुई उन्हें हम ''सहायक सन्धि'' के नाम से भी जानते है। राजस्थान में अलग–अलग राजाओं के साथ अलग–अलग प्रशासनिक सन्धियाँ हुई और इस तरह की सन्धियों के माध्यम से कम्पनी ने रजवाड़ों को पूरा अपने गिरफ्त में ले लिया। इससे चाहे जितने बुरे प्रभाव पड़े हो लेकिन एक अच्छा प्रभाव यह हुआ कि इस सन्धि के फलस्वरूप राजपूत शासकों के बाह्य आक्रमणों का भय समाप्त हो गया।

अंग्रेजों ने रजवाड़ों की आन्तरिक स्थिति को भी पूर्णतया नियंत्रित करने की दृष्टि से राजस्थान राज्यों की राजधानी में अपना एक पॉलिटिकल ऐजेन्ट या रेजीडेन्ट नियुक्त कर दिए ।

राजस्थान में प्रशासनिक परिवर्तन की दृष्टि से :– राजस्थान में मेवाड़, पश्चिमी राजपूताना और जयपुर रेजीडेन्सी बना दी गयी।

एजेन्सियों का गठन – राजपूताना , हाड़ौती, टौक, अलवर, कोटा सहित 5 एजेन्सियों का गठन कर दिया गया।
अजमेर कमिश्नरी की स्थापना – अजमेर रेजीडेन्सी को, राजपूताना रेजीडेन्सियों के नियत्रंण का कार्य सौंपा गया इसके लिए ए.जी.जी. (एजेन्ट टू द् गर्वनर जनरल) की नियुक्ति की गई।
पॉलिटिकल एजेन्ट द्वारा खिराज वसूली की जाने लगी।
खिराज वसूली के नाम पर ब्रिटिश हस्तक्षेप बढ़ गया। राजस्थानी राज्यों में ब्रिटिश पदाधिकारी भी बढ़ा दिए गए।
1857 ई0 तक ब्रिटिश पदाधिकारी रियासतों के प्रति अधीनस्थ अलगाव की नीति का अनुसरण किया । लेकिन 1857 ई0 के बाद ब्रिटिश सरकार ने ' अधीनस्थ सहयोग' की नीति अपनायी।
शासकों को सर्वेसर्वा रखा गया, उसकी सहायता के लिए दीवान नाम अधिकारी होता था, जिसे 'प्रधान' या 'मुसाहिब' भी कहा जाता था।
प्रशासनिक कार्यो के नियत्रंण हेतु एक कौन्सिल बनाई गयीः– लेकिन वास्तविक शक्ति पॉलिटिक्ल एजेन्ट के पास थी। उसी की मनमानी व आदेशानुसार शासक अधीन सामन्तों से मनमाने लाग व कर वसूल करता था।
हुकुमतों का निर्माण :– जोधपुर राज्य को 23 हुकुमतों में बांटा गया, प्रत्येक हुकुमत के मुख्य अधिकारी को 'हाकिम' कहा जाता था।

ग्राम पंचायतो को पुर्नजीवित किया गया तथा 1945–46 में "मारवाड़ ग्राम पंचायत अधिनियम पारित किया गया।
नगरपालिका की स्थापना :– बड़े शहरों में नगरपालिकाओं की स्थापना की गई। सार्वजनिक चिकित्सालयों की स्थापना की गई जेल व्यवस्था में सुधार व राज्य कर्मचारियों की सुरक्षा हेतु सेवा नियम बनाये गये।
यह कहा जा सकता है कि ये आधुनिकीकरण के मार्ग में महत्वपूर्ण कदम थे । प्रशासनिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए जिन नियमों को बनाया गया उनका प्रभाव प्रशासन के साथ–साथ सामाजिक जीवन जैसे–सतीप्रथा, कन्या वध, डाकिन प्रथा व बच्चों के क्रय विक्रय पर पड़ा । लेकिन इसका असर बहुत ही धीरे–धीरे पड़ा ।
सामाजिक जीवन में परिवर्तन :– ब्रिटिश सरकार के राजनैतिक, प्रशासनिक, आर्थिक ढांचे में किये गये परिवर्तनों ने सामाजिक जीवन में भी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण राजपूत शासकों ने कुछ कुप्रथाओं को गैर कानूनी घोषित कर उन्हें समाप्त करने का प्रस्ताव किया।
व्यवसायों में परिवर्तन :– जातिप्रथा का परम्परागत स्वरूप तो बना रहा लेकिन सामाजिक गतिशीलता के कारण जाति, उपजाति व निम्नजातियों में भी व्यवसाय परिवर्तन होने लगा। राजपूत–सैनिक कार्य से निकलकर कृषि कार्य व राजकीय सेवा अपनाते जा रहे थे। ब्राह्मण भी अध्यापन कार्य के साथ कृषि कार्य करने लगे । इस सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख कारण भूमि बन्दोबस्त, वाणिज्य व्यापार पर बढ़ता ब्रिटिश नियंत्रण, यातायात के साधनों का विकास था।
सतीप्रथा का अन्तः– सतीप्रथा का प्रचलन राजपूतों मे सबसे अधिक था। 1922 में बून्दी में, 1830 में अलवर में, 1844 में जयपुर, 1846 ई0 में डूंगरपुर–बांसवाड़ा प्रतापगढ़ ने 1848 में, जोधपुर , कोटा 1860 ई0 में उदयपुर ने सतीप्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।
डाकन प्रथा का अन्त– राजस्थान की अनेक जातियों ने स्त्रियों पर डाकन होने का आरोप लगाकर मार दिया जाता था। 1853 में "मेवाड़ भील कोर के एक सैनिक ने एक स्त्री को डाकन होने के सन्देह में मार डाला । अक्टुबर 1957 में इसे गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। पूरी तरह 20वीं शताब्दी के अन्त में शिक्षा प्रसार के बाद समाप्त हुई।
कन्या वध पर रोक :– भारत में कन्या वध की प्रथा प्रचलित थी । ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित होने के बाद सबसे पहले 1834 ई0 में कोटा में कन्या वध को गैर कानूनी घोषित किया गया। 1837 ई0 में

बीकानेर , 1839 ई0 में जोधपुर–1844 ई0 में उदयपुर में कन्या वध को गैर कानूनी करार दे दिया गया। इस प्रकार 19 वीं शताब्दी के मध्य तक लगभग सभी राज्यों ने इस कुप्रथा को अवैध घोषित कर दिया।

मानव व्यापार प्रथा का अन्त :– 19वीं शताब्दी तक, सम्पन्न राजपूत अपनी पुत्री के दहेज के लिए गोला–गोली खरीदते थे । साधु अपने चेले के लिए लड़को का क्रय करते थे। कुछ रखैल हेतु महिलाओं को, कुछ वेश्यावृति के लिए और कुछ घरेलु कार्य के लिए औरतों का क्रय करते थे। ब्रिटिश शासकों ने राजस्थानी शासकों पर दबाव डालकर 1847 में जयपुर, 1862 में कोटा, 1863 में उदयपुर राज्य में भी इसे गैर कानूनी घोषित कर दिया।

देश हितेषनी सभा – देशी राजाओं के समक्ष आर्थिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होना शुरू हो गयी थी। सामन्तों की आय के साधन सीमित हो गये थे। उनकी माली हालत खराब थी। इसके उपरान्त ''त्याग प्रथा'' के कारण स्थिति और खराब हो गई थी। त्याग प्रथा के तहत दूसरे राज्यों से चारण–भाट, ढोली आदि आ धमकते थे। इससे मुक्ति के लिए''देश हितेषनी सभा'' का गठन किया गया। इस सभा ने दो तरह के प्रतिबन्ध लगाये

1. राजपूतों के विवाह के अवसर पर खर्च कम किया गया।
2. राजपूत ,वैश्य, ब्राह्मणों में बहुविवाह सम्बन्धी नियम बनाये गये।

'त्याग' केवल उन्ही राजपूतों द्वारा दिया जाना तय हुआ जिनकी वार्षिक आय 500 रू से अधिक थी। इस सभा ने कई जातियों के हितार्थ काम किया। इसलिए इसे ''हितेषनी सभा'' कहा गया।

वाल्टरकृत हितकारिणी सभा :–

इसे वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा'' भी कहा गया । इस सभा के गठन में प्रत्येक राज्य के 5–5 राजपूत जाति के सदस्य लिए गये। ए.जी.जी. को इसका अध्यक्ष, अजमेर कमिश्नर को उपाध्यक्ष, वेतनभोगी कर्मचारी को इसका सचिव बनाया गया।

इस सभा ने राजपूतों के एक निश्चित आयुसीमा तक ही बहुविवाह की अनुज्ञा दी। लड़की वालों की ओर से टीका व लड़के वालो की ओर से रीत भेजने की रस्म को समाप्त कर दिया। लड़की की विवाह आयु 14 वर्ष व लड़के की आयु 18 वर्ष नियत की गई।

त्याग नियम भी सख्त कर दिये गये थे। यद्यपि ये सभा असफल रहीं किन्तु राजपूतों को अपनी सामाजिक कुरीतियों के प्रति सोचने का एक मौका अवश्य मिला । आर्य समाज का योगदान :– आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की कर्मभूमि स्थलों में राजस्थान का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

आर्य समाज ने वैदिक धर्म के प्रचार के साथ कुरीतियों के निवारण की तरफ भी अपना ध्यान केन्द्रित रखा । जाति–पाति की कट्टरता पर उन्होनें महान प्रहार किये। चांदकरण शारदा ने ''दलितो उद्धार'' नामक पुस्तक लिखी। स्वामीजी ने बाल विवाह, सतीप्रथा का विरोध किया। साथ ही विधवा विवाह का समर्थन किया। राजस्थान में विधवा विवाह के अनेक मामले ''आर्ष मार्तण्ड'' परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित हुए।

शिक्षा के प्रसार के लिए जगह [2] ''आर्य कन्या पाठशाला'' ''आर्यपुत्री पाठशाला'' श्रीमती ''गोदावरी कन्या पाठशाला'' जगह–जगह डी.ए.वी. कॉलेज खोलकर शिक्षा का प्रसार किया गया। 'वनिता आश्रम' अनाथालय आदि खोलकर स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में महती भूमिका निभाई ।

Describe the development of communication system in Rajasthan?

प्रश्न 12 राजस्थान में संचार व्यवस्था के विकास की विवेचना कीजिए।

उत्तर संचार व्यवस्था का आधुनिक रूप व्याप्त होने से पूर्व अधिकांश राज्यों में डाक सेवा का कार्य, पैदल, हरकारे, घुड़सवारों व ऊँटो से किया जाता था।

1839 में जोधपुर में पहला ब्रिटिश डाकघर खोला गया। अन्य स्थानों पर ब्रिटिश सरकार ने दो शर्ते रखीः–

1. राज्य डाक व्यवस्था के लिए निःशुल्क भवन व्यवस्था करें।
2. राज्य, डाक सेवा की सुरक्षा का दायित्व लें।

साथ ही डाकपत्रों पर 'सर्विस स्टाम्प' लगाने की अनुमति दी गई। 1866–67 ई0 में जयपुर राज्य में 1872 ई0 में बीकानेर, चुरू, रतनगढ़, सुजानगढ़ में डाकसेवा शुरू की गई । 1892 में कोटा, देवली, 1895 ई0 में उदयपुर में तथा एकीकृत राजस्थान के निर्माण के समय जिला मुख्यालय, कस्बों, तहसील तक डाकसेवा चालू हो चुकी थी।

■■■

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–11

British monopoly on salt and opium trade

नमक व अफीम व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. **ब्रिटिश सरकार चाहती थी कि राजस्थान के व्यापारिक मार्गो से जो पारगमन व्यापार होता था वह अब ब्रिटिश क्षेत्रों में होना चाहिए, क्यों कि –**
   (अ) पारगमन व्यापार पर ब्रिटिश नियन्त्रण हो सके ।
   (ब) पारगमन व्यापार का नियन्त्रण कर राजस्थानी राज्यों की आय बढ़ायी जा सके।
   (स) ब्रिटिश सरकार की करों से होने वाली आय में वृद्धि हो सके।
   (द) ब्रिटिश सरकार राज्यों के पारगमन व्यापार को व्यवस्थित कर सके
   (स)

2. **नमक उत्पादित करने वाली वह झील जिस पर जयपुर व जोधपुर राज्य का साझा अधिकार था ।**
   (अ) पचभ्रदा झील
   (ब) पिछोला झील
   (स) फतेहसागर झील
   (द) सांभर झील (द)

3. **नमक उद्योग से राजस्थान के बनजारों को भी रोजगार मिलता था क्यों कि –**
   (अ) वे ही नमक का क्रय विक्रय करते थे।
   (ब) वे नमक को इधर से उधर पहुँचाने का कार्य करते थें।
   (स) वे ही नमक के मुख्य व्यापारी थे।
   (द) वे नमक पर पारगमन शुल्क वसूल करते थे । (अ)

4. **राजस्थानी राज्यों से नमक–सन्धियां करने का मुख्य परिणाम यह हुआ कि :–**
   (अ) राज्य में नमक बहुत सस्ता हो गया ।
   (ब) नमक उत्पादन केन्द्रों को रेलमार्गो से जोड़ दिया जिससे बनजारा समूह के जीवन निर्वाह का मुख्य साधन समाप्त हो गया।
   (स) नमक उद्योग में बनजारों को रोजगार मिल गया।
   (द) नमक उद्योग से ब्रिटिश सरकार को कोई लाभ नहीं हुआ । (ब)

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

5. राजस्थान में अफीम की खेती मुख्यतः होती थी –

(अ) दक्षिणी –पश्चिमी राजस्थान में।

(ब) दक्षिणी –पूर्वी राजस्थान में।

(स) उत्तर –पूर्वी राजस्थान में।

(द) उत्तर –पश्चिमी राजस्थान में । (ब)

6. व्यावसायिक क्षेत्र में "मालवा अफीम" कहा जाता था –

(अ) मालवा में तैयार की जाने वाली अफीम को

(ब) हाड़ौती में तैयार की जाने वाली अफीम को

(स) ढूंढाड़ में उत्पन्न की जाने वाली अफीम को

(द) राजस्थान व मध्य भारत में तैयार की जाने वाली अफीम को (द)

7. अंग्रेजों द्वारा अफीम व्यापार को नियन्त्रित करने का मुख्य परिणाम यह निकला कि –

(अ) किसानों ने अफीम की खेती बन्द कर दी ।

(ब) व्यापारी किसानों को उनकी उपज का कभी उचित मूल्य नहीं देता था।

(स) अफीम के स्थान पर अनाज की खेती अधिक होने लगी ।

(द) अनाज की खेती अधिक होने से मवेशियों को भी चारा मिलने लगा (ब)

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

What amount of compensation was paid to use ruler of Jodhpur after the conclusion salt treaty?

प्रश्न 8 **जोधपुर राज्य से की गई नमक सन्धि में अंग्रेजों ने राज्य को कितना मुआवजा दिया?**

उत्तर जोधपुर को नमक सन्धि के अनुसार 30,00,000/– रू0 मुआवजे के रूप में दिये।

What was the effect on the Rajput states as a result of salt treaty?

प्रश्न 9 **राजपूत राज्यों से की गई नमक सन्धियों का राज्यों पर क्या प्रभाव पड़ा ?**

उत्तर नमक ब्रिटिश एकाधिकार में आ गया। राजस्थान की जनता के लिए भी साधारण उपभोग की वस्तु नमक भी बहुत मंहगा हो गया । नमक क्षेत्रों को रेल मार्गो से जोड़ दिया –इससे बनजारा समूह व मजदूरों की रोजी–रोटी छिन गई। शोरे के उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाने से नमक के साथ सूती कपड़े, ऊन की रंगाई व चमड़े के उद्योग भी नष्ट हो गये।

Why East India Company applied the opium trade rule and what was the main purpose behind it?

प्रश्न 10 **ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए अफीम व्यापार नीति का मुख्य उद्देश्य क्या था ?**

उत्तर प्रारम्भ में कम्पनी की इस नीति का उद्देश्य अफीम की खेती को सीमित करके उसकी अधिक उपज को रोकना तथा नियंत्रित सामान्य अफीम की मात्रा को खरीदना ताकि चीन के बाजार में बंगाल की अफीम बिकती रहे। केवल अंग्रेजो द्वारा भेजी हुयी अफीम बिकती रहे बाकी सब पर प्रतिबन्ध लग जाए ।

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

निबन्धात्मक प्रश्न –

What happened when the British started controlling the opium trade? Give a critical reasoning?

प्रश्न 11 **अंग्रेजों द्वारा अफीम व्यापार को नियन्त्रित करने के क्या परिणाम निकले ? आलोचनात्मक विवेचना कीजिए ?**

उत्तर अफीम एजेंटो ने सारी अफीम खरीदना शुरू कर दिया परिणामस्वरूप खेती अधिक मात्रा में होने लगी । व्यापारी अधिक से अधिक अफीम खरीद कर व्यापार करने लगे । चीन अफीम का स्थाई बाजार था। वहाँ इतनी अधिक अफीम इकट्ठी हो गयी कि अफीम की कीमतों में गिरावट आ गई। फलस्वरूप अंग्रेजों को भारी घाटा उठाना पड़ा ।

अफीम नियन्त्रण – अंग्रेजों ने शुरू में अफीम पैदा न करने हेतु और सीमित खेती हेतु राजाओं से समझौता कर लिया । लेकिन बाजार नियन्त्रित होते ही स्वंय को नुकसान होने के कारण अफीम सन्धियों को समाप्त कर दिया, तथा अन्य तरीके से अफीम मुनाफा कमाने की योजना बनाई ।

अफीम बेचने के लिए आज्ञा पत्र व लाइसेन्स देना शुरू किया । अफीम की खेती व व्यापार से प्रतिबन्ध हटा दिये गये । अफीम की एक पेटी पर 175 रू0 पारगमन टैक्स लगाना शुरू किया ।धीरे–धीरे 200 प्रति पेटी पारगमन राशि वसूलने लगे।

<u>ब्रिटिश सरकार की आय का साधन</u> – अफीम ब्रिटिश सरकार की आय का अच्छा स्रोत बन गया । 1989–90 में पारगमन कर से सरकार को 1,86,825/– रू0 की आय हुई। ये सरकारी आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया ।

<u>चीन का रवैया</u> :– चीन ने पहले अपने यहां अफीम की खेती की मना कर दी तो भारतीय बाजारों से अफीम की तस्करी होने लगी । भारतीय कृषक अनाज की खेती को छोड़कर अधिक मात्रा में अफीम की खेती करने लगे , मौसमी अनाज पैदा करना कम हो गया । मवेशियों का चारा भी कम हो गया ।

लेकिन चीन को ये बात समझ में आ गई उसने स्वंय के देश में अफीम की खेती की स्वीकृति दे दी तथा अफीम पर आयात कर भी लगा दिया ।

दादा भाई नौरोजी का प्रयासः – उन्होनें 1880 ई0 में भारत सचिव को लिखा कि इंगलैण्ड में सरकार ने अफीम उत्पादन पर जहर का लेबिल लगाने के आदेश दे रखे है। वही यहां की जनता को अफीम की खेती के माध्यम से अंग्रेज भ्रष्ट व चरित्र हीन बना रहे है।

ब्रिटिश सरकार ने 1893 में रॉयल कमीशन की नियुक्ति की :– ब्रिटिश नुमाइन्दों ने झूठे गवाह और राजाओं को सिखा–बुझाकर ऐसी तस्वीर प्रस्तुत की । रिपोर्ट में अफीम की खेती को कम खर्च व अधिक लाभ वाली खेती बताया । इससे कोई ठोस निर्णय नहीं निकल सका।

हमारे रजवाड़ों के शासक अंग्रेजों के इस कदर गुलाम हो गये थे कि अपनी जनता की भलाई की बात तक भी नहीं सोच सके।

■■■

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

अध्याय–12

1857 Mutiny in Rajasthan

राजस्थान में 1857 ई0 का विप्लव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 1857 की क्रान्ति में राजस्थान के प्रमुख नायक रहे।

(अ) खुशहाल सिंह
(ब) तात्यां टोपे
(स) कुंवर सिंह
(द) नाना साहिब

(अ)

2. ठाकुर खुशहाल सिंह ने क्रान्ति की शुरूआत किस स्थान से की ?

(अ) निम्बाहेड़ा
(ब) आहुवा
(स) नसीराबाद
(द) कोटा (ब)

3. नसीराबाद छावनी में विद्रोह कब शुरू हुआ –

(अ) 20 जनवरी 1888
(ब) 14 मई 1857
(स) 28 मई 1857
(द) 20 जून 1857

(स)

4. जयपुर में कप्तान ब्लैक की हत्या का कारण बताया जाता है –

(अ) कप्तान ने कर्मचारियों को जेल में ठूंस दिया
(ब) कप्तान ब्लैक का भ्रष्टाचारी होना ।
(स) जयपुर राज्य प्रशासन में अंग्रेजो का बढ़ता हुआ हस्तक्षेप
(द) ब्लैक की नादिरशाही (स)

5. जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह से उसके अनेक सामन्त नाराज थे, क्यों कि–

(अ) तख्त सिंह ने मारवाड़ के लोगों की उपेक्षा कर गुजरातियों को उंचे पद दिये।
(ब) सामन्तों को जेल में ठूंस दिया।
(स) सामन्तों की न्यायोचित मांगे नही मानी ।
(द) सामन्तों की हत्या करवाई (अ)

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

6. **कोटा में कौनसा अंग्रेज अधिकारी था जो क्रान्तिकारियों द्वारा मार डाला गया ?**
(अ) लारेन्स
(ब) स्मिथ
(स) हेनरी
(द) मेजर बर्टन

(द)

7. **किसने अंग्रेज अधिकारी शावर्स को शाहपुरा पंहुचने पर कोई सहायता नहीं दी –**
(अ) खुशाल सिंह ने
(ब) शाहपुरा के शासक ने
(स) बनेड़ा शासक ने
(द) केसरी सिंह ने

(द)

8. **राजस्थान में विप्लव के समय यहां का ए.जी.जी. था –**
(अ) कप्तान ढलेक
(ब) हेनरी लारेन्स
(स) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स
(द) कप्तान शावर्स

(स)

9. **मारवाड़ के जिस प्रसिद्ध कवि ने शासकों की ब्रिटिश शक्ति को धिक्कारा था वह था–**
(अ) सूर्यमल मिश्रण
(ब) चन्द्रभान
(स) श्यामलदास
(द) बांकीदास

(ब)

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न</u> –

From where did the 1857 mutiny begin in Rajasthan?

प्रश्न 10 राजस्थान में 1857 की क्रान्ति का सूत्रपात कहां से हुआ ?

उत्तर – राजस्थान में 1857 की क्रान्ति का सूत्रपात नसीराबाद से प्रारम्भ हुआ । वहॉ के सैनिक बगावत के लिए उत्सुक थे।

How many contonemants were there in Rajasthan before the 1857 mutiny?

प्रश्न 11 1857 के विप्लव से पूर्व राजपूताना में कितनी छावनियाँ थीं –

उत्तर – राजपूताना में 6 ब्रिटिश सैनिक छावनियाँ थीं। अजमेर से 10 कि.मी दूरी पर नसीराबाद छावनी, नसीराबाद से 120 मील की दूरी पर नीमच छावनी, नसीराबाद से 60 कि.मी. दूरी पर देवली छावनी, अजमेर से 100 कि.मी. दूर एरिनपुरा छावनी, उदयपुर से 50 मील दूर खैरवाड़ा छावनी, अजमेर से 35 कि.मी. दूर ब्यावर छावनी स्थित थी।

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

What was the immediate cause of 1857 sepoy mutiny?

प्रश्न 12 1857 की क्रान्ति का तात्कालिक कारण क्या था ?

उत्तर – राइफल में एक विशेष प्रकार का कारतूस प्रयोग करना होता था। राइफल में डालने से पूर्व इसकी टोपी को मुँह से काटना पड़ता था। इसको चिकना करने के लिए गाय व सूअर की चर्बी काम में ली जाती थी।

26 फरवरी 1857 को बरहामपुरा छावनी के सैनिकों ने इन कारतूसों को प्रयोग करने से इनकार कर दिया। उस सैनिक टुकड़ी को भंग कर दिया गया । अन्य टुकड़ियों में असन्तोष फैल गया। बैरकपुर छावनी के मंगल पाण्डे ने ब्रिटिश अधिकारियों पर गोली चला दी। एक अधिकारी मारा गया। मंगल पाण्डे को मौत की सजा दी गई, यही क्रान्ति का तात्कालिक कारण रहा ।

What was the chief cause of mutiny of Nasirabad?

प्रश्न 13 नसीराबाद में क्रान्ति की शुरूआत का मुख्य कारण क्या था ?

उत्तर – अंग्रेज अधिकारियों ने सैनिक केन्द्र की रक्षा के लिए छावनी में फर्स्ट लांसर्स के सैनिकों से जिन्हें वफादार समझा जाता था– उनसें बारूद, गोले भरी हुई तोपों के पहरा दिलवाना शुरू किया। नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने समझा ये बारूद व तोपें सैनिकों को कुचलने के लिए है। अतः इससे उनमें विद्रोह की भावना जाग्रत हो गई। उधर बैरकपुर व बुरहानपुर की घटना ने उन्हें प्रेरित किया जो क्रान्ति का कारण बनी।

How did 1857 mutiny take place in Jodhpur?

प्रश्न 14 जोधपुर में 1857 की क्रान्ति का सूत्रपात कैसे हुआ?

उत्तर – तख्त सिंह ने सामन्तों से 'रेख', 'चाकरी', हुक्मनामें की राशि, नजराना ज्यादा से ज्यादा मांगना शुरू कर दिया। सामन्तों ने देने से इन्कार किया तो तख्त सिंह ने सामन्तों की उपेक्षा कर गुजरात के लोगों को ऊंचे –ऊंचे पद दे दिए। अतः सामन्त नाराज थे। उसी समय जोधपुर लीजन की सैनिक टुकड़ी जो आबू गई थी ने विद्रोह कर दिया। नाराज सामन्त व आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह को विद्रोहियों का सहयोग मिला क्यों कि वे सभी तख्तसिंह व अंग्रेजों से नाराज थे, इसलिए वे भी विद्रोह में शामिल हो गये।

What was the chief cause of mutiny in Kota(1857) ?

प्रश्न 15 कोटा में 1857 की क्रान्ति का प्रमुख कारण क्या रहा ?

उत्तर कोटा के मेजर बर्टन ने कोटा महाराव को उनके अधीन जयदयाल, रतनलाल व जियालाल को उद्दण्डी करार देते हुए उन्हें सौपने के लिए कहा, महाराव के ऐसा न करने पर बर्टन ने ऊपर के अधिकारियों को लिखा कि लगता है महाराव भी क्रान्तिकारियों से मिला हुआ है। इससे सैनिक क्रोधित हो गये और उन्होने मेजर बर्टन से बदला लेने का निश्चय कर क्रान्ति आरम्भ कर दी।

GURUKPO.com No.1 Educational Web Portal in India

निबन्धात्मक प्रश्न –

Mention the role of Thakur Kushal singh in the mutiny of 1857.

प्रश्न 16 **1857 की क्रान्ति में आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह की भूमिका बताइये।**

उत्तर नसीराबाद में हुए विप्लव की सूचना मिलते ही जोधपुर सेना की जो टुकड़ी अभ्यास के लिए जोधपुर से आबू गई हुई थी उस सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया उन्हें वहाँ विशेष सफलता नहीं मिली । यहाँ से जोधपुर की ये सैनिक टुकड़ी एरिनपुरा पहुँची जहाँ जोधपुर के सभी सैनिक विद्राहियों से मिल गये । और वे एरिनपुरा लूटकर पाली की ओर बढ़े। आऊवा ठाकुर कुशाल सिंह ने इन सैनिक विद्रोहियों को अपनी सेवा में ले लिया । जोधपुर –ब्रिटिश रेजीडेन्ट व जोधपुर राज्य की कुशाल सिंह से पहले से ही नाराजगी थी । जोधपुर की सैनिक टुकड़ी को भी ठाकुर कुशाल सिंह आऊवा ले गया।

आसोपा के ठाकुर शिव सिंह, गूलर के ठाकुर बिशन सिंह आलणिया वास के ठाकुर अजीतसिंह तथा रूपनगर, सलूम्बर, ल्हसाणी के सामन्त भी कुशाल सिंह की सहायता के लिए आऊवा पहुँच गये। इस पर जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने सिघंवी कुशलराज के नेतृत्व में एक फौज आऊवा की ओर भेजी। 12वीं रेजीडेन्ट का अंग्रेज अधिकारी हीथकोट भी इस सेना में सम्मिलित था।

आऊवा से 3 कि0मी0 बिठोड़ा में हीथकोट पराजित हुआ । तत्पश्चात् ए.जी.जी. लारेन्स एक सेना लेकर आऊवा पहुंचा। उसे भी अपमानजनक पराजय देखनी पड़ी, संघर्ष के मध्य जोधपुर का ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेन्ट कप्तान मॉकमेसन कुछ सैनिकों के साथ वहां आया।

विप्लवकारियों ने मॉकमेसन की हत्या कर किले के दरवाजे के सामने उल्टा लटका दिया।

लेकिन इसके बाद जोधपुर के विप्लवकारी सैनिक कुशाल सिंह को छोड़कर पीपाड़ नारनौल होते हुए चले गये।

गूलर के ठाकुर, आलणियावास के ठाकुर, आसोपा के ठाकुर विप्लवकारियों के साथ गये किन्तु आसोप पर राजकीय फौजो के आक्रमण की सूचना मिलते ही ठाकुर शिवनाथ सिंह आसोप लौट गये। आसोपा के ठाकुर ने राजकीय फौजो के सामने समर्पण कर दिया। उन्हें जोधपुर की जेल में डाल दिया गया। गुलर, आलणिया आसोप की जागीर को जब्त कर लिया गया। मेवाड़ के देवगढ़ मे ठाकुर कुशाल सिहं ने शरण ली। मेवाड़ के देवगढ़ के रावत रणजीत सिंह ने ठाकुर कुशाल सिंह को ब्रिटिश अधिकारियों को सौप दिया। आऊवा की पराजय का बदला लेने के लिए लार्ड जॉर्ज लारेन्स ने डीसा और नसीराबाद के लगभग 1800 सैनिकों को बिग्रेडियर होम्स के नेतृत्व में आऊवा की ओर भेजी – जिसका नेतृत्व जोशी हंसराज कर रहा था। कुशाल सिंह भी ब्रिटिश नियत्रंण से बचकर आऊवा पहुंचा– आऊवा व डीसा व नसीराबाद के सैनिकों के मध्य घमासान युद्ध हुआ । युद्ध में जीत की आशा न होने पर ठाकुर कुशाल सिंह अपने छोटे भाई लाम्बिया ठाकुर को, किले का भार सौंपकर रात को बच निकला व मेवाड़ से सलूम्बर की ओर चला गया।

अंग्रेजों ने आऊवा किलेदार को रिश्वत देकर किले का दरवाजा खुलवा लिया। आऊवा के मन्दिर की मूर्तियों को ध्वस्त किया, बारूद व तोपों से किले को ध्वस्त किया। आऊवा निवासियों पर निर्मम अत्याचार किये।

Gurukpo.com
No 1 Educational Web Portal in India

Write the causes of 1857 mutiny?

प्रश्न 17 1857 के विप्लव के परिणामों की विवेचना कीजिए ।

उत्तर मुगल बादशाह बहादुरशाह को दण्डित किया गया– बादशाह, बेगम जीनत महल और उसके पुत्र को बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया गया।

लखनऊ पर अधिकार – मार्च 1858 में अंग्रेजों ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी सेना अनुशासित व अनुभवी थी।

तात्या टोपे का संघर्ष –तात्या टोपे ने संघर्ष जारी रखा, उसे पकड़कर फांसी लगा दी गई।

अंग्रेजों के विरूद्ध व्यापक रोष – सम्पूर्ण राजस्थान मे अंग्रेजो के खिलाफ व्यापक रोष था लेकिन नसीराबाद में जनता ने विप्लवकारियों का साथ देर से दिया।

देशी राजाओं की अदूरदर्शिता – देशी राजा अवसरवादी व स्वार्थी थे । वे भारतीय सैनिक व विप्लवकारियों के विरूद्ध रहे । उन्हें सामन्तों का भय अधिक था। सामन्त भी शासकों द्वारा वसूल किये जाने वाले अनेकों कर वसूली से परेशान थे। ब्रिटिश सत्ता के प्रति भी उनकी वफादारी अनिश्चित ही रही । जोधपुर महाराजा ने विप्लव दबाने के लिए अंग्रेजों का साथ दिया।

उदयपुर महाराणा की भूमिका – कुछ राजपूत शासकों व ठाकुरों ने उदयपुर महाराणा से सम्पर्क किया उन्होनें विप्लवकारियों की मदद के बजाय उन शासकों के सारे पत्र अंग्रेज अधिकारियों को सौप दिए। जिसमें उन्होनें सहायता की मांग की थी।

बूढ़े बादशाह बहादुरशाह का कमजोर नेतृत्व – विप्लवकारी बहादुरशाह को क्रान्ति का नेतृत्व सौंपने बाद सहायता भी करना चाहते थे किन्तु बहादुरशाह विप्लवकारियों के नारनौल पहुॅचे से पहले ही अंग्रेजी सेनाओं से हार गया।

विप्लवकारियों में रणकौशल का अभाव :– अंग्रेजों के पास बारूद, आधुनिक हथियार व तोपें थीं उनकी सेना अनुशासित थी तथा देशी बड़े राजा अंग्रेजों का साथ दे रहे थे शेष बड़े व छोटे सामन्त अंग्रेजों से मोर्चा ले रहे थे वे वीर तो थे लेकिन उनके पास युद्ध सामग्री, अनुशासन व रण कौशल का अभाव था। यद्यपि उनमें त्याग व बलिदान की भावना तो थी लेकिन उसका सार्थक फल उन्हें नहीं मिल पाया।

सामन्त वर्ग और विप्लव :– ब्रिटिश सत्ता का खुले रूप में विरोध करने वाला तत्व सामन्त वर्ग था, उन्हें शासक वर्ग को नकद रूपया देने को विवश किया जाता था। अंग्रेजों ने सामन्तों के न्यायिक अधिकारों को सीमित कर दिया । जबकि बड़े देशी राजाओं व अंग्रेजों के लिए बलवर्धक साबित हुए। ये बात स्पष्ट रूप से सामने आ गई। 1857 की क्रान्ति सैनिकों व सामन्तों का मिला–जुला विप्लव था।

कम्पनी के शासन का अन्त :– ब्रिटिश सरकार ने कम्पनी के शासन को समाप्त कर देशी राज्यों के शासन को ब्रिटिश सरकार ने सीधे अपने नियत्रंण में ले लिया।

1858 में सुधार एक्ट लागू किया गया तथा ब्रिटेन स्थित अंग्रेजी सरकार ने किसी भी देशी राज्य को अंग्रेजी राज्य में न मिलाने का आश्वासन दिया।

राजस्थान के भावी नरेश और सरदारों को विद्याबुद्धि तर्क, शिक्षा, रहन–सहन तथा आचार–विचार से अंग्रेज बनाने का प्रयास किया गया।

नये अंग्रेजी कायदे–कानूनों ने सेठ–साहूकारों को जागीरदारों के प्रभाव से मुक्त होने में सहायता दी ।

जागीरदार व सामन्तों के लिए सेना रखना मुश्किल हो जाने के कारण सैनिक दस्ते भंग करने पड़े।

विप्लव काल में अंग्रेजो को सेनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

अतः जयपुर, अजमेर से नीमच, डीसा शहर व छावनियों को जोड़ने वाली सड़कों के निर्माण का कार्य शुरू हुआ । जो 1875 में पूरा हुआ।

मध्यम वर्ग का उदय – विप्लव के बाद राजस्थान के सामाजिक ढांचे मे परिवर्तन आया – आधुनिक शिक्षा के प्रसार से 'नये मध्यम वर्ग' का अभ्युदय हुआ– तथा ब्राह्मण व राजपूतों का महत्व कम हो गया।

Write a brief outline of 1857 mutiny in Rajasthan?

प्रश्न 18 **राजस्थान में 1857 ई0 के विप्लव के स्वरूप की समीक्षा कीजिए ।**

उत्तर विप्लव के स्वरूप पर विद्वान एक मत नहीं है। अधिकाशं अंग्रेजी इतिहासकारों व लेखकों ने इसे सैनिक विद्रोह कहा है। जिसमें कुछ सामन्त और जागीरदार भी जुड़ गये थे।

इतिहासकार मेलीसन ने लिखा है कि जिन जागीरदारों ने विप्लव में भाग लिया। उनका झगड़ा उनके शासकों से था– ब्रिटिश सरकार से उनका कोई लेना –देना नही था। लेकिन ये कथन समग्र रूप से स्वीकार नही किया जा सकता है। क्योंकि राजाओं से टैक्स किसी न किसी रूप में ब्रिटिश रेजीडेन्ट इकट्ठा कर लिया करते थे। जोधपुर के जिन सामन्तों ने विप्लव में भाग लिया वे जोधपुर नरेश तख्त सिंह से बहुत नाराज थे।

■■■

GurukPO.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–13

Peasant and Tribal movement in Rajasthan

राजस्थान में कृषक एवं जनजाति आन्दोलन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. **जो भूमि सीधे शासक के नियंत्रण में होती थी वह कहलाती थी।**
(अ) जागीर
(ब) बंजर
(स) खालसा
(द) पीवण
(स)

2. **किसानों से जो भूमि कर नकद रकम के रूप में लिया जाता था उसे कहते थे –**
(अ) लगान
(ब) बिगोडी
(स) भोम
(द) मुद्रा
(ब)

3. **किसानों का सर्वाधिक शोषण करने वाले थे –**
(अ) राजा
(ब) सामन्त
(स) महाजन
(द) व्यापारी
(ब)

4. **बिजौलिया के किसान आन्दोलन की रूपरेखा तय करने के लिए सर्वप्रथम किसान एक स्थान पर एकत्रित हुए वह स्थान था –**
(अ) गोविन्दपुरा
(ब) गिरधारीपुरा
(स) मुरलीपुरा
(द) ऊपरमाल (ब)

5. **1920 में विजयसिंह पथिक ने वर्धा में जिस संस्था की स्थापना की वह थी–**
(अ) विश्व प्रचारिणी सभा
(ब) प्रताप किसान सभा
(स) क्रान्तिकारी जन सभा
(द) राजस्थान सेवा संघ
(द)

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

6. **राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के विरूद्ध जिस किसान आन्दोलन ने जनमत तैयार किया था वह था –**

(अ) सीकर का किसान आन्दोलन
(ब) बिजौलिया किसान आन्दोलन
(स) शेखावटी किसान आन्दोलन
(द) डाबला किसान आन्दोलन

(ब)

7. **गोविन्दगुरू ने भीलों को संगठित करने के लिए जिस संस्था की स्थापना की वह थी**

(अ) भील हितकारिणी सभा
(ब) भील समुदाय संघ
(स) सम्प सभा
(द) भगत पंथ

(ब)

8. **राजस्थान में सबसे पहले होने वाला कृषक आन्दोलन कौनसा था ?**

(अ) बिजौलिया कृषक आन्दोलन
(ब) मारवाड़ कृषक आन्दोलन
(स) अलवर कृषक आन्दोलन
(द) बेर कृषक आन्दोलन

(अ)

9. **वह किसान आन्दोलन जिसकी गूंज इंगलैण्ड के हाउस ऑफ कॉमन्स में सुनाई दी वह था**

(अ) बेगू का किसान आन्दोलन
(ब) बेगू किसान आन्दोलन
(स) अलवर किसान आन्दोलन
(द) सीकर किसान आन्दोलन

(द)

10. **मानगढ़ हत्याकाण्ड किससे सम्बन्धित है–**

(अ) गोपाल सिंह
(ब) मांगीलाल
(स) रामनारायण चौधरी
(द) गुरू गोविन्द

(द)

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न–</u>

What do you mean by Akki Movement?

11. **एक्की आन्दोलन क्या था ?**

उत्तर एक्की आन्दोलन के प्रणेता मोतीलाल तेजावत थे । मोतीलाल तेजावत ने भीलो को लगान व बेगार देने के लिए मना किया। ये आन्दोलन मेवाड़ क्षेत्र के जवास के बाद कोलियारी, झाड़ौल और भादड़ी पट्टों में भी फैल गया। 19 अगस्त 1921 ई0 को झाड़ौल के मोतीलाल तेजावत को गिरफ्तार कर लिया। किन्तु विभिन्न क्षेत्र के लगभग 7000 भीलों ने उसे छुड़वा लिया।

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

What reforms among Bhils were made & by whom ?

12. भीलों में समाज सुधार के लिए किसने और क्या प्रयत्न किये ?

उत्तर राजस्थान के दक्षिण का क्षेत्र भोभट कहलाता है। भील मुख्यतयाः मेवाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, कुशलगढ़ आदि रियासतों में रहते थे। आर्थिक दृष्टि से ये बहुत ही पिछड़ा वर्ग है। और इनके आर्थिक संसाधन भी बहुत कम है। 19वीं शताब्दी में इनमें कुरीतियाँ समाप्त होना शुरू हुआ । भीलों में सुर्त्री भगत और गोविन्द गुरू नामक समाज सुधारक हुए। गोविन्द गुरू ने बासिया ग्राम में 'धुनी और निशान' स्थापित किया और भीलो को आध्यात्मिक शिक्षा देनी प्रारम्भ की। भीलो को हिन्दु धर्म के दायरे में रखने के लिए 'भगत पंथ' की स्थापना की। गुरू ने धार्मिक ही नहीं राजनैतिक व आर्थिक जागृति भी पैदा की। क्यों कि देशी राजा तो अंग्रेज के गुलाम हो गये थे और वे इस ओर ध्यान नही दे पा रहे थे ।

What was the profession of Bhills in the begining?

13. प्रारम्भ में भीलों का पेशा क्या था ?

उत्तर प्रकृति से भील एक स्वतन्त्र व युद्धप्रिय जाति है। प्रारम्भ में ये तीर, कमान बनाते थे। जंगली जानवरों का शिकार करना, गोंद इकठ्ठा करना, मछली पकड़ना, फल–शहद, जड़ी–बुटियाँ इकठ्ठा करना इनका पेशा था । बाद में ये जंगल जलाकर खेती करने लगे थे। राजपूत इन्हें मूल रूप से यहीं का निवासी मानते हैं। भोभर के भीलों ने महाराणा को अविस्मरणीय सेवाएं दी। यही कारण था कि मेवाड़ के '' राज्यचिन्ह में राजपूत के साथ धनुर्धारी भील का चित्र भी है।

What did Motilal Tejawat do for Bhil Movement ?

14. मोतीलाल तेजावत ने भील आन्दोलन के लिए क्या किया ?

उत्तर मेवाड़ के महाराणा ने खालसा क्षेत्र के भीलों की आय के स्रोतो को कम करना शुरू कर दिया। 1917 में भील व गरासियों ने मिलकर महाराणा को एक विरोध पत्र दिया और अत्यधिक लागत, बेगार, कामदारो के शोषण के विरूद्ध शिकायत की थी, मोतीलाल तेजावत ने खालसा क्षेत्र के भीलो को झाड़ौल, कोलियारी, मगरा क्षेत्र व भादड़ी जागीर के भीलों को लगान देने से इन्कार करने का कहा। जुलाई 1921 ई0 के प्रथम सप्ताह में महाराणा ने भी खालसा क्षेत्र के भीलों को कुछ सुविधाएं प्रदान की इसलिए खालसा जमीनी क्षेत्र में आन्दोलन नहीं हुआ। 19 अगस्त 1921 को झाड़ौल के जागीरदार ने मोतीलाल तेजावत को गिरफ्तार कर लिया। किन्तु विभिन्न क्षेत्र के 7000 भीलों ने उसे छुड़वा लिया। मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में यह आन्दोलन सिरोही व गुजरात के भीलों में भी फैल गया। तेजावत को 20 वर्ष की सख्त कैद दी गई । राजद्रोह का आरोप भी लगाया गया, बाद में ये सजा 10 वर्ष कर दी गई । उन्होनें किसानों में जागृति पैदा की।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न –</u>

Write the causes behind the farmer movement in Rajasthan ?

15. राजस्थान में किसान आन्दोलन के क्या कारण थे ?

उत्तर युद्ध काल में, युद्धोपरान्त भी विकास कार्यो हेतु राज्यकर को चुकाने के लिए किसानों से लागतें वसूल की जाती थी।

<u>किसानो से ली जाने वाली बेगार</u> :– नाई, धोबी, कुम्हार, खाती व लुहार आदि को किसान वर्ष में निश्चित अनाज देता था और वे वर्ष भर उनकी सेवा करते थे । जागीर व खालसा क्षेत्र में इन्हें कुछ जमीन दे दी जाती थी फिर उसपर कोई लगान भी नहीं लिया जाता था लेकिन कालान्तर में लगान भी लिया जाने लगा और बेगार भी ली जाने लगी ।

GurukPO.com No 1 Educational Web Portal in India

इससे किसानो मे रोष फैला व इसके खिलाफ किसान आन्दोलन हुए। किलेदार, नाई, ढोली चमार, मेहतर ''राखी की .लाग'', ''नवरात्रा पूजा का घी'' आदि के नाम पर किसानों से बहुत कुछ वसूला जाता था।

किसानों की स्थिति में परिवर्तन :— अनाज व सामान के स्थान पर अब किसानों से रोकड़ लिया जाने लगा। बाद में किसानों की ज्यादा जरूरत न रहने से रैय्यत व किसानों के मध्य आन्दोलन को जन्म मिला ।

पाश्चात्यकरण की अंधी दौड़ में शामिल विलासी हुए राजा व सामन्त विलासी हो गये। शराब, खानपान, आधुनिक वेशभूषा का प्रचलन बढ़ गया। राजा व सामन्तों ने अपने महलों को भी पश्चिमी शैली के बनवाना शुरू कर दिया।

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसानों पर नित नये कर राजा व सामन्तों द्वारा लगाये जाने लगे । किसानों के नित नये शोषण से किसान तंग हो गये जो आन्दोलन का कारण बना।

अमानवीय व्यवहार :— किसानों का आर्थिक शोषण तो किया ही जाता था लेकिन इसी के साथ किसानों को पीटना, अभद्र व्यवहार आम बात थी।

उदाहरणार्थ — जयपुर राज्य में शेखावाटी के ठाकुर ने जब नई मोटर कार खरीदी तो ''मोटरलाग'' नाम से किसानों से पैसा वसूला। 30 प्रकार की लागत तो पहले से ही थी। इस पर और कर लगने से किसानों का नाराज होना वाजिब था।

जागीर क्षेत्र के किसानों से खालसा क्षेत्र के किसान (शासक क्षेत्र के किसान) अधिक सुखी थे क्यों कि वे बेगार लागतों से मुक्त थे तथा उनकी लगान की मात्रा निश्चित थी। 19वी शताब्दी के मध्य तक सामन्तों और प्रमुख शासकों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध मधुर थे उनमें अपनत्व था । फिर ये रिश्ते जटिल, तनावपूर्ण हो गये। और इससे किसान आन्दोलन को जन्म मिला।

■■■

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–14

The rise of nationality of Praja mandals and Independence Movement
राजस्थान में राष्ट्रीयता का उद्भव, प्रजामण्डलों की स्थापना और स्वाधीनता आन्दोलन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. **राजस्थान में हुए किसान आन्दोलनों ने –**
(अ) प्रचलित सामन्ती व्यवस्था का समर्थन किया।
(ब) प्रचलित सामन्तीय व्यवस्था की बुराईयों को उजागर किया।
(स) सामन्तों की स्थिति को सुदृढ़ बनाया।
(द) सामन्त पद्धति को एक नई दिशा प्रदान की।
(ब)

2. **विजय सिंह पथिक ने 1920 ई0 में जिस समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया उसका नाम था –**
(अ) नवीन राजस्थान
(ब) राजस्थान केसरी
(स) तरूण राजस्थान
(द) लोकवाणी
(ब)

3. **1919 ई0 में 'राजस्थान सेवा संघ' स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य था –**
(अ) अंग्रेजो के प्रति निष्ठा का भाव भरना ।
(ब) जागीरदारों के हितो का समर्थन करना।
(स) जागीरदारों और उनकी रैय्यत के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों का विकास करना।
(द) शासकों के हितों की रक्षा करना।
(स)

4. **जयपुर में 'वर्धमान विद्यालय' की स्थापना करने वाला व्यक्ति था।**
(अ) विजय सिंह 'पथिक'
(ब) अर्जुन लाल सेठी
(स) टीकाराम पालीवाल
(द) पंडित हीरालाल शास्त्री (ब)

5. **'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' का मुख्य उद्देश्य था –**
(अ) शासकों के सम्मान, प्रतिष्ठा और अधिकारों की रक्षा करना।
(ब) शासकों के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
(स) राज्यों में राष्ट्रीय कांग्रेस के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना।
(द) देशी राज्यों के शासकों के निरकुंश अधिकारों का समर्थन करना। (ब)

GuruKPO.com No 1 Educational Web Portal in India

6. कोटा में जनजागृति का श्रेय किसे है –

(अ) माणिक्य लाल वर्मा
(ब) हीरालाल शास्त्री
(स) नयनू राम शर्मा
(द) अभिन्न हरि

(स)

7. बिजोलिया किसान आन्दोलन के प्रमुख सर्वोपरि नेता थे –

(अ) अर्जुनलाल सेठी
(ब) विजय सिंह पथिक
(स) माणिक्य लाल वर्मा
(द) श्यामलाल

(ब)

8. उदयपुर में प्रजामण्डल की स्थापना का श्रेय किसे है –

(अ) भूरेलाल बया
(ब) माणिक्य लाल वर्मा
(स) रमेशचन्द्र
(द) बलवन्त सिंह मेहता

(ब)

9. डूंगरपुर प्रजामण्डल की स्थापना कब हुई –

(अ) 1945
(ब) 1943
(स) 1947
(द) 1944

(ब)

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

What were the hurdles in the struggle of independency of Rajasthan?

प्रश्न 10 राजस्थान के स्वाधीनता संघर्ष में कौनसी बाधाएं थीं ?

उत्तर राजस्थान की जनता को दोहरी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। एक और निरंकुश सत्ता के अधीन जनता पिस रही थी। ब्रिटिश सरकार शासकों की निरंकुश सत्ता को बनाये रखने के लिए, जनता के संवैधानिक अधिकारों की उपेक्षा कर रही थी। राजा व जनता का आत्मिक सम्बन्ध न होने से ब्रिटिश हुकुमत ज्यादा हावी थी जो स्वाधीनता के मार्ग में बड़ी बाधा थी।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

What was the objective in the establishment of Praja Mandal in Rajasthan? Who was credited the most for its reorganisation?

प्रश्न 11 **राजस्थान में प्रजामण्डलों की स्थापना किस उद्देश्य को लेकर की गई। इसके पुनर्गठन का श्रेय किसे है ?**

उत्तर सर्वप्रथम जोधपुर में 1931 ई0 में श्री कपूरचन्द पाटनी ने मारवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना की लेकिन आवश्यक जनसहयोग न मिलने के कारण ''मारवाड़ प्रजामण्डल'' निर्जीव सा रहा । लेकिन सेठ जमनालाल बजाज की प्रेरणा और पन्डित हीरालाल शास्त्री के प्रयत्न से जयपुर प्रजामण्डल का पुनर्गठन किया गया। तत्पश्चात् 1938 में मेवाड़ प्रजामण्डल (उदयपुर) , 1939 में 'भरतपुर प्रजामण्डल', 1940 में जैसलमेर प्रजामण्डल की स्थापना हुई फिर सिरोही व बीकानेर में भी प्रजामण्डलों की स्थापना हुई । राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् की स्थापना से राज्यों में भी इन प्रजामण्डलों में गति आई। इन प्रजामण्डलों के माध्यम से राजस्थान में स्वतन्त्रता प्राप्ति का सक्रिय प्रयास किया गया।

Evaluate the role of public movement done by Prajamandal-

प्रश्न 12 **राजस्थान में प्रजामण्डल के माध्यम से हुए जनआन्दोलन का मूल्यांकन किजिए –**

उत्तर राजस्थान की रियासती जनता राजनैतिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रही। एक और तो रियासती जनता को भारत की प्रमुख राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस का समर्थन नही मिल रहा था। दूसरी ओर कुटिल ब्रिटिश सरकार ने 1921 ई0 में नरेन्द्र मण्डल का गठन कर रियासती जनता पर निरंकुश शासन को केवल कठोर ही नहीं किया बल्कि रियासतों के आन्दोलन को कमजोर करने का भी प्रयास किया। नरेन्द्र मण्डल की बैठकों में आन्दोलनों की चर्चा तक नहीं होती थी।

1927 ई0 में राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद' की स्थापना के फलस्वरूप रियासतों के राजनैतिक कार्यकर्ता व देशभक्तों को एक ऐसा मंच मिला जहाँ से वे अपनी बात कहकर व जनता में राजनैतिक चेतना उत्पन्न कर सकते थे।

1938 ई0 में हरिपुरा कांग्रेस के प्रस्ताव ने प्रत्येक राज्य में जन आन्दोलनों का उत्तरदायित्व स्थानीय नेतृत्व पर डालकर दूरदर्शिता का परिचय दिया। इससे नेतृत्व को बल मिला– नेता व आम जनता सक्रिय हुई। राजस्थान के विभिन्न राज्यों में अलग–अलग प्रजामण्डलों की स्थापना हुई – और इन प्रजामण्डलों ने अपने सीमित साधनों से राजाओं का निरंकुश सत्ता सहित ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया। राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम में शहीद बालमुकुन्द बिस्सा व शहीद सागरमल गोपा' के बलिदान आज भी हमारे लिए प्रेरणास्पद है।

Why was Pt. Heeralal Shastri made a distance from quit India movement in Jaipur ?

प्रश्न 13 **जयपुर में ''भारत छोड़ो आन्दोलन'' से पण्डित हीरालाल शास्त्री अलग क्यों रहे?**

उत्तर राजस्थान में जन आन्दोलनों के दौरान स्थानीय नेताओं में मतभेद भी उत्पन्न हुए, लेकिन आन्दोलन अपने उद्‌देश्य से कभी विचलित नहीं हुए। ''जयपुर प्रजामण्डल में'' भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान मतभेद उत्पन्न हो गये थे। ''पं0 हीरालाल शास्त्री के विरोधियों ने 'आजाद मोर्चा' नामक अलग संगठन बना लिया था लेकिन राष्ट्रीय नेताओं ने कभी स्थानीय नेताओं के मतभेदों को बढ़ावा नहीं दिया।

यही कारण है कुशल कुटनीति से सरदार पटेल राष्ट्रीय एकीकरण कर सके तथा राजस्थान की 22 रियासत तथा ब्रिटिश शासित क्षेत्र अजमेर–मेरवाड़ा को एक इकाई को रूप में संगठित कर सके।

निबन्धात्मक प्रश्न –

प्रश्न 14 Write the contributions of revolutions in spreading political conscusion.
राजस्थान में राजनैतिक चेतना फैलाने में क्रान्तिकारियों के योगदान की चर्चा कीजिए।

उत्तर कांग्रेस की भिक्षावृति से परेशान उग्रवादियों ने आजादी के लिए उग्रवाद का सहारा लिया। राजस्थान के क्रान्तिकारी श्याम श्रीकृष्ण वर्मा, दयानन्द सरस्वती आगे आए राजस्थान में क्रान्ति का शंख फूंकने व क्रान्ति के नेतृत्व का कार्य अर्जुनलाल सेठी, केसरी सिंह बारहठ, राव गोपाल सिंह खरवा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अर्जुनलाल सेठी – अर्जुनलाल सेठी का जन्म जयपुर के जैन परिवार में 1880 ई0 में हुआ, उन्होने अजमेर के जैन शिक्षा सोसायटी , जयपुर में वर्धमान विद्यालय और छात्रावास खोला। वर्धमान विद्यालय प्रत्यक्ष में तो धार्मिक विद्यालय था किन्तु यहां क्रान्तिकारियों को आजादी के प्रशिक्षण दिया जाता था।

वायसराय लॉर्ड हार्डिग्ज पर बम फैका गया। बम फेकने के कार्य को अर्जुनलाल सेठी के दिमाग की उपज बताया गया। अंग्रेजो के दबाव मे आकर जयपुर नरेश ने उन्हें 5 वर्ष की सख्त कारावास का दण्ड दिया। बाद में वे कांग्रेस से अलग हो गये और अजमेर में ख्वाजा शरीफ की दरगाह में गरीब मुस्लिम बच्चों को पढ़ाने का काम करने लगे। वही उनका देहान्त हो गया। उन्हें मुसलमान समझकर दफना दिया गया।

केसरी सिंह बारहठ (1872–1940)

केसरी सिंह बारहठ का जन्म 1872 ई0 में शाहपुरा (भीलवाड़ा) के पास देवपुरा गांव में हुआ। श्याम श्रीकृष्ण वर्मा, रासबिहारी बोस से उनका सम्पर्क हुआ। उन्होने कोटा में क्रान्तिकारी दल का गठन किया। जिसमे गुरूदत्त, लक्ष्मीनारायण, हीरालाल लहरी जैसे सदस्य थे।

बारहठ बंगाल की भौति गुप्त क्रान्तिकारी समितियां गठित करना चाहते थे इसके लिए उन्हें धन की आवश्यकता थी। जोधपुर के रामस्नेही महंत, प्यारेलाल की कोटा में हत्या कर दी गई।

सन्देह के आधार पर इन क्रान्तिकारियों को बन्दी बना दिया गया, बाद में इनकी सजा कमकर 5 वर्ष की कर दी गई। इनकी सम्पति जब्त कर ली गई।

केसरी सिंह के पुत्र प्रतापसिंह जो बनारस में पढने के लिए गये थे। उन्हें भी रेजीनॉल्ड क्रेडिक की बनारस में हत्या करने की योजना बनाने के आरोप 5 वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड एवं यातनाएं दी गई जेल में ही प्रतापसिंह की मृत्यु हो गयी।

राव गोपाल सिंह (1872–1939)

ये अजमेर के मेरवाड़ा में खरवा ठिकाने के ठाकुर थे और राजपूतों की सोच में अन्तर लाना चाहते थे। राव गोपाल सिंह को ''धर्म महामण्डल'' के शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में बंगाल जाने का अवसर मिला ।

इन्होने अजमेर के ब्राहम्ण व राजपूत जाति के विद्यार्थियों को अनेक छात्रवृत्ति देकर शिक्षा लेने हेतु प्रेरित किया। ब्यावर के उद्योगपति सेठ दामोदरदास राठी से आर्थिक सहायता लेकर अस्त्र–शस्त्र एकत्रित किये– प्रथम युद्ध के दौरान उन्होने शस्त्र क्रान्ति की योजना बनाई लेकिन भेद समय से पूर्व खुल जाने से उन्हें टॉडगढ़ में रहने का आदेश दिया लेकिन टॉडगढ़ से भाग जाने के कारण उन्हें 2 वर्ष की कारावास सजा देकर शाहजहॉपुर (उत्तरप्रदेश) भेज दिया गया। खरवा जागीर को जब्त कर लिया गया।

GURUKPO.com No. 1 Educational Web Portal in India

विचारों के आदान–प्रदान व समाचार–पत्रों का अभाव था इसलिए क्रान्तिकारियों को अपनी बात सही स्थानों पर पहुचांने से पूर्व ही अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता था।

Discuss the growth of political conscious in Rajasthan.

प्रश्न 15 राजस्थान में राजनैतिक चेतना फैलाने की चर्चा किजिए।

उत्तर 20 वीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों तक राजस्थान में राजस्थान में राजनैतिक जागृति फैल गई राजस्थान में राजनैतिक जागृति के प्रमुख कारण निम्नानुसार थे :–

किसान आन्दोलन :– हम पिछले अध्याय में जान चुके है कि किसान आन्दोलनों ने राज्य में प्रचलित बुराईयों को उजागर कर दिया था, और बेकार लेना, अत्यधिक टैक्स भार, अमानवीय व्यवहार, लाग, बेगार और शोषण के खिलाफ आवाज उठाने से प्रचलित राजनैतिक व्यवस्था की आलोचना व विरोध का मार्ग प्रशस्त हो गया।

अंग्रेजी शिक्षा का योगदान :– अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगो का प्रतिशत बहुत ही कम था किन्तु इन अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को ब्रिटिश रेजीडेन्ट उच्च पद दे देते थे। इससे राज्यों में असन्तोष व्याप्त हुआ। इसके अतिरिक्त शिक्षित वर्ग ने अंग्रेजो के स्वतन्त्रता व समानता की भावनाओं से परिपूर्ण अंग्रेजी साहित्य को पढ़ा । उनमें नयी चेतना जागृत हुई। इसीलिए इस वर्ग ने आगे चलकर रियासतों में उत्तरदायी शासन की व्यवस्था की मांग की।

समाचार पत्रों का योगदान :– राजस्थान के निरंकुश शासन के दोष समाचार पत्रों के माध्यम से प्रकाशित होने लगे।

1885 में 'राजपूताना गजट', 1885 में 'राजस्थान समाचार' प्रकाशित होने लगे। विजयसिंह पथिक ने 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन भी आरम्भ किया। इसी तरह 'प्रभात', 'नवज्योति' 'नवजीवन जयपुर समाचार पत्र । लोकवाणी अलवर पत्रिका में भी अंग्रेजी शोषण व अत्याचार की व्यापक चर्चा होने लगी। ये भावना राजनैतिक चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हुई।

क्रान्तिकारियों का योगदान :– राजस्थान के प्रमुख क्रान्तिकारी केसरीसिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी, राव गोपाल सिंह ने दयानन्द सरस्वती के विचारो से प्रभावित हो श्याम श्रीकृष्ण वर्मा से मिलकर क्रान्ति का शंख बजा दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव :– प्रथम विश्वयुद्ध में बड़े–बड़े रजवाड़ों से अनेक सैनिक प्रथम विश्वयुद्ध हेतु भेजे गये। यहां आकर उन्होने अपने–अपने अनुभव सुनाए। जिससे लोगो में राष्ट्रीय जागृति पैदा हुयी।

प्रवासी वर्ग का योगदान :– प्रवासी व्यापारी इस समय तक अंग्रेजो के भेदभाव पूर्ण रवैये से परिचित हो चुके थे। कलकत्ता–बम्बई के विकसित मारवाड़ियों ने राष्ट्रीय विचारधारा को प्रोत्साहित किया और उन्होनें राजनैतिक जागृति लाने के लिए धन खर्च करना शुरू किया। व्यापारियों ने अखिल भारतीय स्तर पर ''आल इण्डिया स्टेट पीपुल्स कॉन्फ्रेंस'' को तथा राज्यस्तर पर राजनैतिक कार्यकर्ताओं को आर्थिक सहायता दी। इनमे बीकानेर के खूबराम सर्राफ, सत्यनारायण सर्राफ, जोधपुर से आनन्दराज सुराणा, चांदमल सुराणा, भंवरलाल सर्राफ, जयपुर में टीकाराम पालीवाल गुलाबचन्द कासलीवाल के नाम उल्लेखनीय है।

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

विभिन्न संगठनों का योगदान :– जनजातियों ने अत्याचारों के खिलाफ गठित सम्पसभा, विजयसिंह पथिक की 'सेवासमिति' चांदमल सुराणा द्वारा निर्मित ''मारवाड़ हितकारिणी सभा'' 1919 में स्थापित 'राजस्थान सेवा संघ' स्थापित किये गये । इन संघों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य जनता के कष्टों का निवारण व ब्रिटिश सरकार व निरंकुश देशी राजाओं के खिलाफ आवाज बुलन्द करना था।

■■■

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय–15

Integration of Rajasthan states

राजस्थानी राज्यों का एकीकरण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. **एकीकृत राजस्थान के निर्माण में जो मत्स्य संघ का निर्माण किया गया उसमें शामिल थेः–**
(अ) जोधपुर, जयपुर, बीकानेर कोटा और अलवर
(ब) उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ और टोंक
(स) शाहपुरा, किशनगढ़, झालावाड़, जैसलमेर और करौली
(द) अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली (द)

2. **एकीकृत राजस्थान के निर्माण हेतु संयुक्त राजस्थान का निर्माण किया गया जिसका प्रधानमंत्री बनाया गया ।**
(अ) श्री जयनारायण व्यास को
(ब) श्री शोभाराम कुम्हावत को
(स) श्री मोहनलाल सुखाड़िया को
(द) प्रो0 गोकुल प्रसाद असावा को (द)

3. **वृहत राजस्थान के महाराज प्रमुख थे –**
(अ) सवाई मानसिंह
(ब) महाराजा हनुवन्त सिंह
(स) महाराणा भूपाल सिंह
(द) महाराव भीम सिंह (स)

4. **सिरोही का राजस्थान में विलय हुआ –**
(अ) 1948 ई0 में
(ब) 1949 ई0 में
(स) 1952 ई0 में
(द) 1956 ई0 में ((द)

5. **राजस्थान के एकीकरण में किसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही ।**
(अ) मोहनलाल सुखाड़िया
(ब) हीरालाल शास्त्री
(स) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(द) गोकुल भाई भट्ट (स)

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

6. **एकीकृत राजस्थान के निर्माण का कार्य कितने चरणों में पूरा किया गया ?**

(अ) दो चरण में
(ब) तीन चरण में
(स) चार चरण में
(द) पांच चरण में ((द)

लधुत्तरात्मक प्रश्न–

Which primary states of union of matsay were merged in integration Rajasthan?

7. **एकीकृत राजस्थान के निर्माण में मत्स्य संघ के कौन–कौनसे राज्य मिलाए गये ?**

उत्तर एकीकृत राजस्थान के निर्माण में मत्स्य संघ के भरतपुर, धौलपुर अलवर व करौली राज्यों को मिलाया गया ।

When was Ajmer merged in Rajasthan?

8. **राजस्थान में अजमेर का विलय कब हुआ ?**

उत्तर 1 नवम्बर 1956 ई0 को सिरोही के माउन्ट आबू वाले क्षेत्र के साथ अजमेर –मेरवाड़ा का भी राजस्थान में विलय किया।

How were Governors appointed for the first time in Rajasthan?

9. **राजस्थान में प्रथम बार राज्यपालों की नियुक्ति किस प्रकार की गई ?**

उत्तर 1 नवम्बर 1956 ई0 से प्रथम व द्वितीय श्रेणी राज्यों को समाप्त कर संसद ने संविधान के 7वें संशोधन द्वारा राजप्रमुखों का पद समाप्त कर सभी राज्यों में राज्यपाल की नियुक्ति को स्वीकृति दे दी ।

How did Sardar Patel achieve the herculean task of major merger of states in Rajasthan ?

10. **सरदार पटेल ने राजस्थान के एकीकरण के कठिन कार्य को किस प्रकार संपादित किया ?**

उत्तर सरदार पटेल ने अपनी चतुराई, बुद्धिमता और कुशल नीति से राजस्थानी शासकों की अनिच्छाओं पर जनमत के प्रभावशाली दबाव से राजस्थान के तपस्वी जननेताओं के अथक प्रयास व उनके सचिव मेनन के सहयोग से राजस्थान के एकीकरण के कार्य को संपादित किया ।

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

Name the princely states which were integrated in Greater Rajasthan ?

11. वृहत राजस्थान में कौन–कौनसी रियासतों को सम्मिलित किया गया ?

उत्तर काफी संघर्ष के बाद, 14 जनवरी 1949 को सरदार पटेल ने उदयपुर में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए वृहत् राजस्थान के निर्माण की घोषणा कर दी। इस घोषणानुसार जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर उदयपुर, टोंक, बूंदी, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा व झालावाड़ को मिलाकर वृहत राजस्थान का निर्माण किया।

निबन्धात्मक प्रश्न –

Mention various stages in the intergation of Rajasthan.

12. राजस्थान राज्यों के एकीकरण के विभिन्न सोपानों का वर्णन किजिए ।

उत्तर एकीकृत राजस्थान के निर्माण का कार्य पांच चरणों में पूरा किया गया ।

प्रथम चरण में मत्स्य संघ का निर्माण किया गया । प्रथम चरण में अलवर, भरतपुर धौलपुर व करौली को शामिल किया गया, लेकिन एकीकरण का ये कार्य इतना आसान नहीं था क्योंकि 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता के साथ ही देश का विभाजन हो गया । एक बार सभी रजवाड़े पहले की ही भांति छोटी–छोटी यूनिटों में अंग्रेजों द्वारा स्वतन्त्र कर दिये गये ।

अलवर, भरतपुर की रियासतों में भी दंगे भड़क गये । इन दंगों में अलवर महाराजा तेजसिंह व वहां के दीवान खरे का नाम बार [2] आ रहा था। साम्प्रदायिक दंगों का खतरा बढ़ रहा था । अतः 27 फरवरी 1948 ई0 को चारों रियासतों को मिलाकर संघ बनाने का प्रस्ताव रखा। माणिक्य लाल मुंशी व कन्हैयालाल के आग्रह पर इन चारों रजवाड़ों को मिलाकर इसका नाम ' मत्स्य संघ' रख दिया गया । क्योंकि महाभारतकाल में भी इस क्षेत्र को मत्स्य संघ के नाम से जाना जाता रहा था।

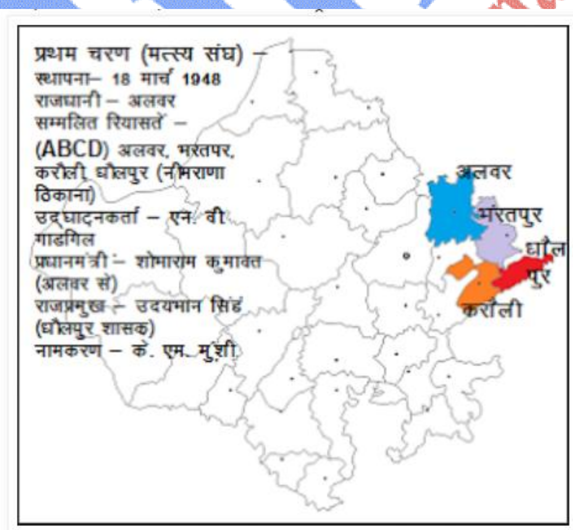

1. प्रथम चरण (मत्स्य संघ) :-

स्थापना- 18 मार्च 1948

राजधानी – अलवर

सम्मलित रियासतें -- (ABCD) अलवर, भरतपुर (नीमराणा ठिकाना)

उद्घाटनकर्ता – एन. वी. गाडगिल

प्रधानमंत्री – शोभाराम कुमावत (अलवर से)

राजप्रमुख – उदयभान सिंह (धौलपुर शासक)

नामकरण – के. एम. मुंशी

द्वितीय चरण तथा संयुक्त राजस्थान का निर्माण —राजस्थान के एकीकरण के द्वितीय चरण में दक्षिणी राजस्थान के रजवाड़ों को भारत सरकार एक करना चाहती थी ।

कोटा, बूंदी, झालावाड़ व डूंगरपुर के शासक दिल्ली गये तथा भारत सरकार से प्रस्तावित संघ बनाने का अनुरोध किया, लेकिन प्रस्तावित संघ क्षेत्र के बीच में, मेवाड़ की रियासत पड़ती थी और रियासती विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्ड के अनुसार मेवाड़ अपना पृथक अस्तित्व बनाये रखने का अधिकारी था। इसलिए मेवाड़ रियासत पर कोई दबाव नहीं डाला जा सकता था फिर भी कुछ शासकों के आग्रह पर रियासती विभाग मेवाड़ को नये राज्य में शामिल होने का निमंत्रण दिया गया । लेकिन मेवाड़ राज्य के दीवान एस.वी. राममूर्ति ने प्रस्ताव का विरोध ये कहकर कर दिया कि ''मेवाड़ का 1300 वर्ष पुराना राजवंश अपनी गौरवशाली परम्पराओं को तिलाजंलि देकर भारत के मानचित्र पर अपना अस्तित्व समाप्त नहीं कर सकता । इस कारण सरकार ने ये निर्णय लिया कि फिलहाल उदयपुर को छोड़कर दक्षिणी पूर्वी राजस्थान की रियासतों को मिलाकर संयुक्त राजस्थान का निर्माण कर लिया जाय । 25 मार्च 1948 ई0 को वी. गाडगिल ने संयुक्त राजस्थान का विधिवत उद्घाटन किया । और कोटा, बूंदी, झालावाड़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, टोक, किशनगढ़ शाहपुरा को शामिल कर लिया गया।

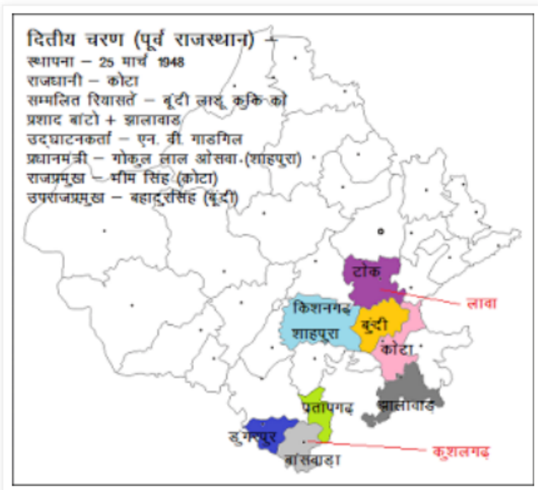

2. **दितीय चरण (पूर्व राजस्थान) :-**
स्थापना – 25 मार्च 1948
राजधानी – कोटा
सम्मलित रियासतें – बूंदी लाडू कुकि को प्रशाद बांटो + झालावाड
उद्घाटनकर्ता – एन. वी. गाडगिल
प्रधानमंत्री – गोकुल लाल ओसवा (शाहपुरा)
राजप्रमुख – भीम सिंह (कोटा)
उपराजप्रमुख – बहादुरसिंह (बूंदी)

तृतीय चरण व मेवाड़ का विलय :— मेवाड़ के दीवान सर राममूर्ति स्वंय दिल्ली गये और उन्होने महाराणा की तीन प्रमुख माँगो से भारत सरकार को अवगत कराया ।

इसके फलस्वरूप उदयपुर महाराणा को 10 लाख रूपये वार्षिक प्रीवी—पर्स, 5 लाख रूपये वार्षिक राजप्रमुख पद का भत्ता, 5 लाख रू0 मेवाड़ की परम्परानुसार धार्मिक खर्च के लिए दिए जाना स्वीकार किया गया । 18 अप्रैल 1948 ई0 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त राजस्थान का विधिवत उद्घाटन किया और इसी के साथ राजस्थान के एकीकरण का तीसरा चरण पूर्ण हुआ।

3. तृतीय चरण (संयुक्त राजस्थान) :-

स्थापना – 18 अप्रैल 1948

राजधानी – उदयपुर

सम्मलित रियासतें – पूर्व राजस्थान + मेवाड़(उदयपुर)

उद्घाटनकर्ता – पं. जवाहर लाल नेहरु

प्रधानमंत्री – माणिक्यलाल वर्मा (उदयपुर)

राजप्रमुख – भूपाल सिंह (उदयपुर)

उपराजप्रमुख – भीम सिंह (कोटा)

चतुर्थ चरण में जयपुर–जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर शेष रह गये थे । इनमें से जोधपुर बीकानेर व जैसलमेर ऐसे रजवाड़े थे जिनकी सीमाएं पड़ौसी देश पाकिस्तान से मिलती है। इनमें जोधपुर, जयपुर बीकानेर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखना चाहते थे लेकिन देश की सुरक्षा की दृष्टि इन्हें पृथक रखा जाना सम्भव नहीं था। राजस्थान की जनता भी राजस्थान को एकीकृत रूप में देखना चाहती थी।

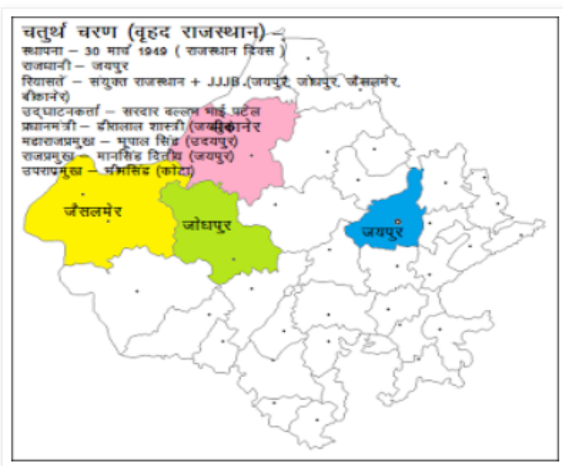

4. चतुर्थ चरण (वृहद राजस्थान) :-

स्थापना – 30 मार्च 1949 **(राजस्थान दिवस)**

राजधानी – जयपुर

रियासतें – संयुक्त राजस्थान + JJJB (जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर)

उद्घाटनकर्ता – सरदार वल्लभ भाई पटेल

प्रधानमंत्री – हीरालाल शास्त्री (जयपुर)

महाराजप्रमुख – भूपाल सिंह (उदयपुर)

राजप्रमुख – मानसिंह द्वितीय (जयपुर)

उपराजप्रमुख – भीम सिंह (कोटा)

जयपुर महाराजा की शर्ते थी – कि जयपुर को राजधानी बनाई जावे लेकिन पहले ही ये तय हो चुका था । उदयपुर महाराणा को सम्मानित करने की दृष्टि से 'महाराजा प्रमुख का पद उन्हें दिया जावेगा। जयपुर की भौगोलिक स्थिति, पेयजल सुविधा को ध्यान में रखकर राजधानी बनाये जाने की इच्छा से महाराजा जयपुर को सन्तुष्ट किया गया। जयपुर नरेश को 18 लाख रू0 जोधपुर नरेश को 17.50 लाख रूपये, बीकानेर नरेश को 17 लाख रू0 वार्षिक देना तय हुआ। जयपुर नरेश को 5.50 लाख रू. वार्षिक भत्ता देकर इस समस्या का समाधान किया गया।

सरदार पटेल ने उदयपुर जाते समय 14 जनवरी 1949 को वृहत्तर राजस्थान के निर्माण की घोषणा की । पं0 हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में 7 अप्रैल 1947 को राजस्थान के नये मंत्रिमंडल ने शासन भार सम्भाला ।

राजस्थान के एकीकरण का अन्तिम चरण :–

सिरोही राज्य का प्रश्न अभी भी अटका हुआ था कुछ लोगों का मानना था सिरोही के उस क्षेत्र को जहां गुजराती बोली जाती हे उसे गुजरात स्टेट एजेन्सी को सौंप दिया जाय सिरोही को बाद में वेस्टर्न इण्डिया तथा गुजरात स्टेट्स एजेन्सी के अन्तर्गत रख दिया गया।

लेकिन गुजरात के राजाओं ने अपने आप को बम्बई प्रान्त में मिलाने का फैसला किया तब सिरोही को अलग रखना पड़ा क्यों कि जनता में विरोध पैदा होने लगा। गुजरात को बम्बई प्रान्त में मिलाने और राजस्थानी सिरोही को राजस्थान में मिलाने पर जोर देने लगे । पहले सिरोही को राजस्थान में मिलाया गया लेकिन फिर भी विरोध जारी रहा अतं में माउन्ट आबू को भी राजस्थान में मिलाने के मुद्दे ने जोर पकड़ा । माउन्ट आबू कि पूरे क्षेत्र को राजस्थान में मिलाया गया ।

अब केवल अजमेर – मेरवाड़ा – केन्द्र शासित क्षेत्र विलय से बचा था उसे राजस्थान के साथ मिला दिया गया साथ 1 नवम्बर 1956 को अजमेर के साथ माउन्ट आबू को भी अजमेर–मेरवाड़ा के साथ राजस्थान में मिला दिया गया।

राजस्थान के एकीकरण का श्रेय तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल उनके गृहसचिव मेनन, स्थानीय नेताओं व शासकों का सक्रिय योगदान से ही राजस्थान के एकीकरण का चुनौती भरा कार्य पूरा हुआ ।

■■■

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

अध्याय –16
Mugals Rajput Collaboration
मुगल राजपूत सहयोग

(मुगल बादशाह तथा राजपूत राजाओं के आपसी सहयोग के संदर्भ में)

1547 ई0 में भारमल आमेर का शासक बना। लेकिन मुगलों में अकबर के शासन काल में बहुत से राजपूतों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर 20 जनवरी 1562 ई0 को अजमेर से जब तीर्थयात्रा करके लौट रहा था और ढूंढाड़ क्षेत्र से गुजरा तब भारमल ने अकबर के समक्ष स्वंय उपस्थित होकर–अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर दिया।

अकबर ने भारमल के पोते और भगवन्तदास के पुत्र मानसिंह को शाही सेवा में भेज दिया, तभी से मुगल राजपूतों के सहयोग का दौर शुरू हुआ।

शाही सेवा का प्रथमकाल 1562–1574 ई0

राजपूत मुगल सहयोग के कारण

1. **अकबर का महत्त्वाकांक्षी होना** – अकबर ये जानता था कि राजपूत एक वीर जाति है और भारत पर सफलतापूर्वक शासन करने के लिए इस जाति का सहयोग आवश्यक है।
   इतिहास इस बात का साक्षी है कि अकबर ने रणथम्भौर पर चढ़ाई की तो अपने आमेर के राजा भगवन्तदास व उनका पौत्र मानसिंह भी उस अभियान में उसके साथ थे। इस अभियान की सफलता ने ये बता दिया कि आपसी सहयोग के कारण –सुर्जन हाड़ा ने किले की चाबी अकबर को सौंप दी और स्वंय की पराजय मान ली।
2. **1572 ई0 में गुजरात विजय और भगवन्तदास का सहयोग** – इस सहयोग व विजय से प्रसन्न होकर अकबर ने झण्डा व नगाड़ा देकर भगवन्तदास का शाही सम्मान किया। इब्राहीम मिर्जा युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ।
3. **अकबर का मानसिंह को महाराणा प्रताप के विरूद्ध भेजना** – यद्यपि महाराणा प्रताप हल्दीघाटी युद्ध में परास्त हुए लेकिन सदा के लिए उसकी शक्ति खत्म नहीं हुयी। लेकिन इससे ये सिद्ध हो गया कि अकबर ने अपनी महत्त्वकांक्षा की पूर्ति के लिए– एक राजपूत राज्य को दूसरे राजपूत राजा से लड़ाकर विजय हासिल की तथा अपनी सीमाओं की वृद्धि कर अपनी महत्त्वकांक्षा की पूर्ति की ।
4. **राजपूत शासकों में संगठन का अभाव** – राजपूतों में आपसी प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या व शत्रुता की भावना ने उन्हें एक नहीं होने दिया– इस आपसी फूट का लाभ अकबर ने उठाया।
5. **राजपूतों का वफादार होना** – एक बार राजपूत शासक किसी के प्रति निष्ठावान हो जाते थे तो अपनी वफादारी पूर्णतया निभाते थे। इस मान्यता के कारण भी अकबर को राजपूतों का पूर्ण सहयोग मिला।
   उदाहरणार्थ :– जयपुर के राजा मानसिंह को बिहार भेजा गया। 20 वर्ष तक बिहार –बंगाल का सूबेदार रहकर, विद्रोहियों को दबाया व मुगल प्रभुत्व को सुदृढ़ बनाया। अकबर ने मानसिंह की सेवाओं से खुश होकर सात हजारी मनसब भी प्रदान किया।
6. **राजपूत शासकों में संगठन का अभाव –** इसलिए अकबर ने इनकी प्रतिभा का उपयोग स्वंय को सर्वोच्च साबित करने में किया। इनके आपसी सहयोग का ये भी एक प्रमुख कारण रहा।

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

7. **विदेशी सैनिकों तथा अन्य जातियों का विद्रोह** —विद्रोहियों को दबाने के लिए भी मुगल राजपूत सहायोग अनिवार्य बन गया।
उदाहरणार्थ — मिर्जा राजा जयसिंह के गद्दी पर बैठते ही जहाँगीर ने मिर्जा राजा जयसिंह की नियुक्ति दक्षिण में की—और मलिक अम्बर जो अहमद नगर राज्य को मुगलों के विरूद्ध सहायता दे रहा था के खिलाफ अदम्य उत्साह का परिचय दिया— मिर्जा राजा जयसिंह ने दलेल खां पठान को परास्त किया। मुगलों द्वारा अपने स्वार्थ व हितों की रक्षा के लिए राजपूतों का सहयोग आवश्यक था।
8. **अकबर के बचपन के संस्कार** — अकबर शिया मुसलमान था । उसकी विचारधारा सहिष्णुता पूर्ण थी। उसने मनसब प्रदान कर एवं विवाह व्यवहार द्वारा राजपूतों से मित्रता बनाना उचित समझा।
9. **अकबर पर सूफी सन्तों का प्रभाव** — सूफी सन्तों के प्रभाव से अकबर ने राजनैतिक ही नहीं सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में भी उदारता की भावना का परिचय दिया— इससे राजपूत मुगल सहायोग बना।
10. **राजपूतों की वीरता** — अकबर तो उदार था ही किन्तु जहाँगीर व शाहजहाँ के शासन में भी राजपूत कौम की वीरता के कारण जहाँगीर व शाहजहाँ ने भी मिर्जा राजा जयसिंह को जाट विद्रोह दबाने के लिए भेजा और इसमें जयसिंह को बहुत सफलता मिली।

औरंगजेब कट्टर मुसलमान था किन्तु स्वंय औरंगजेब ने भी जब दक्षिण भारत में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्तिशाली हो रहे थे— मिर्जा राजा जयसिंह को दक्षिण में नियुक्त किया जहाँ शिवाजी व औरंगजेब के मध्य पुरन्दर की संधि के लिए शिवाजी को राजी करने में जयसिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।
अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरगंजेब तक भी राजपूतों की वीरता के कायल थे इसीलिए मुगल राजपूत सहयोग लम्बे समय तक बना रहा । यद्यपि राजपूतों के सबसे ज्यादा सहयोग आमेर राजघराने के राजपूतों ने दिया, जबकि उदयपुर के महाराणा को मुगलों की अधीनता मानसिंह जीवनपर्यन्त स्वीकार नहीं करवा सके। लेकिन अफगानों की बढ़ती शक्ति को नष्ट करने, राजपूतों की जातिगत वीरता व वफादारी से मुगल सम्राट भी किसी न किसी सीमा तक प्रभावित थे वे जानते थे कि इस जाति के सहयोग के बिना भारत में शासन करना आसान नहीं हैं। एक और महत्वपूर्ण बात है कि इस सहयोग की शुरूआत —मुगल सम्राटों में अकबर ने ही की। मुगल बादशाह और राजपूतों के अपने—अपने स्वार्थो से ''मुगल राजपूत सहयोग नीति'' का महत्व रहा।

■■■

GurukpO.com No. 1 Educational WebPortal in India

अध्याय –17

टिप्पणी

Art and Architecture in Rajasthan
राजस्थान में कला और स्थापत्य

Special reference to forts
(दुर्गो के विशेष संदर्भ में)

राजस्थान की स्थापत्य कला उतनी ही प्राचीन हैं जितना मानव का इतिहास। जब मुसलमान भारत आये इससे पूर्व ही स्थापत्य कला की एक शैली विकसित हो चुकी थी। ये हिन्दू स्थापत्य शैली कहलाती थी। हिन्दू स्थापत्य कला में कमल, कलश, स्तम्भ, ऊँचे शिखर, पहाड़ियों के ऊपर दुर्ग, चौरस स्थानों पर दुर्ग, रेगिस्तान में दुर्ग यहाँ की विशेषता रही है।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग व स्थापत्य

राजस्थान वीरता, शौर्यता की प्रतीक जाति राजपूतों की स्थली रही है। प्रायः प्रत्येक राजा अपने राज्य विस्तार व क्षमता व सुरक्षा की दृष्टि से दुर्गो का निर्माण अवश्य करवाते थे। यहाँ हम राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग, मन्दिर, स्मारक व राजप्रसादों के बारे में जानेंगे।

दुर्ग निमार्ण कला – राजस्थान शूरवीरों की भूमि रही हैं। सभी छोटे–बड़े राजा जागीरदार अपने [2] स्तर से दुर्गो का निर्माण करवाते थे। भारतीय दुर्ग निर्माण कला में परम्परागत भारतीय कला शैली का ही उपयोग किया गया था। राजस्थान में छः प्रकार के दुर्गो का उल्लेख प्राप्त होता हैं जो इस प्रकार है –

औदक दुर्ग :– पानी के मध्य स्थित दुर्ग को औदक दुर्ग कहा गया है। इस प्रकार के दुर्गो तक पहुँचने के लिए नावों का सहारा लिया जाता था।

पर्वत या गिरि दुर्ग – ये दुर्ग पहाड़ी पर बनवाये जाते थे।

धन्वन दुर्ग – ये दुर्ग रेगिस्तान में या वन स्थलों में बनाये जाते थे इनमें आपातकालीन स्थिति में शरण ली जाती थी।

मुस्लिम सत्ता के बाद दुर्ग निर्माण में थोड़ा अन्तर आया । ऊँची–ऊँची पहाड़ियों के समतल भाग पर दुर्ग बनवाये जाने लगे। इसलिए चित्तौड़, कुम्भलगढ़, मांडलगढ़ आदि प्राचीन दुर्गो में इसके अनुरूप परिवर्तन किये गये। जोधपुर, नागौर, बीकानेर आदि स्थानों में पानी की कमी के कारण दुर्गो में ही बरसात के पानी को एकत्रित करने की व्यवस्था होती थी।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग –

चित्तौड़ का दुर्ग – समुद्र की सतह से 1850 फीट आधा मील चौड़ा, सम्पूर्ण किला सुदृढ़ दीवारों से घिरा हैं। महाराणा कुम्भा ने इसमें सुरक्षा की दृष्टि से काफी परिवर्तन करवाये हैं।

Gurukpo.com No1 Educational Web Portal in India

इसमें **कीर्तिस्तम्भ,** प्रशस्ति, रामपोल, भैरवपोल, हनुमानपोल, तारापोल, लक्ष्मीपोल, चामुण्डापोल आदि बने हुए हैं। यहां कुम्भा का महल स्थित हैं। उससे आगे कुम्प श्याम का मंदिर बना है। मजबूती की दृष्टि से उत्कृष्ठ दुर्ग है। एक जैन विजय स्तम्भ भी यहां है—जिसकी तक्षणकला गुजरात की तक्षण कला से मिलती जुलती है। यानि इन दुर्गो पर परम्परागत भारतीय शैली, मुस्लिम शैली का प्रभाव देखा जा सकता हैं।

चित्तौड़ दुर्ग

कीर्ति स्तम्भ

कुम्भलगढ़ दुर्ग – उदयपुर से लगभग 60 मील दूर सादड़ी कस्बे के पास, मेवाड़ और मारवाड़ सीमा पर ये दुर्ग स्थित हैं। इस दुर्ग का निर्माण महाराणा कुम्भा के प्रसिद्ध शिल्पी मण्डन के तत्वावधान में बनाया था। मेवाड़ व मारवाड़ की सीमा पर बने होने के कारण इसका सामरिक महत्त्व भी था। शत्रु के आक्रमण के समय मेवाड़ का घराना व राजकीय सम्पत्ति व प्रजा को यही सुरक्षा प्राप्त हुई। दुर्ग सीधी ऊँची जगह पर बना है। इस कारण

इसे कटारगढ़ भी कहा जाता है। कटारगढ़ के 6 द्वारो को पार करने के बाद जो चौड़ा मार्ग आता है उसके दाये–बायें राजप्रसाद बने हुए हैं। खाद्य व युद्ध सामग्री को एकत्रित करने के लिए बड़े–बड़े गोदाम, अश्वशाला, हाथियों को रखने का स्थान बना हुआ है।

कर्नल टॉड ने इस दुर्ग की तुलना सुदढ़ प्राचीरों, बुर्जो व कंगूरो की दृष्टि से 'एटूस्कन' से की है। डॉ. गोपीनाथ ने इसे कुम्भा की सामरिक व रचनात्मक गुणों की उपलब्धि कहा है। दुर्ग का स्थापत्य आज भी देखने लायक है और अपनी अभेद स्थिति को प्रमाणित कर रहा हैं।

रणथम्भौर का दुर्ग –यह भी राजस्थान का प्रसिद्ध व प्राचीन दुर्गो में से एक हैं। यह सवाईमाधोपुर से 13 किलामीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। 944 में इसे चौहान शासक रणथान ने बनवाया। उसी के नाम पर इसका नाम रणथम्भपुर रखा गया था जो अब 'रणथम्भौर' हो गया है। चौहानों ने यहां 600 वर्ष तक शासक किया । इस दुर्ग के प्रवेश द्वार को नौलखा दरवाजे के नाम से जाना जाता है।

इसमें मन्दिर, जलाशय, हवेलिया, छतरियां, मस्जिदे बनी हुई हैं। चौहान शासको के समय से ही एक तोरणद्वार है। मुस्लिम शासकों ने इसे ही अन्धेरी दरवाजा तथा जयपुर शासकों ने तोरण द्वार को ही त्रिपोलिया दरवाजा कहा है। इसमें 32 विशाल खम्भों वाली 50 फीट ऊँची छतरी भी हैं। सात खण्डों वाला राजमहल जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। इसमें गणेश मन्दिर है जिसकी आज भी बहुत अधिक मान्यता है।

(रणथम्भौर दुर्ग)

दुर्ग का महत्व – सामरिक दृष्टि से ये दुर्ग बहुत महत्त्वपूर्ण है। दुर्ग चारो और वनों से ढका है। इसमें काले व भूरे पत्थर का उपयोग भी हुआ है। दुर्ग में स्थित छतरी के गुम्बद पर नक्काशी का काम है। 1961 ई0 में राजस्थान सरकार के वन विभाग ने इसका निर्माण करवाया आजकल ''बाघपरियोजना के अन्तर्गत नवनिर्मित भवन पर्यटकों का विश्रामगृह बना हुआ है।

आमेर के महल और स्थापत्य

कछवाहा राजाओं की प्राचीन राजधानी आमेर के स्थापत्य में दुर्ग स्थापत्य तथा राजप्रसादों के स्थापत्य का सुन्दर मिश्रण मिलता हैं। आमेर के शासकों ने आवश्यकता के अनुसार गढ़, परकोटा, बुर्ज, मन्दिर, जलाशय और प्रसादों का निर्माण करवाया।

आमेर के महल स्थापत्य की दृष्टि से राजस्थान में सबसे सुन्दर महल माने जाते है। आमेर महल का निर्माण राजा मानसिंह ने आरम्भ करवाया था। ये कार्य मिर्जा राजा जयसिंह के काल में पूर्ण हुआ। सुदृढ़ दीवारे, ऊँची पहाड़ियों पर बने महल, दोनो और पहाड़ियां व रास्ता भी सुरक्षित है। दुर्ग में हिन्दुशैली के छज्जे, मेहराब बंगाली शैली के, दीवाने आम, जलेबीचौक, सुख निवास, सुखमंदिर राजपूत शैली के है। कांच के टुकड़ो से जो कलाकृतियां की गई है वे ईरानी शैली से साम्यता रखती हैं।

(आमेर का प्राचीन महल)

माउन्ट आबू दुर्ग – मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा बनवाया गया ।

तारागढ़ दुर्ग – अजमेर के चौहान शासक अजयपाल ने बनवाया। इसे 'अजयमेरू' दुर्ग भी कहा जाता है।

सिवाण दुर्ग – जालौर का यह दुर्ग जोधपुर के पश्चिम में स्थित है।

GULLY BABA.com No. 1 Educational Website in India

अध्याय –18

टिप्पणी:–

Feudal system in Rajasthan
राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था

राजस्थान की शासन व्यवस्था में सामन्ती व्यवस्था अपना विशिष्ट स्थान रखती है। राजस्थान के रजवाड़ों में सामन्ती व्यवस्था राजनैतिक के साथ–साथ सामाजिक तथा पारिवारिक महत्त्व भी रखती है।

राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था एवं सामन्तों की नियुक्ति – राजस्थान में ऐसी प्रथा प्रचलित थी कि राजा की मृत्यु के बाद यदि कोई विशेष परिस्थिति न हो तो राजा का बड़ा पुत्र शासक मुख्य राजा बनता था। और राजा का विधिवत राज्याभिषेक होता था। लेकिन जिन राज्यों का क्षेत्र विस्तार अधिक होता था वहाँ शासन संचालन की सुविधा की दृष्टि से अन्य छोटे–छोटे क्षेत्रों में सामन्तों की नियुक्ति कर दी जाती थी, ये सामन्त उस क्षेत्र का शासन संचालन करते थे और आवश्यकता पड़ने पर रजवाड़े प्रमुख के महाराजा से सलाह ले लेते थे।

अधिकांश सामन्तों की नियुक्ति परिवार के छोटे लड़कों व सगे सम्बन्धियों में से ही कर दी जाती थी। ये नियुक्ति प्रमुख राजा द्वारा की जाती थी। इन्हें सामन्त के नाम से पुकारा जाता था।

सामन्तों का बढ़ता प्रभाव – प्राचीनकाल में ये व्यवस्था ठीक तरह चलती रही लेकिन जैसे–जैसे विदेशी प्रभाव हम पर पड़ने लगा और राजा अपने निजी स्वार्थो के कारण कभी मुगल और कभी अंग्रेजों से सहायता लेकर एक–दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करने लगे– इस बढ़ती हुई विदेशी सहायता के बदले , विदेशियों ने बड़ी–बड़ी राशि खिराज के रूप में, सहायता के बदले मांगनी शुरू कर दी। इतनी बड़ी राशि जुटाने के लिए राजाओं ने अपने सामन्तों पर निर्भर रहना शुरू कर दिया तथा वे इसे राशि की प्राप्ति का क्षेत्र मानने लगे इससे प्रतिस्पर्द्धा का जन्म हुआ और प्रमुख महाराजा और सामन्तों के मध्य गृहयुद्ध व संघर्ष की स्थिति बन गई।

संघर्ष की शुरूआत – 18वीं शताब्दी में ये सामन्ती व्यवस्था अपने चरम पर पहुंच चुकी थी। बीकानेर में जोरावरसिंह की मृत्यु के पश्चात् गजसिंह को गद्दी पर बैठाने में जोधपुर में बख्त सिंह, जयपुर में ईश्वरी सिंह व माधोसिंह का उत्तराधिकार सम्बन्धी झगड़ा निपटाने में सामन्तों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कभी बूंदी को लेकर , कभी जयपुर और कभी जोधपुर को लेकर ये खींचतान चलती रही और ये खींचतान इसलिए भी चलती रही क्यों कि दोनों ही मराठाओं से सहयोग लेते रहे।

बड़े–बड़े सामन्त व कुलीन वर्ग प्रतिस्पर्द्धा में उलझ गये। बड़े–बड़े राजा मराठाओं के चौथ व सरदेशमुखी की राशि चुकाने के लिए भी इन छोटे जागीरदारों से भी पैसा इकट्ठा करने लगे । मराठाओं को राशि चुकाने का कोई और तरीका उनके पास नहीं था।

मध्यकाल व उत्तर मध्यकाल में सामन्तों पर निर्भरता –

मुगलों के शासन काल में और बड़े–बड़े राजघरानों के उनके राजनैतिक सम्बन्ध तथा मुगलों से मित्रता, सहयोग, वैवाहिक सम्बन्धों ने राजपूत नरेशों को सामन्तों पर और अधिक आश्रित बना दिया– मुगल बादशाह को

खुश करने के लिए जो नजराने राजाओं द्वारा भेंट किये जाते थे वे सामन्तों के सहयोग से और विभिन्न जागीरों से एकत्रित किये जाते थे।

मुगलों के सम्पर्क से छोटे बड़े सामन्त को चोरी –डकैती, अव्यवस्था में लिप्त होने पर भी उन्हें मुगल सहयोग व सहायता मिलती रही और सामन्तों पर राजाओं की निर्भरता बराबर बढ़ती रही।

सैनिक व्यवस्था के लिए सामन्तों पर निर्भरता – राजाओं ने सामन्तों को सैनिक सहायता देने वाले सहयोगियों के रूप में उपयोग में लाना शुरू कर दिया। सामन्तों को जागीरे दी जाती थी। उसी के अनुपात में उन्हें शांति काल व युद्ध के दौरान सैनिक सहयोग देना पड़ता था– अतः सैनिक सहायता देने के कारण मध्यकाल में सामन्त व्यवस्था में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। राजा सेना के आधार पर मुगल बादशाहों से मनसब प्राप्त करने लगे और स्वंय को मुगल आक्रमणों से सुरक्षित महसूस करने के लिए उनके लिए यह करना जरूरी हो गया।

ब्रिटिशकाल और सामन्त व्यवस्था– ब्रिटिश सरकार को शासन की सुव्यवस्था से कोई मतलब नहीं था। उन्हें केवल अपने खिराज, अपने टैक्स, व अपनी वसूलियों से मतलब था। एक तो राजस्थान के भिन्न–भिन्न रजवाड़ों से अंग्रेजों ने अलग–अलग सन्धि की और सुरक्षा की आड़ लेकर भिन्न–भिन्न राज्यों से वार्षिक कर के रूप में लाखों रूपये वसूली की लिखित शर्तें रखी– मुगलों को, मराठाओं को, ब्रिटिशस को किसी न किसी रूप में दिये जाने वाली धनराशि को आखिर राजाओं को भी इन सामन्तों से ही तो वसूल करना था । अतः अंग्रेजों ने 1835 में 'शेखावटी ब्रिगेड' 'मेरवाड़ा बटालियन', 'जोधपुर लीजियन', 'मेवाड़ भील कोर' नाम से जो सेनाएं तैयार की उनका खर्च राजा सामन्तों से वसूल करके करते थे। अतः सामन्तों का शोषण राजा द्वारा और राजा से लूट ब्रिटिश सरकार द्वारा इस परिपाटी ने सामन्त व उनके अधिकार क्षेत्र को शोषण का क्षेत्र बना दिया।

सामन्तों का शोषण – नये जागीर के उत्तराधिकार का कर, तलवार बन्धी दस्तूर, नजराना पेश करना, राजकुमारियों के विवाह का रूपया, राजाओं को तीर्थयात्रा करके लौटने पर कर, ब्रिटिश सरकार के दबाव से राजाओं ने नमक क्षेत्र अंग्रेजो को दे दिए। किसानों से रक्षाबंधन कर, अफीम कर, नाई से सालभर काम कराने का टैक्स (गेंहू के रूप में) होली के अवसर पर सालभर का अनाज देना, राहदारी टैक्स लिए जाने लगे। जिससे सामन्त और उनकी जनता, कृषक सभी का खूब शोषण हुआ।

राजपूत शासक इतने असहाय हो चुके थे कि वे पॉलिटिकल एजेन्ट (रेजीडेन्ट) की अवहेलना करना उनके लिए मुश्किल था– उनके कहे अनुसार वे सामन्त व सामन्तों के माध्यम से जनता का शोषण करते रहे।

ब्रिटिश अधिकारी सामन्तों की सैनिक सेवा के बदले नकद रूपया वसूल करने लगे। सामन्तों के विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया। सामन्तों को सामान्य स्थिति में लाकर भी उन्हें चैन से नहीं रहने दिया जाता था।

1857 की क्रान्ति व सामन्तों का सहयोग – शोषण की पराकाष्ठा, अन्याय, अत्याचार और नगद राशि व उपज का बड़ा हिस्सा लूटकर उनकी स्थिति को दयनीय बना देने का ही नतीजा था कि 1857 की क्रान्ति जो सेना से शुरू हुई उनमें बहादुरशाह जफर, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्यांटोपे, अवध के नवाब के साथ–साथ राजस्थान से आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह, आसोपा के ठाकुर शिवनाथ सिंह, गुलर के ठाकुर बिशनसिंह, आलणियाबास के ठाकुर अजीतसिंह, खेजड़ला ठाकुर आदि ने भी 1857 की क्रांति में विप्लवकारी सेना का साथ दिया।

GurukPo.com No.1 Educational Web Portal in India

शब्दावली

1) **रायधन** : राजस्थान के लिए प्रयुक्त किया जाता हैं बाद में रायधन के स्थान पर 'राजपूताना शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर–पश्चिमी राजस्थान का क्षेत्र रेतीला भाग 'मरू प्रदेश' कहलाया। यही मरू प्रदेश कालांतर में 'मरूवार' या 'मारवाड़' कहलाया ।

2) **अहिछत्रपुर** :इसे हम आजकल नागौर के नाम से जानते हैं।

3) **शिलालेख** : वे लेख जो पत्थर या चट्टान पर उत्कीर्ण किये जाते हैं।

4) **ख्यात साहित्य** : राजाओं की 'ख्याति' में लिखा गया वो साहित्य जिसका एकमात्र लक्ष्य अपने शासक की यशोगाथा का वर्णन करना था, ख्यात साहित्य कहलाता हैं। फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से इनमें प्राप्त जानकारियों के आधार पर विशुद्ध इतिहास की रचना की जा सकती है।

5) **बागोर की सभ्यता** : भीलवाड़ा से 25 किलोमीटर दूर यहां 1967 ई0 से 1970 ई0 के बीच उत्खनन (खुदाई) का कार्य हुआ तब ये सभ्यता प्रकाश में आई ।

6) **गणेश्वर** : 'गणेश्वर' तहसील नीमकाथाना जिला सीकर में कॉटली नदी के उद्‌गम स्थल पर स्थित हैं जहां ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

7) **पुरातात्विक स्थल** : प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिलने वाला स्थान

8) **राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल** : बागौर (उदयपुर), जोधपुरा (जयपुर) नोह (भरतपुर) सुनानी खेतड़ी, (झुंझुनू) तिलवाड़ा (बाड़मेर) नगरी (चित्तौड़) नलियासर (सांभर के निकट), नगर (टोंक) – रंगमहल (गंगानगर) भीनमाल (जालौर)

9) **मालव संवत्**: मालव जाति एक स्वतन्त्र संवत का प्रयोग करती थी । पहले कृत फिर मालव और अन्त में 'विक्रम संवत कहा जाने लगा।

10) **सपादलक्ष** : वर्तमान सांभर

11) **महाराजाधिराज** : राजाओं का राजा, महान् राजा।

12) **रायरायन** : विद्वान व साहित्यकारों का आश्रय दाता

13) **राणो रासो** : साहित्यकारों का आश्रय दाता

14) **राजगुरू** : राजनैतिक सिद्धान्तों की जानकारी में दक्ष

15) **दानगुरू** : महादानी

16) **हालगुरू** : पहाड़ी दुर्गो का स्वामी

17) **छापगुरू** : छापामार युद्धपद्धति में दक्ष

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

18) **समकालीन** : उसी समय

19) **ढूंढाड़ प्रदेश** : दौसा व आसपास का क्षेत्र

20) **चौथ** : आमदनी का चौथा भाग मराठे टैक्स के रूप में लिया करते थे। उसे चौथ कहा जाता है।

21) **सरदेशमुखी** : आमदनी का दसवां भाग वसूल किया जाना सरदेश मुखी कहलाता था।

22) **जौहर** : रानिया अपने अस्तित्व व सतीत्व की रक्षा करने के लिए दुश्मनों के हाथ में आने से पूर्व स्वंय को जिन्दा चिता में जला देती थी । उसे जौहर कहा जाता है।

23) **पड़दायत** : उप पत्नि के रूप में स्वीकृत गोली का रजवाड़ों में पडदायत के नाम से जाना जाता था। उसे रनिवास के पर्दे में रहना पड़ता था।

24) **पासवान अथवा खवासन** : शासक प्रसन्न होकर किसी दासी को हाथ या पैर में सोने के आभूषण पहनने की स्वीकृति दे देता था तो उस दासी का पद व सम्मान बढ़ जाता था– वह पासवान या खवासन कहलाती थी।

25) **सांभरी** : ब्रिटिश शासनकाल में सांभर झील से तैयार नमक को सांभर के नाम से जाना जाता था।

26) **कोसिया** :पंचभ्रदा के नमक को कोसिया नमक के नाम से जाना जाता था।

27) **डीडू** : ब्रिटिश काल में डीडवाना का नमक को डीडू के नाम से जाना जाता था।

28) **खालसा भूमि**: जो भूमि सीधे शासक के नियत्रंण में होती थी– खालसा भूमि कहलाती थी।

29) **जागीर** : जो भूमि सामन्तों के नियन्त्रण में होती थी । जागीर भूमि कहलाती थी।

30) **नजराना** : नये शासक की गद्दीनशीनी पर दी जाने वाली राशि नजराना कहलाती थी। नये सामन्त को गद्दीनशीनी पर –शासक को पेश की जाने वाली राशि भी, उत्तराधिकार शुल्क, हुक्मनामा, तलवार बंधाई आदि भी 'नजराना' कहलाता था।

31) **उपरमाल** : मेवाड़ के बिजौलिया क्षेत्र की जागीर को 'उपरमाल' के नाम से जाना जाता हैं। संगठित किसान आन्दोलन की शुरूआत का श्रेय इसी क्षेत्र को है।

32) **सम्प सभा** : भीलों को सामाजिक दृष्टि से संगठित करने के लिए 1905 ई0 में 'सम्पसभा' की स्थापना की गई । सम्प सभा के माध्यम से मेवाड़, डूंगरपूर, ईडर, गुजरात, विजयनगर व मालवा के भीलों को संगठित किया गया।

GurukOO.com No. 1 Educational Web Portal In India

B.A. (Part I) HISTORY EXAMINATION, 2010

Second Paper
(Outline History of Rajasthan from Earliest Times to 1949 A.D.)

Time allowed : One hour — Maximum Marks :40

OBJECTIVE TYPE QUESTIONS

1. Earlier City 'Jangal' was the name of :
   (a) Kota (b) Bikaner (c) Jaipur (d) Mewar ( )
   प्राचीन शहर 'जंगल' नाम था :
   (अ) कोटा (ब) बीकानेर (स) जयपुर (द) मेवाड़ ( )

2. Which city was the capital of Pratihar King Nagbhatta-I.
   (a) Mandaur (b) Merata (c) Jodhpur (d) Jalore ( )
   प्रतिहार राजा नागभट्ट प्रथम की राजधानी कौन–सी नगरी थी ?
   (अ) मण्डौर (ब) मेड़ता (स) जोधपुर (द) जालौर ( )

3. Who is called 'Abul Fazal' of Rajasthan:
   (a) Suryamal Mishran (b) Nainsi (c) Bankidas (d) Kaviraj Shyamaldas ( )
   राजस्थान का 'अबुल फजल' किसे कहा जाता है :
   (अ) सूर्यमल मिश्रण (ब) नैणसी (स) बाँकीदास (द) कविराज श्यामलदास ( )

4. Ahar site is situated :
   (a) Ganga nagar (b) Kota (c) Udaipur (d) Jaipur ( )
   आहड़ स्थल स्थित है :
   (अ) गंगानगर (ब) कोटा (स) उदयपुर (द) जयपुर ( )

5. The first category of Nobles in Mewar is called :
   (a) Umrao (b) Sardar (c) Ganayat (d) Rajavi ( )
   मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के सामन्त (सरदार) कहलाये :
   (अ) उमराव (ब) सरदार (स) गनायत (द) राजवी ( )

6. Rana Kumbha is called 'Abhinab Bharatcharya' of Rajasthan because :
   (a) Lover of Music (b) Lover of Writing
   (c) Lover of Fort (d) Lover of War ( )

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

राणा कुम्भा को राजस्थान का 'अभिनवभरताचार्य' कहा गया है क्योंकि :

(अ) संगीत प्रेमी थे (ब) लिखने के प्रेमी थे (स) दुर्ग प्रेमी थे (द) युद्ध प्रेमी थे ( )

7. Formation of Desh Hiteshini Sabha was :

(a) 2nd July, 1877 (b) 5th October, 1888

(c) 11th November 1880 (d) 5th March, 1886 ( )

'देश हितैषिनी सभा' का गठन हुआ था :

(अ) 2 जुलाई, 1877 को (ब) 5 अक्टूबर, 1888 को

(स) 11 नवम्बर, 1880 को (द) 5 मार्च, 1886 को ( )

8. 'Nimuchana Kand' took place in :

(a) 1925 A.D. (b) 1924 A.D. (c) 1923 A.D. (d) 1920 A.D. ( )

'नीमूचना काण्ड' हुआ था :

(अ) 1925 ई. में (ब) 1924 ई. में (स) 1923 ई. में (द) 1920 ई. में ( )

9. Motilal Tejawat is associated with :

(a) Peasant Movement (b) Land Reform Movement

(c) Marwar Hitkarini Sabha (d) Bhil Movement ( )

मोतीलाल तेजावत सम्बन्धित है :

(अ) किसान आन्दोलन से (ब) भूमि सुधार आन्दोलन से

(स) मारवाड़ हितकारिणी सभा से (द) भील आन्दोलन से ( )

10. Rajasthan Seva Sangh was established in :

(a) 1885 A.D. (b) 1914 A.D. (c) 1920 A.D. (d) 1919 A.D. ( )

राजस्थान सेवा संघ की स्थापना हुई :

(अ) 1885 ई. में (ब) 1914 ई. में (स) 1920 ई. में (द) 1919 ई. में ( )

11. In which year was the battle of Giri-Samel was fought :

(a) 1526 A.D. (b) 1527 A.D.

(c) 1528 A.D. (d) 1544 A.D. ( )

गिरि–सुमेल का युद्ध कब लड़ा गया था :

(अ) 1526 ई. में (ब) 1527 ई. में (स) 1528 ई. में (द) 1544 ई. में ( )

12. The Bishnoi Sect was founded by :

(a) Sant Dariyavji (b) Sant Tukaram

(c) Sant Ramcharan (d) Jambhoji ( )

विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की गई थी :

(अ) संत दरियावजी द्वारा (ब) संत तुकाराम द्वारा

(स) संत रामचरण द्वारा (द) जाम्भोजी द्वारा ( )

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

13. The builder of Chittor Fort was :

(a) Rana Sanga (b) Rana Kumbha

(c) Rana Ratan Singh (d) Chitrang ( )

चित्तौड़ दुर्ग के निर्माता थे :

(अ) राणा सांगा (ब) राणा कुम्भा (स) राणा रतन सिंह (द) चित्रांग ( )

14. Which school of painting was Nihalchand painter :

(a) Amer School (b) Kishangarh School

(c) Bundi School (d) Kota School ( )

निहालचंद किस शैली का चित्रकार था :

(अ) आमेर शैली (ब) किशनगढ़ शैली

(स) बूंदी शैली (द) कोटा शैली ( )

15. The chief centre of Dadu Sect is :

(a) Singhthal (b) Dholidub

(c) Kherapa (d) Naraina ( )

दादू पंथ का मुख्य केन्द्र हैं :

(अ) सिंहस्थल (ब) धोलीदूब (स) खेड़ापा (द) नरैना ( )

16. Which one of the following states was not merged into 'Matsya Sangha' :

(a) Dholpur (b) Jaipur (c) Bharatpur (d) Alwar ( )

निम्नलिखित में से कौन–सा राज्य 'मत्स्य संघ' में सम्मिलित नहीं किया गया था:

(अ) धौलपुर (ब) जयपुर (स) भरतपुर (द) अलवर ( )

17. The first Rajput state to sign the treaty with the Britishers in 1818 A.D. was :

(a) Udaipur (b) Kota (c) Kishangarh (d) Jaipur ( )

राजपूताना का प्रथम राजपूत राज्य जिसने अंग्रेजों के साथ सन् 1818 ई. में संधि पर हस्ताक्षर किये:

(अ) उदयपुर (ब) कोटा (स) किशनगढ़ (द) जयपुर ( )

18. The process of integration of Rajasthan was completed in the year :

(a) 1948 (b) 1952 (c) 1956 (d) 1947 ( )

एकीकृत राजस्थान की निर्माण प्रक्रिया पूरी हुई :

(अ) 1948 में (ब) 1952 में

(स) 1956 में (द) 1947 में ( )

19. Name the following architect who planned a beautiful Jaipur city was

(a) Mandan (b) Dharnak (c) Vidyadhar (d) Keshavadas ( )

सुनियोजित एवं सुन्दर जयपुर शहर को बसाने वाला वास्तुकार था :

(अ) मण्डन (ब) धरणक (स) विद्याधर (द) केशवदास ( )

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

20. The founder of Banasthali Vidyapith was :

(a) Jamanalal Bajaj (b) Arjunlal Sethi

(c) Hiralal Shastri (d) Maniklal Verma ( )

वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक थे :

(अ) जमनालाल बजाज (ब) अर्जुनलाल सेठी

(स) हीरालाल शास्त्री (द) माणिक्यलाल वर्मा ( )

21. Write names of famous 'Khayat'

सुप्रसिद्ध ख्यातों के नाम लिखिये ।

22. Discuss 'Raj-Prashasti'.

'राजप्रशस्ति' की विवेचना कीजिये ।

23. Write about Col. James Tod.

कर्नल जेम्स टॉड के बारे में बताइये ।

24. Who were main famous Modern Historians of Rajasthan (any four names) ?

राजस्थान के किन्हीं चार आधुनिक प्रसिद्ध इतिहासकारों के नाम बताइये।

25. Write any four salient features of 'Ahar' civilization.

आहड़ सभ्यता की प्रमुख चार विशेषताएं बताइये।

26. Write four branches of Dadu-Panth.

दादू पंथ की चार शाखाओं के नाम लिखिये।

27. What do you understand by the term 'Tajim' ?

'ताजीम' शब्द से आप क्या समझते हैं ?

28. Write about 'Vijaysingh Pathik'.

विजयसिंह पथिक के बारे में बताइये।

29. What were the main four factors leading to Maratha invasions in Rajasthan ?

राजस्थान में मराठा आक्रमणों के प्रमुख चार कारण बताइये।

30. When, who and why 'Hurda Conference' was organised ?

हुरडा सम्मेलन कब, किसने और क्यों आयोजित किया गया ?

Gurukpo.com No.1 Educational Web Portal in India

DESCRIPTIVE TYPE QUESTIONS

प्रत्येक खण्ड में से एक प्रश्न का चयन करते हुए, कुल तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Section- A

1. Describe the main literary sources of Rajasthan History.
   राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोतों साहित्यिक स्रोतों का वर्णन कीजिये । 20

2. Give a brief account of Ala-ud-Din's Conquest of Jalore and Ranthambore and what were the main causes of his victory?
   अलाउद्दीन के जालौर एवं रणथम्भौर विजय का संक्षिप्त विवरण दीजिए। उसकी विजय के प्रमुख कारण क्या थे ? 15+5

Section- B

3. Write a brief note about the political and cultural achievements of Rana Kumbha.
   राणा कुम्भा की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 5+15

4. What were the causes of Mughal-Rajput co-operation and what were its impact in the field of art and culture of Rajasthan?
   मुगल–राजपूत सहयोग के प्रमुख कारण क्या थे तथा इसका राजस्थान की कला एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव हुआ ? 10+10

Section- C

5. Give an account of the social reforms in Rajasthan after 1818 A.D.
   1818 ई. के पश्चात् राजस्थान में सामाजिक सुधारों का विवरण दीजिये। 20
6. Give an account of the different phases of unification of Rajasthan.
   राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरणों का विवरण दीजिये। 20

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

B.A. (Part I) HISTORY EXAMINATION, 2011
(10+2+3 Pattern) (Faculty of Arts)
[Also Common with subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-I
Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

HISTORY

Second Paper [History of Rajasthan (From Earliest Times to 1956 A.D.)

Time allowed : Three hours   Maximum marks : 100

---

1. With which culture is Deedwana associated :
   (a) Palaeolithic   (b) Mesolithic
   (c) Neolithic   (d) Chalcolithic   ( )
   डीडवाना किस संस्कृति से सम्बन्धित है :
   (अ) पुरापाषाण (ब) मध्यपाषाण (स) नवपाषाण (द) ताम्रपाषाण ( )

2. The earliest coins of India are known as :
   (a) Punch -mark   (b) Dinar
   (c.) Drmma   (d) Taka   ( )
   भारत के प्राचीनतम सिक्कें इस नाम से जाने जाते हैं :
   (अ) पंचमार्क (आहत) (ब) दीनार (स) द्रम (द) टका ( )

3. Balathal site is situated in :
   (a.) Jaipur   (b) Dinar
   (c.) Drmma   (d) Taka   ( )
   बालाथल स्थल स्थित है :
   (अ) जयपुर (ब) सीकर (स) उदयपुर (द) बीकानेर ( )

4. Who is author of Vanshbhaskara ?
   (a) Bankidas   (b) Suryamalla Misrana
   (c.) Shyamldas   (d) Keshavdas   ( )
   'वंशभास्कर' के लेखक कौन है?
   (अ) बाँकीदास (ब) सूर्यमल मिश्रण (स) श्यामलदास (द) केशवदास
   ( )

5. Kalibangan is an important excavation site, situated in :
   (a) Jaipur   (b) Hanumangarh
   (c.) Bikaner   (d) Barmer   ( )
   'कालीबंगा जो एक महत्त्वपूर्ण उत्खनन क्षेत्र है, स्थित है :
   (अ) जयपुर (ब) हनुमानगढ़ (स) बीकानेर (द) बाड़मेर
   ( )

6. When did Alauddin Khilji attack Chittor :

(a) 1301 A.D. (b) 1311 A.D.

(c.) 1302 A.D. (d) 1303 A.D. ( )

'अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर कब आक्रमण किया :

(अ) 1301 ई. में (ब) 1311 ई. में

(स) 1302 ई. में (द) 1303 ई. ( )

7. Shivi Janpad was located in :

(a) Bairath (b) Madhyamika

(c.) Bagar (d) Maand ( )

शिवि जनपद बसा था :

(अ) बैराठ (ब) मध्यमिका (स) बागड़ (द) मांड ( )

8. Dhai-Din ka Jhopra was situated in :

(a) Bundi (b) Bharatpur

(c.) Alwar (d) Ajmer ( )

ढाई दिन का झोपड़ा कहाँ स्थित है :

(अ) बुन्दी (ब) भरतपुर (स) अलवर (द) अजमेर ( )

9. Rana Kumbha became the ruler of Mewar in :

(a) 1437 A.D. (b) 1446 A.D.

(c.) 1433 A.D. (d) 1436 A.D. ( )

राणा कुम्भा मेवाड़ के शासक बने थे :

(अ) 1437 ई0 (ब) 1446 ई0 (स) 1433 ई0 (द) 1436 ई0 ( )

10. In which year was the battle of haldighati was fought :

(a) 1572 A.D. (b) 1576 A.D.

(c.) 1582 A.D. (d) 1577 A.D ( )

हल्दीघाटी का युद्ध कब लड़ा गया था :

(अ) 1572 ई0 (ब) 1576 ई0 (स) 1582 ई0 (द) 1577 ई0 ( )

11. Meera was worshiper of :

(a) Krishna (b) Rama

(c.) Shiva (d) Buddha ( )

मीरा भक्त थी :

(अ) कृष्ण (ब) राम (स) शिव (द) बुद्ध ( )

12. Who is the author of Raj-Prashasti :

(a) Mandan (b) Vidyadhar

(c.) Bankidas (d) Rannchhod Bhatt ( )

राजप्रशस्ति के लेखक कौन है ?

(अ) मंडन (ब) विद्याधर (स) बाँकीदास (द) रणछोड़भट्ट ( )

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India

13. Sagarmal Gopa belonged to the state :
(a) Jalore (b) Jaisalmer
(c.) Jodhpur (d) Mewar ( )
सागरमल गोपा किस रियासत से सम्बन्धित थे :
(अ) जालौर (ब) जैसलमेर (स) जोधपुर (द) मेवाड़ ( )

14. The person whose all the family members made sacrifices in the freedom movement was :
(a) Vijay singh Pathik (b) Jamana Lal Bajaj
(c.) Kesari Singh Barhat (d) Moti Lal Tejawat ( )
वह व्यक्ति जिसके परिवार के सभी सदस्यों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदान किया था :
(अ) विजय सिंह पथिक (ब) जमनालाल बजाज
(स) केसरीसिंह बारहठ (द) मोतीलाल तेजावत ( )

15. The Dungarpur Prajamandal was established in :
(a) 1945 A.D. (b) 1943 A.D. (c.) 1947 A.D. (d) 1944 A.D. ( )
डूंगरपुर प्रजामण्डल की स्थापना कब हुई :
(अ) 1945 ई0 (ब) 1943 ई0 (स) 1947 ई0 (द) 1944 ई0 ( )

16. Harijan Seva Samiti was established in :
(a) 1935 A.D. (b) 1932 A.D. (c.) 1934 A.D. (d) 1936 A.D. ( )
'हरिजन सेवा समिति' की स्थापना कब हुई :
(अ) 1935 ई0 (ब) 1932 ई0 (स) 1934 ई0 (द) 1936 ई0 ( )

17. Which was the first State to declare the practice of Sati illegal ::
(a) Kota (b) Bundi (c.) Udiapur (d) Alwar ( )
सतीप्रथा को गैरकानूनी घोषित करने वाला प्रथम राज्य कौनसा था :
(अ) कोटा (ब) बून्दी (स) उदयपुर (द) अलवर ( )

18. Opium Royal commission was set up in :
(a) 1889 A.D. (b) 1893 A.D.
(c.) 1890 A.D. (d) 1879 A.D. ( )
अफीम रॉयल कमीशन स्थापित किया गया था:
(अ) 1889 ई0 (ब) 1893 ई0 (स) 1890 ई0 (द) 1879 ई0 ( )

19. The Capital of Matsya Sangh was:
(a) Alwar (b) Bharatpur
(c.) Jaipur (d) Dholpur ( )
मत्स्य संघ की राजधानी थी :
(अ) अलवर (ब) भरतपुर (स) जयपुर (द) धौलपुर ( )

20. When was the integration of Rajasthan completed :
(a) 1948 A.D. (b) 1947 A.D.
(c.) 1957 A.D. (d) 1956 A.D. ( )

GurukPO.com
No.1 Educational Web Portal in India

राजस्थान का एकीकरण कब सम्पूर्ण हुआ :
(अ) 1948 ई0 (ब) 1947 ई0 (स) 1957 ई0 (द) 1956 ई0 ( )

21. Bairath
बैराठ ।

22. To which civilization is Balathal related and where is it situated ?
बालाथल पुरास्थल किस सभ्यता से सम्बन्धित है और यह कहाँ स्थित है ?

23. Mention two main features of Kishangarh school of paintings.
किशनगढ़ चित्रकला शैली की दो प्रमुख विशेषताएं बताइये।

24. Durga Das Rathore
दुर्गादास राठौड़।

25. Who was the Karamchand Panwar ?
कर्मचन्द पंवार कौन था ?

26. Tarun Rajasthan
तरूण राजस्थान ।

27. Govindgiri
गोविन्दगिरी ।

28. Rajputana Gazette
राजपुताना गजट ।

29. Bhomiya
भौमिया ।

30. Bijolia Movement
बिजौलिया आन्दोलन ।

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

PART –II DESCRIPTIVE

Section- A (खण्ड 'अ')

1. Write short notes on two of the following :

(i) Importance of Aravali Range (ii) Palaeo lithic Culture
(iii) Painted Rock Shelter (iv) Guhila 10+10

निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये :

(i) अरावली पर्वतमाला का महत्त्व (ii) पुरापाषाण संस्कृति 10+10
(iii) चित्रिय शैलाश्रय (iv) गुहिल

2. Write an essay on the 'Ganeshwar Culture'. 20

'गणेश्वर संस्कृति पर एक लेख लिखिये।

Section- B (खण्ड 'ब')

3. Write in brief about the struggle of Maharana Pratap against the Mughals. 20

महाराणाा प्रताप के मुगलों के विरूद्ध संघर्ष के बारे में संक्षेप में लिखिए। 20

4. Describe the main features of Fort Architecture of Rajasthan. 20

राजस्थान के दुर्ग स्थापत्य की मुख्या विशेषताओं का वर्णन कीजिये। 20

Section- C (खण्ड 'स')

5. Describe the basic features of Feudal system in Rajasthan. 20

राजस्थान में सामन्तवाद की आधारभूत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 20

6. Write short notes on any two of the following.

(i) Tribal Movement in Rajasthan
(ii) Social reforms during the English period
(iii) Prajamandal Movements
(iv) Matsya Sangh 10

निम्नलिखित में से किन्ही दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये :

i. राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन
ii. ब्रिटिश काल में समाज सुधार
iii. प्रजामण्डल आन्दोलन
iv. मत्स्य संघ 10

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

B.A. (Part I) HISTORY EXAMINATION, 2012

Second Paper
History of Rajasthan (From Earliest Times to 1956 A.D.)

Time Allowed: Three hour Maximum marks : 100

सभी (वस्तुनिष्ठ तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दीजिए। इसी प्रकार किसी भी एक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न भागों के उत्तर, उत्तरपुस्तिका में अलग–अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल करें।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

PART-I - OBJECTIVE

Maximum Marks :40

प्रश्न क्रमांक 1 से 20 (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।) प्रश्न क्रमांक 21–30 (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का हैं) इन प्रश्नों के प्रत्येक के उत्तर अधिकतम 20 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए। शब्द सीमा से बड़े उत्तर होने पर अंक काटे जा सकेंगे।

1) If a tourist wants to see the remains of the Ahad Civilization in Rajasthan, he would go to :
(a) Jaipur (b) Jodhpur (c) Jaisalmer (d) Udaipur ( )
यदि कोई पर्यटक राजस्थान में आहड़ सभ्यता के अवशेष देखना चाहे तो वह जायेगा :
(अ) जयपुर (ब) जोधपुर (स) जैसलमेर (द) उदयपुर ( )

2) Ganeshwar site is located :
(a) Chambal (b) Luni (c) Kantli (d) Banas ( )
गणेश्वर पुरास्थल स्थित है :
(अ) चम्बल (ब) लूणी (स) कांटली (द) बनास ( )

3) The Rajput clan that emerged around Skakambhari was :
(a) Pratihar (b) Gahadwal (c) Chandel (d) Chahman ( )
शाकम्भरी के आसपास जिस राजपूत वंश का उदय हुआ, वह था :
(अ) प्रतिहार (ब) गहड़वाल (स) चन्देल (द) चाहमान ( )

4) The Ashoka's Inscription is situated in Rajasthan at :
(a) Viratnagar (b) Bhabru (c) Jaipur (d) Jodhpur ( )
अशोक का अभिलेख राजस्थान में स्थित है :
(अ) विराटनगर (ब) भाब्रू (स) जयपुर (द) जोधपुर ( )

Gurukpo.com No.1 Educational Webportal in India

5) Author of 'Hammir Mahakavya's is :
(a) Jayanak (b) Padmanabha (c) Nayanchandra (d) Veerbhan ( )
'हम्मीर महाकाव्य' का लेखक है :
(अ) जयानक (ब) पद्मनाभ (स) नयनचन्द्र (द) वीरभान ( )

6) The name of the writer of 'Prithviraj Raso' is :
(a) Kaviraj shyamaldas (b) Chand Bardai
(c) Suryamal Mishran (d) Vijai Singh Pathik ( )
'पृथ्वीराज रासो' के लेखक का नाम है :
(अ) कविराज श्यामलदास (ब) चन्दबरदाई
(स) सूर्यमल मिश्रण (द) विजय सिंह पथिक ( )

7) Which city was the capital of Pratihar King Naghbhatta I ?
(a) Mandor (b) Merta
(c) Jodhpur (d) Nagaur ( )
प्रतिहार राजा नागभट्ट प्रथम की राजधानी कौनसी नगरी थी ?
(अ) मण्डोर (ब) मेड़ता
(स) जोधपुर (द) नागौर ( )

8) Rana sanga defeated Ibrahim Lodi in the battle of :
(a) Panipat (b) Khanwa
(c) Khatauli (d) Gagron ( )
सुल्तान इब्राहीम लोदी का राणा सांगा ने किस युद्ध में पराजित किया था :
(अ) पानीपत (ब) खानवा
(स) खातौली (द) गागरोन ( )

9) The Victory Tower of Chittor was built by :
(a) Rana Pratap (b) Rana sanga
(c) Rana Kumbha (d) Rana Raimal ( )
चित्तौड़ का विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया :
(अ) राणा प्रताप (ब) राणा सांगा
(स) राणा कुम्भा (द) राणा रायमल ( )

10) Who was the founder of Bisnoi sect ?
(a) Jambhoji (b) Pipa
(c) Dadu (d) Meera ( )
विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक कौन थे ?
(अ) जाम्भोजी (ब) पीपा
(स) दादू (द) मीरा ( )

11) Main Center of Dadu Sect is :
(a) Bhinmal (b) Pipasar
(c) Narayna (d) Ajmer ( )
दादू पंथ का मुख्य केन्द्र है :

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

(अ) भीनमाल (ब) पीपासर
(स) नरायणा (द) अजमेर ( )

12) Which was the main centre of Sufism in Rajasthan :
(a) Ajmer (b) Jaipur
(c) Jodhpur (d) Udaipur ( )
राजस्थान में सूफीमत का मुख्य केन्द्र कौनसा था :
(अ) अजमेर (ब) जयपुर
(स) जोधपुर (द) उदयपुर ( )

13) Who is called Abul Fazal of Rajputana :
(a) Nainsi (b) Bankidas
(c) Chand Bardai (d) Dayaldas ( )
राजपूताना का अबुल फजल किसे कहा गया है :
(अ) नैणसी (ब) बांकीदास
(स) चन्दबरदायी (द) दयालदास ( )

14) The famous architect of Jaipur was:
(a) Mandan (b) Padmakar
(c) Vidyadhar (d) Kriparam ( )
जयपुर नगर का प्रसिद्ध वास्तुकार था :
(अ) मण्डन (ब) पद्माकर
(स) विद्याधर (द) कृपाराम ( )

15) Nihal chand is associated with which style of Rajasthani painting :
(a) Mewar (b) Kishangarh
(c) Bundi (d) Kota ( )
निहालचन्द राजस्थान की किस चित्रकला शैली से सम्बन्धित है :
(अ) मेवाड़ (ब) किशनगढ़
(स) बूँदी (द) कोटा ( )

16) The state which could not have treaty with the East India Company in 1818 was :
(a) Jaipur (b) Bundi
(c) Jodhpur (d) Sirohi ( )
वह रियासत जो 1818 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संधि नहीं कर सका :
(अ) जयपुर (ब) बूँदी
(स) जोधपुर (द) सिरोही ( )

17) Swami Dayanand Saraswati founded a society in Udaipur, the name of which was :
(a) Arya Samaj (b) Paropakarini Sabha
(c) Izlas Sabha (d) Ram Krishna Mission ( )
स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उदयपुर में जिस संस्था की स्थापना की, उसका नाम था :
(अ) आर्य समाज (ब) परोपकारिणी सभा
(स) इजलास सभा (द) राम कृष्ण मिशन ( )

GurukPO.com No. 1 Educational Web Portal in India

18) The original name of Vijai Singh Pathik was :

(a) Raj Singh (b) Bhoop Singh

(c) Baldev Singh (d) Gopal Singh ( )

विजय सिंह पथिक का मूल नाम था :

(अ) राज सिंह (ब) भूप सिंह

(स) बलदेव सिंह (द) गोपाल सिंह ( )

19) The resolution to actively support the people's movement in the native principalities was passed by Congress in :

(a) 1929 Lahore Session (b) 1936 Karachi Session

(c) 1938 Haripura Session (d) None of the above ( )

देशी रजवाड़ों की प्रजा के आन्दोलन को सक्रिय समर्थन देने का प्रस्ताव कांग्रेस ने पारित किया :

(अ) 1929 लाहौर अधिवेशन में (ब) 1936 कराची अधिवेशन में

(स) 1938 हरिपुरा अधिवेशन में (द) उपरोक्त में से कोई नहीं ( )

20) With which movement is Motilal Tejawat associated :

(a) Kisan Movement (b) Land-Reform Movement

(c) Marwar Hitkarini (d) Bhil Movement ( )

मोतीलाल तेजावत किस आन्दोलन से सम्बन्धित थे :

(अ) किसान आन्दोलन (ब) भूमि सुधार आन्दोलन

(स) मारवाड़ हितकारिणी (द) भील आन्दोलन ( )

21) Cultural importance of Ahar. आहड़ का सांस्कृतिक महत्त्व ।

22) Origin of Rajputs. राजपूतों की उत्पति ।

23) Mention the name of the most famous Khyat writer and his literary works.
सर्वाधिक प्रसिद्ध ख्यात लेखक का नाम व उसकी रचनाएं।

24) Write 20 words on Rani Padmini. रानी पद्मिनी पर 20 शब्द लिखिये ।

25) Mention the name of two famous forts of Kumbha's times.
कुम्भाकालीन दो प्रसिद्ध दुर्गो के नाम बताइये ।

26) Mention any two teachings of Dadu.
दादू की किन्हीं दो शिक्षाओं का उल्लेख कीजिये।

27) Auwa in 1857.
1857 ई0 में आऊवा

28) Hurda Sammelan
हुरड़ा सम्मेलन।

29) Why did the Rajput rulers made an alliance with the British ? Mention any two reasons.
राजपूत शासकों ने अंग्रेजों के साथ क्यों सन्धि की ? किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

30) When was Ajmer-Merwara merged into Rajasthan ?
अजमेर–मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय कब हुआ ?

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

प्रत्येक खण्ड में से एक प्रश्न का चयन करते हुए, कुल तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART-II - DESCRIPTIVE

Section- A (खण्ड 'अ')

1. Critically examine the main sources of Rajasthan History. 20
   राजस्थान के इतिहास के मुख्य स्रोतों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिये । 20

2. Who were the Gurjara-Pratihars ? Evaluate the achievements of Gurjar-Pratihars kings. 5+15
   गुर्जर प्रतिहार कौन थे ? गुर्जर प्रतिहार राजाओं की उपलब्धियों का मूल्याकंन कीजिये । 15+15

Section- B (खण्ड 'ब')

3. Give a brief account of Alauddin Khilji's conquest of Ranthambhor and jalore.. 10+10
   अलाउद्दीन खिलजी के रणथम्भौर और जालोर विजय का संक्षिप्त विवरण दीजिए। 10+10

4. Describe the characteristic features of different schools of Rajput paintings. 20
   राजपूत चित्रकला की विभिन्न शैलियों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 20

Section- C (खण्ड 'स')

5. What were the aims of the British Government in establishing their monopoly over salt and opium trade. 20
   अफीम एवं नमक के व्यापार पर नियन्त्रण स्थापित करने में ब्रिटिश सरकार के क्या उद्देश्य थे ? 20

6. Discuss the various stages leading to the formation of Rajasthan. 20
   राजस्थान के निर्माण के विभिन्न चरणों की विवेचना कीजिये। 20

GurukPO.com No.1 Educational Web Portal in India

B.A. Part-I Examination, 2013
(History-II Paper)

Time: 2 Hrs. MM: 50

Multiple Choice questions. (10x2)

Q.1 Balathal was excavated by :
(a) B.K. Thapar (b) H.D.Sankaliya (c) V.N. Mishra (d) R.C. Agrawal
बालाथल के उत्खननकर्त्ता है :
(a) बी.के थापर (b) एच.डी. संकालिया (c) वी.एन. मिश्रा (d) आर.सी. अग्रवाल

Q.2 Who was the author of 'Prabandh Kos' :
(a) Rajshekhar (b) Nyanchand Suri (c) Someshwar (d) Shyamal Das
'प्रबन्ध कोष' का लेखक कौन था –
(a) राजशेखर (b) नयनचन्द सूरी (c) सोमेश्वर (d) श्यामलदास

Q.3 With which culture is Bagor associated :
(a) Neolithic (b) Mesolithic (c) Palaeolithic (d) Chalcolithic
बागोर किस संस्कृति से सम्बन्धित है –
(a) नवपाषाण (b) मध्यपाषाण (c) पुरापाषाण (d) ताम्रपाषाण

Q.4 Nilkanth is situated in -
(a) Jaipur (b) Bharatpur (c) Alwar (d) Sikar
नीलकंठ स्थित है –
(a) जयपुर (b) भरतपुर (c) अलवर (d) सीकर

Q.5 The capital of Hammir Deo Chauhan was :
(a) Chittor (b) Amber (c) Ranthambhor (d) Bundi
हम्मीरदेव चौहान की राजधानी थी –
(a) चित्तौड़ (b) आमेर (c) रणथम्भौर (d) बून्दी

Q.6 Earlier city 'Jangal' was the name of -
(a) Jodhpur (b) Jaipur (c) Ajmer (d) Bikaner
प्राचीन शहर 'जांगल' नाम था –
(a) जोधपुर (b) जयपुर (c) अजमेर (d) बीकानेर

Q.7 Who is the author of 'Vanshbhaskara'
(a) Suryamalla Mishran (b) Vidyadhar (c) mandan (d) Keshavdas
वंशभास्कर के लेखक कौन है –
(a) सूर्यमल्ल मिश्रण (b) विद्याधर (c) मंडन (d) केशवदास

Q.8 The capital of Kachhvahas during the reign of Swai Jai Singh was -
(a) Jaipur (b) Ajmer (c) Alwar (d) Nagar
सवाई जयसिंह के शासनकाल में कछवाहों की राजधानी थी –
(a) जयपुर (b) अजमेर (c) अलवर (d) नगर

Gurukpo.com No 1 Educational Web Portal in India

Q.9 With which school of Rajasthani painting 'Bani-Thani' is associated -
(a) Bikaner school (b) Marwar school (c) Kishangarh school (d) Jaipur school
राजस्थानी चित्रकला की किस शैली से 'बनी–ठनी' का सम्बन्ध है –
(a) बीकानेर शैली (b) मारवाड़ शैली (c) किशनगढ़ शैली (d) जयपुर शैली

Q.10 Meera was worshipper of -
(a) Rama (b) Shiva (c) Buddha (d) Krishna
मीरा भक्त थी –
(a) राम (b) शिव (c) बुद्ध (d) कृष्ण

Q.11 Malvas Janpad was located in :
(a) Tonk (b) Jaipur (c) Chittor (d) Bikaner
मालव जनपद बसा था –
(a) टोंक (b) जयपुर (c) चित्तौड़ (d) बीकानेर

Q.12 Rana Pratap became the ruler of Mewar in :
(a) 1572 A.D (b) 1576 A.D. (c) 1568 A.D (d) 1570 A.D.
राणा प्रताप मेवाड़ के शासक बने –
(a) 1572 ई0 (b) 1576 ई0 (c) 1568 ई0 (d) 1570 ई0

Q.13 Which was the first Modern Newspaper to be published from Rajasthan -
(a) Rajasthan Kesri (b) Tyagbhumi (c) Naveen Rajasthan (d) Rajputana Gazette
राजस्थान से प्रकाशित होने वाला पहला आधुनिक समाचार पत्र कौनसा था–
(a) राजस्थान केसरी (b) त्यागभूमि (c) नवीन राजस्थान (d) राजपुताना गजट

Q.14 In which year was the battle of Haldi-Ghati fought -
(a) 1577 A.D. (b) 1582 A.D (c) 1576 A.D. (d) 1572 A.D.
हल्दीघाटी का युद्ध कब लड़ा गया था –
(a) 1577 ई. (b) 1582 ई. (c) 1576 ई. (d) 1572 ई.

Q.15 Which was the first state to declare the practice of sati illegal :
(a) Kota. (b) Bundi (c) Ajmer (d) Jalore
सती प्रथा को गैर–कानूनी घोषित करने वाला पहला राज्य कौनसा था–
(a) कोटा (b) बूंदी (c) अजमेर (d) जालौर

Q.16 Which of these Praja Mandals was led by Gokul Bhai -
(a) Banswara (b) Sirohi (c) Dungarpur (d) Mewar
निम्नलिखित में से किस प्रजामण्डल का नेतृत्व गोकुल भाई ने किया –
(a) बांसवाड़ा (b) सिरोही (c) डूंगरपुर (d) मेवाड़

Q.17 The Bundi Praja Mandal was established in -
(a) 1935 A.D. (b) 1936 A.D. (c) 1932 A.D. (d) 1931 A.D.
बून्दी प्रजामण्डल की स्थापना कब हुई –
(a) 1935 ई. (b) 1936 ई. (c) 1932 ई. (d) 1931 ई.

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

Q.17 The Bundi Praja Mandal was established in -

(a) 1935 A.D. (b) 1936 A.D. (c) 1932 A.D. (d) 1931 A.D.

बून्दी प्रजामण्डल की स्थापना कब हुई –

(a) 1935 ई. (b) 1936 ई. (c) 1932 ई. (d) 1931 ई.

Q.18 Marwar Lok Parishad was formed in -

(a) May, 1938 (b) May, 1939 (c) June 1938 (d) March, 1939

मारवाड़ लोक परिषद का गठन किया गया था–

(a) मई, 1938 (b) मई, 1939. (c) जून, 1938 (d) मार्च 1939

Q.19 Who is the author of Marwar-ra- Pargana-ri-Vigat-

(a) Bankidas (b) Shyamal Das (c) Muhnot Nainsi (d) Mandan

मारवाड़–रा–परगना–री–विगत के लेखक कौन थे –

(a) बांकीदास (b) श्यामलदास (c) मुहणोत नैणसी (d) मण्डन

Q.20 Sursagar Lake is situated in -

(a) Bundi (b) Kota (c) Jaipur (d) Amber

सूरसागर झील स्थित है –

(a) बून्दी (b) कोटा (c) जयपुर (d) आमेर

Q.21 Importance of Rangmahal -

रंगमहल का महत्त्व ।

Q.22 Mention any four branches of Guhils.

गुहिलों की किन्हीं चार शाखाओं का उल्लेख कीजिए।

Q.23 Vakil Reports

वकील रिपोर्ट

Q.24 What do you know about 'Chavari' ? -

'चवरी' के बारे में आप क्या जानते है ?

Q.25 Seth Jamanalal Bajaj

सेठ जमनालाल बजाज

Q.26 Ram Narayan Choudhary

रामनारायण चौधरी

Q.27 Mention the names of any four 'Poles' of Kumbhalgarh fort.

कुम्भलगढ़ किले के कोई चार दरवाजों (पोल) का नामोल्लेख कीजिए।

Q.28 Nagaridas

नागरीदास

Q.29 Sagarmal Gopa

सागरमल गोपा

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

Q.30 Nimuchana Kand
नीमूचाना काण्ड

PART-II (DESCRIPTIVE)

Maximum marks :60

Attempt three questions, selecting one question from each Section. All questions carry equal marks.

प्रत्येक खण्ड में से एक प्रश्न का चयन करते हुए, कुल तीन प्रश्न हल कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Section -A
खण्ड–अ

1. Write short notes on any two of the following :

(i) Ganeshwar culture
(ii) Kalibanga
(iii) Ranthambhor
(iv) Kishangarh school of painting 10+10

निम्नलिखित में से किन्ही दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए –
(i) गणेश्वर संस्कृति
(ii) काली बंगा
(iii) रणथम्भौर
(iv) किशनगढ़ चित्रकला शैली 10+10

2. Critically examine the different opinions regarding the origin of Rajputs.
राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मतों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए। 20

Section -B
खण्ड–ब

3. Discuss the achievements of Maharana Sanga
महाराणा सांगा की उपलब्धियों का विवेचन कीजिए। 20

4. Discuss the role of Durgadas in the war of Independence fought by the Rathors of Marwar against the Mughals.
मुगलों के विरूद्ध मारवाड़ के राठौड़ों द्वारा लड़े गये स्वतंत्रता संग्राम में दुर्गादास की भूमिका की विवेचना कीजिए। 20

Section -C
खण्ड–स

5. Describe administrative and social changes in Rajasthan after 1818 A.D.
राजस्थान में 1818 ई. के बाद हुए प्रशासनिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए। 20

4. Give an account of the origin and the growth of the Praja Mandal Movement in Mewar.
मेवाड़ में प्रजामण्डल आन्दोलन के उद्‌भव और विकास का विवरण दीजिए। 20

Gurukpo.com No. 1 Educational Web Portal in India

संदर्भ ग्रन्थ सूची

राजस्थान का इतिहास	डॉ. कालूराम शर्मा भूतपूर्व प्रोफेसर इतिहास विभाग वनस्थली विश्वविद्यालय, वनस्थली विद्यापीठ, डॉ. प्रकाश व्यास भूतपूर्व रीडर इतिहास विभाग वनस्थली विश्वविद्यालय, वनस्थली विद्यापीठ (पंचशील प्रकाशन, जयपुर)
Histroy of Rajasthan	डॉ. रीमा ओझा
राजस्थान का विराट इतिहास	गोपीनाथ शर्मा एवं आर.पी. व्यास
Annals Antiquities of Rajasthan	James Tod

Gurukpo.com
No.1 Educational Web Portal in India

Gurukpo.com
No. 1 Educational Web Portal in India